RNI No. :BIHHIN/2013/53084

संपादक
अभिजीत कुमार, 9431006107

संयुक्त संपादक
प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337

प्रधान संपादक
राजीव कुमार, 9431210181

सहायक संपादक
प्रभाकर कुमार राय

प्रबंध संपादक
मुकेश कुमार सिंह, 9534207188

कॉन्सेप्ट एडिटर
अनूप कुमार शर्मा

विधि सलाहकार
वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट

बिहार ब्यूरो
अनूप नारायण सिंह

मुख्य संवाददाता
सोनू सिन्हा,9431006189
आशीष कुमार

जिला ब्यूरो
मगध प्रमंडल : ब्रजेश पांडेय, 9473031113
बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316
अमित सिंह, 9430595995
भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार, (ब्यूरो चीफ), 9334114515
हसनपुर : विजय कुमार, 9155755866
समस्तीपुर : सुनील कुमार, 9709714252
कटोरिया : रविशंकर सिंह (विशेष संवाददाता) 9771697391
चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993
दरभंगा : जाहिद अनवर : 8541849415
बाराहाट : हेमन्त कुमार (संवाददाता)
सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)
बिहार-झारखंड : अभिनव कुमार 9771654511
दिल्ली : नवल वत्स
ग्रेटर नोएडा : अरमान कुमार, 8920215318

प्रधान कार्यालय
गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)
मो.- 9431006107, 9939815347
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली मंदिर रोड़ नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोठी लंगर टोली, डीएन दास लेन, पटना-800 004,से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निबटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक

डॉ. संजय मयूख
राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी भाजपा

जय जयराम सिंह
समाजसेवी

अरुण कुमार सिंह
रिटायर कॉमेंडेट

चर्चित बिहार

वर्ष : 5, अंक :12, अगस्त 2018, मूल्य : 15/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

13 महिलाओं के सम्मान के लिए उतरी बिहार की बेटी, रानी चौबे

प्रेस रिपोर्टर की भूमिका... 19

कांवरिया पथ पर ... 35

खनकती और मखमली ... 21

महंगाई से महायुद्ध...

अभिजीत कुमार
संपादक
9431006107
cbhindi.news@gmail.com

अ महंगाई की बढ़ती आशंका को लेकर सतर्क भारतीय रिजर्व बैंक ने लगातार अपनी दूसरी मौद्रिक नीति में भी रीपो रेट 0.25 फीसदी बढ़ा दिया है। रीपो रेट वह ब्याज दर है, जिस पर तमाम भारतीय बैंक अपने कारोबार के लिए आरबीआई से रकम उठाते हैं। यह दर जून में 6 फीसदी से बढ़कर 6.25 फीसदी हुई थी और अभी वहां से चढ़कर 6.5 फीसदी हो गई है। अक्टूबर 2013 के बाद पहली बार ही ऐसा हुआ है कि देश की यह मुख्य ब्याज दर लगातार दो मौद्रिक नीतियों में बढ़ाई गई है। रिजर्व बैंक ने मुद्रास्फीति को 4 फीसदी से ऊपर न जाने देने का लक्ष्य रखा है, लेकिन तमाम भीतरी-बाहरी वजहों से इस पर टिके रहना मुश्किल हो रहा है। महंगाई लगातार बढ़ रही है और जून में ही यह 5 फीसदी के पार चली गई थी। ग्लोबल मार्केट में कच्चे तेल की कीमतें इस साल लगभग 20 फीसदी बढ़ चुकी हैं। मई में तो क्रूड ऑयल 80 डॉलर प्रति बैरल के स्तर से भी ऊपर चला गया था, जो 2014 के बाद से इसकी सबसे ऊंची कीमत है। इसके चलते केंद्र सरकार के आयात बिल में भारी इजाफा हुआ है। रुपये का स्तर भी डॉलर के मुकाबले काफी कमजोर चल रहा है। इस कैलेंडर वर्ष में रुपया 7 प्रतिशत से ज्यादा गिर चुका है। 20 जुलाई को डॉलर के मुकाबले रुपया 69.13 के रिकॉर्ड निचले स्तर पर चला आया था। इन दोनों वजहों से रिजर्व बैंक को आयातित महंगाई का डर सता रहा है। इस साल अच्छे मॉनसून की सूचना से महंगाई में राहत की उम्मीद की जाती रही है, लेकिन इस मामले में भी अभी तक के आंकड़े अधिक आशावादी होने की इजाजत नहीं देते। मौसम विभाग ने कई क्षेत्रों में जरूरत से कम या ज्यादा बारिश दर्ज करते हुए मॉनसून का पैटर्न असंतुलित रहने के संकेत दिए हैं। अब तक पूरे देश में सामान्य से 6 फीसदी कम बारिश हुई है और अगस्त में मॉनसून की चाल कमजोर रहने के अंदेशे से खरीफ के बूते महंगाई थामने की उम्मीद सुस्त पड़ी है। सरकार ने खरीफ का एमएसपी बढ़ाकर किसानों की हौसलाअफजाई जरूर की है, लेकिन नतीजों के लिए अभी ढाई महीने इंतजार करना होगा। ब्याज दरों में तेज बढ़ोतरी से आम लोगों के साथ-साथ कॉर्पोरेट पर भी असर पड़ेगा। लोग बचत के लिए मन बनाएंगे, लेकिन होम लोन, ऑटो लोन और पर्सनल लोन की ईएमआई बढ़ने से बिक्री के आंकड़े नीचे आएंगे। बैंकिंग सेक्टर के कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि कर्ज लेने की रफ्तार अभी धीमी है लिहाजा बैंकों का जोर कर्ज महंगा करने से ज्यादा अपना बिजनेस बढ़ाने पर होना चाहिए। लेकिन आम समझ यही कहती है कि मार्केट में कन्ज्यूमर ड्यूरेबल्स की बिक्री नरम पड़ सकती है और बैंकों से कर्ज उठाकर किए जाने वाले निजी निवेश में सुस्ती आ सकती है। बहरहाल, इस चुनावी साल में सरकार इकॉनमी में ज्यादा सुस्ती कतई नहीं चाहेगी, लिहाजा अपना निवेश उसे हर कीमत पर बढ़ाना होगा।

सुधार गृह या बलात्कार गृह?

मुजफ्फरपुर शहर में स्थित सरकारी बालिका गृह में असहाय लड़कियां जो नरक भुगत रही थीं, उसके ब्यौरे उजागर होने के साथ ही हर भारतीय नागरिक का सिर शर्म से झुकता जा रहा है। बरसों से यह सरकारी बालिका गृह नियम-कानूनों को ठेंगा दिखाते हुए चलाया जाता रहा और निगरानी व निरीक्षण इसके लिए निरर्थक शब्द ही बने रहे। किसी भी स्तर पर कभी जरा सी भनक तक नहीं लगी कि छोटी-छोटी बच्चियों को वहां किस दुर्दशा से गुजरना पड़ रहा है। इसके संचालक की ऊंची राजनीतिक पहुंच पूरे सरकारी तंत्र पर इस कदर हावी रही कि न केवल उसका बालिका गृह का टेंडर सुरक्षित रहा, बल्कि नए-नए ठेके भी उसे बेरोक-टोक मिलते रहे। इस बालिका गृह की असलियत का खुलासा टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (टिस) के उन छात्रों ने खोली, जिनकी रिपोर्ट- संचालकों के मुताबिक- ध्यान देने लायक ही नहीं है। हैरत की बात यह है कि इस रिपोर्ट के बाद बालिका गृह में रह रही लड़कियों ने जज के सामने बयान देकर इसकी सच्चाई पर अपनी मुहर लगा दी, लेकिन सरकार के संज्ञान में होने के बावजूद यह रिपोर्ट इसी संचालक को पटना में भिखारियों के उद्धार का एक और ठेका हथियाने से नहीं रोक पाई। खबर सार्वजनिक होने के बाद ही इस ठेके को रद्द किया गया। समाज में अनाथ लड़के-लड़कियां, वृद्ध, अपाहिज आदि अनेक ऐसे समूह हैं जो बेहद अमानवीय स्थितियों में जीवन बिताने को मजबूर हैं।

मगर जब इनके उद्धार के नाम पर बनी और सरकारी पैसों से चलने वाली संस्थाएं भी इनके साथ ऐसा सलूक करने लग जाएं तो उम्मीद के लिए कोई जगह ही नहीं बचती। जब सरकारी संरक्षण में रह रही सात-आठ साल की बच्चियों को भी ह्यगंदे कामह्ल से खुद को बचाने के लिए अपने आपको घायल करना पड़े, तो इस संस्था का संचालन करने वाली सरकार के पास अपने बचाव में कहने को क्या रह जाता है? और हां, ऐसे मामले सिर्फ एक शहर या एक राज्य तक सीमित नहीं हैं। लिहाजा कम से कम अब से राजनीतिक गुणा-भाग छोड़कर निराश्रित बच्चों, खासकर बच्चियों की देखरेख के लिए जिम्मेदार देश की सभी संस्थाओं के माहौल की पुख्ता जांच कराई जाए, ताकि सेक्स स्लेव बनना उनकी नियति न बने और हमें भी इस समाज में जिंदा रहने पर शर्मिंदगी न महसूस हो। पूरे देश को सकते में डालने वाले बिहार के मुजफ्फरपुर कांड के मामले में मुख्य आरोपी ब्रजेश ठाकुर के बचाव में पहली बार उसकी बेटी आई है. ब्रजेश ठाकुर की बेटी ने बचाव में ह्यआजतकह्ल से कहा कि मेरे पिता के खिलाफ साजिश हुई है. ब्रजेश की बेटी ने पिता को बेकसूर बताते हुए बच्चियों पर ही सवाल उठाते हुए कहा कि

बालिका गृह में कई बच्चियां ऐसी थीं जो अपने लवर्स के साथ भाग जाती थीं. कई ऐसी थीं जो रेड लाइट एरिया से लाई गई थीं.

आजतक से बातचीत में उसने कही कि इस केस के बारे में उल्टा-सीधा लिखा जा रहा है. इससे जांच प्रभावित हो रही है. मीडिया मेरे पिता को आरोपी घोषित कर चुकी है. सीबीआई जांच होना हम लोगों के लिए अच्छी बात है. इससे मेरे पिता भी खुश हैं. उन्हें उम्मीद है कि अब दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा.इस मामले में गवाहों के बयान भी उल्टे लिखे गए हैं. फरवरी में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज की जो रिपोर्ट आई है, उसे हम लोगों ने नहीं देखा. हमारे अटेंडेंट ने बताया कि बच्चों ने कहा कि मुंबई से हाई-फाई लोग आए हैं. वे बच्चों से अंग्रेजी में बात कर रहे थे. हमारे बच्चे भोजपुरी जानते हैं. उन्हें क्या समझ आया होगा. लोकल एडमिनिस्ट्रेशन ने भी बायस्ड होकर जांच की है. उन्होंने कहा कि बालिका गृह में बच्चियां खुश थीं. वहां उनका यौन शोषण नहीं होता था. बच्चियां दिनभर खिड़की पर खड़ी रहती थीं.

मेरे पिता को बच्चियां पहचानती थीं, क्योंकि मेरे पिता का रूम और खिड़की आमने-सामने है. बच्चियां छत पर टहलती थीं. छत कमरे से सटा हुआ है. बच्चियों ने उनका नाम क्यों लिया, इस बारे में हमें नहीं पता. जब उनसे सवाल किया गया कि एक ऑफिसर की पत्नी ने इस बात को सामने रखा कि मंत्री मंजू वर्मा के पति वहां पर आया करते थे, इस पर ब्रजेश की बेटी ने कहा कि ऑफिसर रवि रौशन की पत्नी ने ये बातें कही हैं. आज उनके पति भी आज अंदर बैठे हैं. बच्चों ने उनके भी नाम लिए हैं. ऐसे में वे बताएं कि बच्चों ने क्यों उनका नाम लिया. रवि रौशन हफ्ते में 3-4 दिन निरीक्षण में आते थे. विपक्षी दलों के सवाल उठाने पर ब्रजेश ठाकुर की बेटी ने कहा कि विपक्ष ने मेरे बारे में भी उल्टा-सीधा बोल रहे हैं. वे सिर्फ इस पर राजनीति कर रहे हैं. मेडिकल रिपोर्ट में 34 बच्चों से यौन शोषण के सवाल पर ब्रजेश की बेटी ने कहा कि बालिका गृह में ऐसी बच्चियां भी आती थीं, जिनका यौन शोषण हो चुका होता है. बच्चियों से जबरन ऐसा बयान दिलवाया गया है. जिस बच्ची ने आरोप लगाया है कि मेरे पिता ने उसका शोषण किया है, मेडिकल रिपोर्ट के मुताबिक उसका शोषण हुआ ही नहीं है.

तेजस्वी का नीतीश को खुला खत, 'सात बहनों का भाई हूं, रात भर सो नहीं पाता'

तेजस्वी ने बच्चियों के साथ हुई बर्बरता पर चिंता जताते हुए लिखा, 'वह लुटती रहीं, पिटती रहीं, शर्मसार होती रहीं, बेइज्जत होती रहीं, कराहती रहीं, चीखती रहीं, मरती रहीं. वो हवस के पुजारियों के हाथों हर रात लुटती रहीं और सरकार गहरी नींद में सोती रही. क्या यही सुशासन है, जहां पुलिस प्रशासन ने आंखे मूंद ली थी. यह समाज और सरकार का सबसे घिनौना और गंदा चेहरा है.' मुजफ्फरपुर के बालिका गृह में बच्चियों के साथ बलात्कार के मामले पर विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर हमला तेज करते हुए उनके इस्तीफे की मांग की है. मामले को लेकर उन्होंने नीतीश कुमार के नाम एक खुले खत के जरिए जमकर निशाना साधा. ट्विटर पर साझा अपने खत में उन्होंने लिखा, 'मुजफ्फरपुर मामले पर आपके महीनों की रहस्यमय चुप्पी देखकर खुला पत्र लिखने पर विवश हुआ हुआ हूं. यह विशुद्ध रूप से गैर राजनीतिक पत्र है, क्योंकि एक समाजिक कार्यकर्ता होने से पहले मैं सात बहनों का भाई, एक मां का बेटा और कई बेटियों व भगिनी का चाचा और मामा हूं. बच्चियों के साथ हुई इस अमानवीय घटना से मैं सो नहीं पाया हूं. आप कैसे चुप रह सकते हैं आपसे बेहतर कौन जानता है.' तेजस्वी ने बच्चियों के साथ हुई बर्बरता पर चिंता जताते हुए लिखा, 'इस घटना के बाद मैं दुखी हूं, क्योंकि जिनकी उम्र खिलौने से खेलने की है वो खुद खिलौना बन गई. वो अनाथ मासूम लड़कियां किसी का वोट बैंक नहीं, इसलिए इससे हमें क्या लेना देना? उनसे हमारा कोई रिश्ता थोड़ी न था. वह लुटती रहीं, पिटती रहीं, शर्मसार होती रहीं, बेइज्जत होती रहीं, कराहती रहीं, चीखती रहीं, मरती रहीं. वो हवस के पुजारियों के हाथों हर रात लुटती रहीं और सरकार गहरी नींद में सोती रही. क्या यहीं सुशासन है, जहां पुलिस प्रशासन ने आंखे मूंद ली थी. यह समाज और सरकार का सबसे घिनौना और गंदा चेहरा है.' नीतीश सरकार पर निशाना साधते हुए तेजस्वी ने खत में लिखा, 'वो बेटियां क्या बिहार की अमानत नहीं हैं? अगर वर्तमान बिहार सरकार की जिम्मेदारी नहीं है तो न ले, क्योंकि हम उसे मुर्दा मान चुके हैं. जिनका जमीर मर चुका है वो जिंदा रहकर भी क्या करेगा? मुजफ्फरपुर की यह घटना मानवीय इतिहास की सबसे क्रूरतम और शर्मनाक घटना है. संस्थागत रूप से इतना सबकुछ होता रहा, लेकिन सरकार के एक भी तंत्र और सूत्रों के कानों में जू तक नहीं रेंगी.

दिल्ली के जंतर-मंतर से तेजस्वी ने कहा- बिहार में जंगल राज नहीं, राक्षस राज

मुजफ्फरपुर बालिका गृह दुष्कर्म कांड के खिलाफ दिल्ली के जंतर-मंतर राजद ने धरना दिया। इस मौके पर विपक्ष के 18 दलों के नेता पहुंचे थे। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी भी धरना स्थल पर पहुंचे थे। मंच पर तेजस्वी यादव ने उनका स्वागत किया। दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल भी जंतर-मंतर पहुंचे थे। वह भाषण देकर लौट गए। केजरीवाल के लौटने के बाद राहुल गांधी आए। तेजस्वी यादव ने धरने के मंच से कहा कि बिहार में जंगल राज नहीं राक्षस राज है। वहां रावण सीता माता का अपरहण कर रहा है। दुर्योधन द्रोपदी का चीर हरण कर रहा है। जब तक बच्चियों के साथ रेप के मामले के दोषियों को फांसी की सजा नहीं होती, न्याय नहीं मिलेगा। बालिका गृह में सरकार के नाक के नीचे सब हो रहा था। बालिका गृह में उन बच्चियों को रखा जाता है, जिसका कोई नहीं। हमारी सात बहनें हैं, मां हैं, बहनों की बच्चियां हैं। अगर उनके साथ कुछ होता है तो हम मौजूद हैं, लेकिन जो बेसहारा हैं उनकी रक्षा कौन करेगा? आज पूरा बिहार और पूरा देश उन बेसहारा बच्चियों के लिए न्याय मांग रहा है। हम यहां गुनहगारों को सजा दिलाने के लिए एकजुट हुए हैं। तेजस्वी ने कहा कि राज्य सरकार 2 माह तक बच्चियों के साथ हो रहे अत्याचार की रिपोर्ट दबाए रही। पीएमसीएच के रिपोर्ट में 29 बच्चियों के साथ रेप की पुष्टि हुई तो नींद खुली। हमने लगातार आवाज उठाई तब जाकर सरकार मामले की सीबीआई से जांच कराने को तैयार हुई। वैसे तो हमारे चाचा नीतीश कुमार की अंतरआत्मा बात-बात पर जाग जाती है। अब उनकी अंतरआत्मा को क्या हुआ? 39 बच्चियों के साथ रेप हुआ, उनकी अंतरआत्मा क्यों नहीं जग रही है? समाज कल्याण विभाग और पुलिस द्वारा दर्ज किए गए एफआईआर में ब्रजेश ठाकुर का नाम क्यों नहीं है? समाज कल्याण विभाग के पदाधिकारी तो हर सप्ताह बालिका गृह जाते थे, उन लोगों ने क्या रिपोर्ट दिया? मुख्य आरोपी ब्रजेश ठाकुर को अब तक रिमांड पर क्यों नहीं लिया गया? ब्रजेश ठाकुर जदयू नेता है। 2014 के लोकसभा चुनाव में मुजफ्फरपुर में नीतीश ने सभा की थी। ब्रजेश ने उस सभा का संचालन किया था। नीतीश कुमार उसके घर भी गए थे। जनता सब कुछ देख रही है। बिहार सरकार दरिंदों को संरक्षण दे रही है।

शेल्टर होम रेप केस में आरोपी ब्रजेश ठाकुर आखिर है कौन?

दशकों से ह्यदो कौड़ीह्न का अखबार छापने और सरकारी खजाने से करोड़ों का विज्ञापन वसूलने के अपने पुश्तैनी कारोबार की आड़ में ब्रजेश ठाकुरनीचता की सारी सीमाएं पार करके ये ह्यधंधाह्य भी कर रहा था. इसका अंदाजा दिल्ली में बैठे हम जैसे लोगों को तो कतई नहीं था. मुजफ्फरपुर शहर के जिन लोगों को होगा, वो या तो तमाशबीन थे या उसके इस घिनौने खेल के किरदार और हिस्सेदार थे या फिर आंख बंद करके अपनी दुनिया में मगन थे.

अब जब ब्रजेश ठाकुर के कारनामों का बजबजाता सच सामने आ रहा है, तो पता चल रहा है कि सरकारी खर्चे पर चलने वाले ब्रजेश ठाकुर के शेल्टर होम में बच्चियों के साथ हैवानियत की हदें कैसे पार की जाती थीं.

आए दिन हो रहे रेप के मामलों ने बच्चों की सुरक्षा पर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है&ल्लुरस्न;

आए दिन हो रहे रेप के मामलों ने बच्चों की सुरक्षा पर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है

मुजफ्फरपुर के तमाम लोग हैरान हैं कि शहर के बीचोंबीच अपनी हवेली में रहने वाला एक शख्स जो खुद को पत्रकार, प्रकाशक, संपादक , मुद्रक कहता था, वो ऐसा ह्यशैतानह्न निकला.

जब मैं ब्रजेश ठाकुर से मिला...

करीब तीस साल पहले पहली बार मैं ब्रजेश ठाकुर नाम के इस शख्स से मिला था. तब हम जैसे ह्यछुटभैयेह्न बालक किस्म के युवा पत्रकार का ककहरा सीखने के लिए मुजफ्फरपुर के पत्रकारों के आस -पास भटका करते थे. मुजफ्फरपुर की छोटी-छोटी खबरें लिखकर छपने के लिए पटना के अखबारों में भेजा करते थे.

कभी-कभी लगता कि हमारे लिखे को रिपोर्ट की शक्ल में कोई नहीं छापेगा, तो संपादक के नाम चिट्ठी वाले कॉलम में ही भेज देते और छपने पर पूरे शहर में कूदते थे कि देखो हमारा भी कुछ छपा है. उन्हीं दिनों शहर के अखबार प्रातः कमल का नाम सुना. देखा. कभी-कभी पलटा भी, लेकिन इतना कूड़ा होता था कि नवोदित काल में भी पढ़ने लायक नहीं माना.

तब ये ब्रजेश ठाकुर अपने मठाधीश पिता राधामोहन ठाकुर के पुश्तैनी कारोबार को संभालने के लिए ह्यतैयारह्न हो रहा था. बारीकियां सीख रहा था. राधामोहन ठाकुर उस जमाने के ह्यबड़े खिलाड़ीह्न थे. ये बात अस्सी के दशक के आखिरी सालों की है. तब मुजफ्फरपुर की नौकरशाही से लेकर बिहार के कई मंत्रालयों में ठाकुर की तूती इस कदर बोलती थी कि बिना सकुर्लेशन वाले दर्जनभर अखबारों की दस-बीस या पचास कॉपियां छापकर वो लाखों के विज्ञापन बटोर लेता था.

प्रातः कमल उसका मुखौटा था, जिस मुखौटे के पीछे राधामोहन ठाकुर जैसे अखबारी माफिया का चेहरा छिपा रहता था. शहर में खुद को संपादक और प्रकाशक बनाए रखने के लिए राधामोहन ठाकुर प्रातः कमल का इस्तेमाल करता था. उस दौर में छोटे अखबारों के एसोसिएशन में भी उसका जबरदस्त प्रभाव था. दिल्ली मुंबई से छपने वाली पत्रिकाओं में जब भी सरकारी को चूना लगाने वाले धंधेबाज अखबारी माफिया और मालिकों-प्रकाशकों के बारे में रिपोर्ट छपती थी, तो राधामोहन ठाकुर का नाम टॉप पर होता था.

दिल्ली के पहाड़गंज में उसका स्थायी ठिकाना एक होटल का स्थायी कमरा था, जो उसके नाम पर सालोंभर बुक रहता था. बिहार के कई पत्रकार राधामोहन ठाकुर की सेवाएं लेते हुए उसके खर्चे पर दिल्ली तक आते थे. दिल्ली के भी कई ह्यबिहारी पत्रकारोंह्य को ठाकुर साहब खिला-पिलाकर खुश रखते थे. मुजफ्फरपुर के दिनों में हम लोग बागी किस्म के युवा पत्रकार थे, लिहाजा मेरे दिमाग में राधामोहन ठाकुर की छवि शहर के दबंग और माफिया टाइप के धंधेबाज की बन गई थी. इसी का असर था कि उस शहर में करीब डेढ़ साल रहने के बाद या फिर दिल्ली आने के बाद भी कभी ठाकुर साहब से मिलने नहीं गया. मिलने जाता था, तो एक बच्चा पत्रकार से वो क्या सलूक करते, ये समझा जा सकता था.

नब्बे के शुरूआती साल में दिल्ली में रहते हुए उनके करीबी कुछ लोगों से उनके बारे में सुनता रहा था, लेकिन कभी ऐसे ह्यधंधेबाजह्न से मिलने की इच्छा नहीं हुई. पिता राधामोहन ठाकुर से लेकर पुत्र ब्रजेश ठाकुर तक ने जिले और सूबे के कई पत्रकारों को हमेशा उपकृत किया. खिलाया. पिलाया. घुमाया और अहसान के बोझ तले दाबे रखा, तभी उसकी खबरें भी कई हफ्तों तक दबी रहीं.

पुश्तैनी धंधा करते हुए कहां तक पहुंच गया ब्रजेश

ब्रजेश ठाकुर के बारे में लिखते-लिखते पिता के बारे में इसलिए बता रहा हूं कि ताकि पता चले कि फर्जी अखबारों के नाम पर सरकारी विज्ञापन का पैसा बटोरने और अपने रसूख के दम पर ठेके लेने और दिलाने का धंधा करने वाले पिता का बेटा जब ह्यपुश्तैनी धंधेह्न में उतरा, तो कहां तक उतरता चला गया.

अखबारी माफिया राधामोहन ठाकुर का दबंग बेटा मासूम बेटियों का सौदागर बन गया. सरकारी पैसे से शेल्टर होम चलाने की आड़ में मजबूर बेटियों के साथ दुष्कर्म करने-कराने की सारी हदें पार गया. मुजफ्फरपुर में दबंगई से रहने वाले ब्रजेश ठाकुर ने शहर के दर्जनों पत्रकारों को समय-समय पर चंद हजार नौकरी दी.

शहर में अपना दबदबा इस कदर कायम किया कि किसी ने उसके कारनामे के खिलाफ कभी चूं नहीं की. पिता का शुरू किया हुआ अखबार छापता रहा, लेकिन तीस साल पहले जो अखबार शायद दो-तीन हजार छपता था, वो अब महज दो-तीन सौ में सिमट गया था. लेकिन उसकी हैसियत और दबंगई का विस्तार जारी था.

सूबे के कई नेताओं, मंत्रियों और बड़े अफसरों की

महफिल उसके यहां लगा करती थी. पटना में भी जब ऐसे ही लोगों के बीच उसकी अड्डेबाजी होती थी. अब कहा जा रहा है कि इन अड्डों पर भी उसके शेल्टर होम की मजबूर लड़कियों के साथ दुष्कर्म किया जाता था. उसके बालिका गृह में रहने वाली 42 लड़कियों में से 32 के साथ बलात्कार की पुष्टि हो चुकी है.

लड़कियों ने अपने बयान में ऐसे-ऐसे खुलासे किए हैं कि पढ़-सुनकर मन सिहर उठता है. नशीली दवाएं खिलाकर दुष्कर्म करने से लेकर बाहर से आए लोगों के सामने कम उम्र की मजबूर लड़कियों को परोसने तक की कहानियां वही लड़कियां सुना रही हैं, जो उसके चंगुल से निकली हैं.

आज ब्रजेश ठाकुर के बारे में जितने खुलासे हो रहे हैं, उसी से पता चल रहा है कि उसकी सरकारी सिस्टम पर कितनी जबरदस्त पकड़ थी. गिनती केअखबार छापकर नेताओं और अफसरों से सेटिंग के जरिए सरकारी विज्ञापन लूटने के गोरखधंधे के साथ-साथ वो एनजीओ के नाम पर करोड़ों का फंड लेने के कारोबार का चैंपियन बन गया था.

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, मुजफ्फरपुर में ठाकुर को वृद्धाश्रम, अल्पावास, खुला आश्रय और स्वाधार गृह के लिए भी टेंडर मिले हुए थे. बिहार सरकार से ठाकुर के एनजीओ को सालाना एक करोड़ मिलते थे. इसके अलावा पूरे बिहार के कई जिलों में सक्रिय दर्जनों एनडीओ को फंड दिलाने और बदले में मोटा कमीशन खाने का काम भी ब्रजेश करता था. ये सब तक तक नहीं हो सकता, जब तक सरकार औरसिस्टम में तगड़ी पहुंच न हो. ब्रजेश ठाकुर की ऐसी पहुंच हर सरकार में थी. बीते 25 सालों में ब्रजेश ठाकुर ने सियासत में हाथ आजमाने की कई नाकाम कोशिशें कीं. प्रॉपर्टी से ब्रजेश ठाकुर ने राजनीति में हाथ आजमाया. आनंद मोहन की बिहार पीपुल्स पार्टी से चुनाव ढाई दशक पहले पहली बार चुनाव लड़ा. हार गया, तो आरजेडी, जेडीयू समेत दूसरे दलों में भी अपनी पैठ बनाई.

सभी दलों के नेताओं से उसने लेन-देने के रिश्ते बनाए. सत्ताधीशों के दरबार में अपनी पहुंच के दम पर मुजफ्फरपुर में अपनी हनक कायम रखी और कई तरह के धंधे में हाथ आजमाते हुए करोड़ों की संपत्ति अर्जित कर ली. कई बार उसने सूबे के बड़े पत्रकारों को साधने के लिए हिन्दी-अंग्रेजी के बड़े अखबार लॉन्च करने की योजनाएं भी फ्लोट की, लेकिन आखिर में जिला स्तर के छुटभैया हिन्दी-अंग्रेजी अखबार निकालने से आगे इस कारोबार में बढ़ नहीं पाया.

अब हो रहे खुलासों से पता चल रहा है कि जिस ब्रजेश ठाकुर का नाम हमने 25-30 साल पहले जाना था, वो तो कुछ और ही कर रहा था. उसे जानते हुए भी न तो हम 25 सालों से उसके संपर्क में थे. न वो मेरे संपर्क में था. अब उसके कुकर्मों की फेहरिस्त सामने आने के बाद इस बात की तसल्ली है कि चलो भांडा तो फूटा. नकाब तो उतरा.

पहली बार जब ब्रजेश ठाकुर के एनजीओ के तहत चलने वाले शेल्टर होम में लड़कियों के साथ दुष्कर्म और उन्हें जबरन जिस्मफरोशी के धंधे में धकेलने की जानकारी कुछ महीने पहले आई थी , लेकिन उसे जितनी तवज्जो सरकार और मीडिया से मिलनी चाहिए थी, वो नहीं मिली. मुंबई के एक संस्थान टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (टिस) की टीम ने अपनी रिपोर्ट में दावा किया था कि बालिका गृह की कई लड़कियों ने यौन उत्पीड़न की शिकायत की है. उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है और आपत्तिजनक हालात में रखा जाता है. इसी रिपोर्ट के हिस्से के आधार पर देर से एफआईआर दर्ज हुई. गिरफ्तारी हुई, लेकिन उसे रिमांड पर लेकर जिस तरह से पूरे मामले की जांच होनी चाहिए थी, वो नहीं हुई. शिकार हुई लड़कियों के बयान और मीडिया के दबाव के बाद सरकार ने सीबीआई जांच के आदेश तो दे दिए हैं. उम्मीद है उन लड़कियों को इंसाफ मिलेगा और ब्रजेश ठाकुर को उसके कुकर्मों की सजा. इन सबके बीच सवाल सरकार और सिस्टम पर भी है. टिस की रिपोर्ट के तुरंत बाद सरकार ने सख्ती से जांच करके पूरे मामले की तह तक पहुंचने की कोशिश क्यों नहीं की? पुलिस के शिकंजे में होकर भी ठहाके लगाने वाले ब्रजेश को ये गुमान क्यों होता रहा कि उसका कुछ बिगड़ने वाला नहीं? शेल्टर होम की सभी लड़कियों से गहन पूछताछ करने में देर क्यों हुई? मीडिया और खासकर बिहार के ह्यकशिश चैनलह्न की मुहिम के बाद ही सरकार सक्रिय क्यों हुई?

एसएसपी दरभंगा की अच्छी पहल, यातायात व्यवस्था को सुदृढ बनाने के लिए नया वेबसाइट लॉन्च फिलहाल टेम्पू के परमिट पर लगी रोक

जाहिद अनवर (राजु) / दरभंगा

दरभंगा--यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए दरभंगा पुलिस ने बेवसाईट बनवाया है। इसके माध्यम से यातायात व्यवस्था की निगरानी होगी। वरीय पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार ने आज संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि यहां धड़ल्ले से बिना परमिट के वाहन चल रहे हैं और सड़कों की क्षमता कम है और वाहनों की संख्या काफी अधिक है। उन्होंने कहा कि विभाग से ली गई जानकारी के मुताबिक दरभंगा में 4500 टेम्पो को परमिट मिला हुआ है जबकि सड़क पर 10 हजार से अधिक टेम्पो चल रहे हैं। उन्होंने कहा कि वे प्राधिकार से अनुरोध किये हैं कि शहरी क्षेत्र में टेम्पों का परमिट अभी नहीं जारी किया जाय। वरीय पुलिस अधीक्षक ने बताया कि बेवसाईट के माध्यम से बस, टेम्पो और अन्य गाड़ियों के परमिट की निगरानी की जाएगी। इसके तहत दरभंगा पुलिस, जिला परिवहन कार्यालय और आरटीओ ऑफिस को एडमिन और पासवर्ड उपलब्ध करा दिया गया है। इतना ही नहीं आम नागरीक भी बेवसाईट के द्वारा व्हाट्सएप से भी कोई भी शिकायत वाहन चोरी से संबंधित दर्ज करा सकते हैं। उन्होंने कहा कि इससे पुलिस एवं इनके पदाधिकारियों के गतिविधियों की जानकारी मिल सकेगी। उन्होंने कहा कि निर्धारित रास्ता छोड़कर अन्यत्र वाहन चलाने वालों पर कड़ी कारवाई की जाएगी।

समाज कल्याण विभाग के सहायक निदेशक समेत 6 अधिकारी सस्पेंड

मुजफ्फरपुर बालिका गृह दुष्कर्म मामले में समाज कल्याण विभाग के सहायक निदेशक दिवेश कुमार शर्मा समेत 6 अधिकारी निलंबित कर दिए गए।सभी अधिकारियों पर टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंस (टीआईएसएस) की ऑडिट रिपोर्ट पर कार्रवाई में देरी का आरोप है।विभाग के निदेशक राजकुमार के आदेश पर ये कार्रवाई हुई।दिवेश कुमार के अलावा विभाग के 5 जिलों के असिस्टेंट डायरेक्टर को भी सस्पेंड किया गया है।इनमें मुंगेर की सीमा कुमारी, अररिया के घनश्याम रविदास, मधुबनी के कुमार सत्यकाम, भागलपुर की गीतांजलि प्रसाद और भोजपुर के तत्कालीन एडीसीसी आलोक रंजन हैं।बता दें कि दिवेश कुमार ने ही बालिका गृह दुष्कर्म मामले की एफआईआर दर्ज कराई थी।बच्चियों के साथ हुए यौन शोषण मामले में 2 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लेते हुए केंद्र और बिहार सरकार को नोटिस जारी किया है।सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मुजफ्फरपुर शेल्टर होम का कोई भी वीडियो फुटेज मीडिया में नहीं चलाया जाए।महिला व बाल विकास मंत्रालय को भी नोटिस जारी किया गया और मामले की पूरी रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट में दाखिल करने का आदेश दिया गया है।वकील अपर्णा भट्ट को इस मामले की मॉनिटरिंग के आदेश दिए गए हैं।सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि ये मामला बहुत ही गंभीर है और इसकी पारदर्शी जांच होनी चाहिए।किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाना चाहिए।पिछले दिनों एक कार्यक्रम में मुजफ्फरपुर कांड पर चुप्पी तोड़ते हुए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा था कि मामले की जांच हाईकोर्ट की निगरानी में हो।विपक्ष कई दिनों से इस मामले की जांच हाईकोर्ट या सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जज की निगरानी में कराने की मांग कर रहा था।सीएम ने कहा था कि समाज में ऐसी कोई घटना घटती है तो हम चुप नहीं रहेंगे।दोषियों को सजा दिलवाकर ही मानेंगे।इस घटना से मुझे बहुत आत्मग्लानी हुई है।शनिवार को राजद ने मुजफ्फरपुर कांड के खिलाफ दिल्ली के जंतर-मंतर पर धरना दिया। विपक्ष के 18 दलों के नेता इस धरने में पहुंचे थे।इस दौरान तेजस्वी यादव ने कहा कि बिहार में जंगल राज नहीं राक्षस राज है।वहां रावण सीता माता का अपरहण कर रहा है।दुर्योधन द्रोपदी का चीर हरण कर रहा है। उन्होंने कहा कि बालिका गृह में सरकार के नाक के नीचे सब हो रहा था।बालिका गृह में उन बच्चियों को रखा जाता है,जिसका कोई नहीं।हमारी सात बहनें हैं, मां हैं, बहनों की बच्चियां हैं।अगर उनके साथ कुछ होता है तो हम मौजूद हैं, लेकिन जो बेसहारा हैं उनकी रक्षा कौन करेगा ? आज पूरा बिहार और पूरा देश उन बेसहारा बच्चियों के लिए न्याय मांग रहा है।मुंबई की टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस की 'कोशिश' टीम की सोशल ऑडिट रिपोर्ट में सामने आया था कि बालिका गृह में रहने वाली बच्चियों के साथ दुष्कर्म हुआ है।100 पेज की सोशल ऑडिट रिपोर्ट को टीम ने 26 मई को बिहार सरकार और जिला प्रशासन को भेजा।इसके बाद बालिका गृह से 44 किशोरियों को 31 मई को मुक्त कराया गया।इनको पटना, मोकामा और मधुबनी के बालिका गृह में भेजा गया।जांच रिपोर्ट में 34 बच्चियों के साथ यौन शोषण की पुष्टि हुई।बालिका गृह का संचालन कर रही एनजीओ के लोग बच्चियों के साथ रेप करते थे।इस कांड में नेताओं की भागीदारी की बात भी सामने आई थी।मामले में ब्रजेश ठाकुर, बालिका गृह की अधीक्षिका इंदू कुमारी समेत 9 लोगों को जेल भेजा जा चुका है।

बीमा भारती के बेटे की मौत का मामला. मृत्युंजय के फ्लैट पर छह दोस्तों के साथ चली थी शराब पाटी

पटना : जदयू विधायक बीमा भारती के बेटे दीपक राज की मौत की घटना वाली रात दीपक के साथ मौजूद उसके दोस्तों ने पुलिस के सामने जो कुछ कबूल किया है उससे मौत की गुत्थी लगभग सुलझ गयी है. हालांकि पुलिस की पूछताछ और जांच अभी जारी है. जानकारी के मुताबिक गुरुवार की रात महावीर कॉलोनी, बहादुरपुर में दीपक राज के दोस्त मृत्युंजय कुमार के फ्लैट पर शराब पार्टी हुई थी. पार्टी में दीपक समेत सात लोग थे. दीपक के दोस्तों ने बताया कि रात के करीब ढाई बजे तक पार्टी चली, इसके बाद सिगरेट की तलब लगी. मृत्युंजय, ऋतिक रौशन, विकास और दीपक पैदल ही रूम से निकले और बाजार समिति, केला मंडी के रास्ते बहादुर बगान होकर आगे बढ़ने लगे. वे कंकड़बाग और पुरानी बाईपास के बीच रेलवे ट्रैक के पास पहुंचे थे तभी क्विक मोबाइल के जवान गश्ती करते दिखे. नशे में होने के कारण पुलिस को देखकर सभी डर कर भागने लगे. इस भागा-भागी में दीपक तीनों दोस्तों से बिछड़ गया. मृत्युंजय, विकास और ऋतिक रौशन भागकर रूम पर पहुंचे गये, लेकिन दीपक नहीं पहुंचा. सभी सो गये और सुबह दीपक के मौत की खबर मिली. छठे की तलाश जारी : दीपक की मौत के मामले की तफ्तीश तेज हो गयी है. रेल एसपी व एसएसपी मनु महाराज अपनी पूरी टीम के साथ छानबीन में जुटे हुए हैं. पुलिस ने मृत्युंजय, ऋतिक रौशन के अलावा उसके तीन और दोस्तों को हिरासत में लिया है. उनसे पूछताछ जारी है. एक और दोस्त की तलाश जारी है. सदमे से उबर नहीं पायी हैं बीमा : बेटे की मौत के गम में रोते-रोते विधायक बीमा भारती के अब आंसू भी सूख गये पर वे सदमे से उबर नहीं पायी हैं. उनकी आंखे खुली हैं, सबको देख भी रही हैं पर कुछ बोलती नहीं. भिट्ठा स्थित अपने घर में बिछावन पर वे चेतनाशून्य सी पड़ी हुई हैं. हालांकि डॉक्टर और नर्स लगातार उनके स्वास्थ्य का चेकअप कर रहे हैं. इधर अवधेश मंडल ने सरकार से अपने बेटे के हत्यारे की शीघ्र गिरफ्तारी की मांग की है. हत्या के नजरिये से दोस्त हैं घेरे में दीपक की मौत पर उलझी पहेलियों से कई सवाल खड़े होते हैं. इस लिहाज से क्या दोस्तों की बात पर 100 प्रतिशत यकीन कर लेना ठीक होगा? हत्या के नजरिये से देखा जाये तो यह भी संभव है कि साजिश के तहत उसके दोस्तों ने किसी के कहने पर उसे बुलाया, शराब पिलायी और आधी रात को उसे मार दिया गया या फिर ट्रेन के आगे धक्का दे दिया. फिलहाल पुलिस की तफ्तीश जारी है. पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार है. सोमवार की सुबह तक रिपोर्ट आने की बात कही जा रही है. पोस्टमार्टम हाउस के सूत्रों की मानें तो दीपक की मौत सिर के बीचोबीच में लगे गंभीर चोट से हुई है. चाकू या गोली से मौत होने की पुष्टि नहीं हुई है. घटना स्थल से ऐसा कोई सबूत भी नहीं मिला है. रंजिश, प्रेम संबंध के तथ्यों को खंगाल रही है पुलिस पूर्णिया के रुपौली से जदयू विधायक बीमा भारती ने इस मामले में सात लोगों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कराया है. इसमें पूर्व विधायक शंकर सिंह, चंदन सिंह, राजेश मंडल, गुगुल मंडल, संतोष मंडल और दीपक के दोस्तों के नाम शामिल हैं. इसके अलावा यह भी कहा जा रहा है कि दीपक अपने गांव के बगल में रहने वाली एक लड़की से शादी भी कर चुका था, लेकिन दोनों के घरवालों को यह रिश्ता मंजूर नहीं था. सोशल मीडिया पर दोनों की एक साथ फोटो वायरल होने के बाद दीपक को धमकी मिली थी. पुलिस दीपक के मोबाइल फोन का कॉल डिटेल निकाल छानबीन कर रही है.

भगवान शिव के अलावा समस्त देवता करते हैं देवघर में वास

झारखंड स्थित देवघर का नाम आज विश्व-फलक पर अंकित है। यहां का सबसे महत्वपूर्ण एवं महान आस्था का केंद्र है वैद्यनाथ मंदिर। भगवान शंकर का यह मंदिर ऐतिहासिक तो है ही, यहां के चप्पे-चप्पे में एक अद्भुत आकर्षण है। इस मंदिर को वैद्यनाथ धाम के नाम से भी जाना जाता है। चूंकि यहां भगवान शिव के अलावा समस्त देवताओं का वास है, इसलिए इसे 'देवघर' का नाम दिया गया है। यहां ज्योतिर्लिंग स्थापित है, इस कारण इस स्थान का विशेष महत्व भी है। इस लिंग को श्रद्धालु 'कामना लिंग' कहकर भी बुलाते हैं। ऐसी मान्यता है कि यहां हर मनोकामना पूरी होती है। पंडा जी ने बताया कि यह ज्योतिर्लिंग वास्तव में सिद्धपीठ है।

कैसे हुई ज्योतिर्लिंग की स्थापना?

देवघर के ज्योतिर्लिंग यानी सिद्धपीठ की स्थापना को लेकर एक रोचक इतिहास है। कहा जाता है कि शिव को प्रसन्न करने हेतु राक्षसराज रावण हिमालय पहुंचे और घोर तपस्या में लीन हो गए।

घोर तपस्या के बाद राक्षसराज रावण ने अपने नौ मस्तक शिवलिंग पर चढ़ा डाले तो दयालु भोलेबाबा प्रकट हो गए और दसवां सिर काटने से रोकते हुए कहा - 'बस करो वत्स! तुम्हारी घोर तपस्या और भक्ति-भाव से मैं अत्यंत प्रसन्न हूं। 'भगवन शिव के इतना बोलते ही रावण के सारे कटे सिर पुनः जुड़ गए और वह पहले की तरह हो गए। उन्होंने कहा - 'प्रभु, मैं हिमालय में स्थापित आपके इस लिंग को लंका ले जाकर स्थापित करना चाहता हूं। 'इसपर भोलेबाबा ने रावण को शिवलिंग लंका ले जाने की आज्ञा दे तो दे दी लेकिन एक चेतावनी भी दे डाली कि - 'इस शिवलिंग को यदि मार्ग में कहीं रख दिया गया तो यह वहीं अचल हो जाएगा। फिर चाह कर भी इसे कहीं और ले जाना मुश्किल होगा।

रावण शिवलिंग लेकर चल पड़े। रास्ते में रावण को लघुशंका का एहसास हुआ तो उन्होंने शिवलिंग एक ग्वाले को थमा दी और खुद लघुशंका के लिए चले गए। दरअसल यह स्थान एक चिताभूमि थी। रावण को लघुशंका से लौटते-लौटते काफी देर हो गई। इधर ग्वाले ने शिवलिंग को भूमि पर रख दिया। वापस आकर रावण ने शिवलिंग को उखाड़ने का हर संभव प्रयास किया, मगर शिवलिंग टस-से-मस नहीं हुआ। रावण निराश हो गए। उन्होंने शिवलिंग पर अपना अंगूठा गड़ाया और थक-हार कर लंका चले गए। इधर देवताओं ने आकर शिवलिंग की पूजा-अर्चना की और उसे वहीं पूरे विधि-विधान के साथ प्रतिस्थापित कर दिया। इसके बाद शिव की स्तुति करते हुए सभी स्वर्ग को चले गए। यही स्थान आज देवघर है।

ऐसी मान्यता है कि यहां साक्षात शिव हैं, इसलिए यहां आकर शिव की आराधना और जलाभिषेक करने से हर मनोकामना पूरी होती है। यही वजह है कि सिर्फ श्रावण माह में ही नहीं, बल्कि साल भर यहां शिव-भक्तों और श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। यहां भोले बाबा का भव्य मंदिर है और पास ही मां पार्वती सहित अनेक देवी-देवताओं के मंदिर भी हैं, लेकिन सबसे प्राचीन शिव-मंदिर ही है। प्रत्येक वर्ष यहां श्रावणी-मेला लगता है जिसमें देश के कोने-कोने से श्रद्धालु 'बोल-बम' का नारा लगाते हुए पहुंचते हैं एवं ज्योतिर्लिंग पर जलाभिषेक करते हैं।

श्रद्धालुओं की कांवड़-यात्रा

सावन का पवित्र महीना शुरू होते ही श्रद्धालु बाबा के दर्शन को यहां पहुंचने लगते है। ज्यादातर श्रद्धालु कांवड़ लेकर यहां तक आते हैं। इनकी पवित्र यात्रा शुरू होती है सुल्तानगंज से। श्रद्धालु गंगा-जल लेकर पैदल देवघर के लिए 'बोल-बम' के नारे के साथ प्रस्थान करते हैं। कांवर में जल लेकर चलते समय यह ध्यान रखा जाता है कि पात्र भूमि से न सटे। सौ किलोमीटर की कठिन यात्रा के बाद कांवड़िए देवघर पहुंचते हैं और यहां शिवलिंग पर जलाभिषेक करते हैं। इस दौरान श्रद्दालुओं के पांवों में छाले पड़ जाते हैं, लेकिन जलाभिषेक के बाद असीम शांति मिलती है और श्रद्धालु अपना दर्द भूल जाते हैं। प्रत्येक वर्ष सावन के महीने में यहां श्रावण-मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें दूर-दूर से श्रद्धालु अपनी मनोकामनाएं लेकर पहुंचते हैं। मंदिर के निकट एक तालाब भी है, जो आकर्षण का केंद्र है। वैद्यनाथ धाम में पंचशूल की पूजा की जाती है। दरअसल भारत में 12 ज्योतिर्लिंग है जिनमें देवघर स्थित वैद्यनाथ मंदिर भी शामिल है। आमतौर पर विश्व के सभी शिव मंदिरों के ऊपर त्रिशूल लगा रहता है, मगर यहां त्रिशूल की बजाए आपको शिव मंदिर के शीर्ष पर पंचशूल दिखेगा। सिर्फ शिव भगवन ही नहीं बल्कि आस-पास के सभी मंदिरों के ऊपर पंचशूल लगे हैं। पुजारी ने बताया कि महाशिवरात्रि से 2 दिनों पहले सभी मंदिरों से पंचशूल उतारे जाते हैं और इसे स्पर्श करने के लिए श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। कहते हैं इस पांचल का स्पर्श भी अपने आप में काफी अद्भुत है।

इसी दौरान पंचशूलों की पूजा पुरे विधि-विधान से की जाती है। इसके बाद सभी पंचशूलों को यथास्थान लगा दिया जाता है। इस बीच भगवन शिव एवं पार्वती मंदिर के गठबंधन को बदल दिया जाता जाता है। मंदिर में प्रवेश करते ही आप देख सकते हैं शिव और पार्वती मंदिर के गठबंधन को। दूर से ही यह नजारा भक्तों को मंत्रमुग्ध करता है। हर वर्ष महाशिवरात्रि के दिन यह गठबंधन बदला जाता है। पुराने गठबंधन के कपड़े का एक छोटा-सा अंश प्राप्त करने के लिए भी भक्तों की भीड़ लगी रहती है। कहा जाता है कि इसे घर में रखने से सुख-शांति और समृद्धि बनी रहती है।

वैद्यनाथ-धाम नाम के पीछे भी एक कारण है। दरअसल जब रावण शिवलिंग को लेकर हिमालय से लंका की ओर जा रहे थे तभी रस्ते में उन्हें लघुशंका लगी और उन्होंने शिवलिंग को एक चरवाहे को पकड़ा दिया और स्वयं लघुशंका के लिए चले गए। काफी देर होने पर भी जब रावण नहीं लौटे तो चरवाहे ने शिवलिंग को भूमि पर रख दिया। इसके बाद शिवलिंग वहीं स्थापित हो गया। उस चरवाहे का नाम वैद्यनाथ था लिहाजा यह स्थान वैद्यनाथ धाम के नाम से प्रचलित हुआ।

वैद्यनाथ-मंदिर से पश्चिम दिशा में तीन और मंदिर भी हैं। बैजू मंदिर के नाम से प्रसिद्ध ये मंदिर देवघर बाजार में हैं। यहां तक आसानी से पहुंचा जा सकता है। यहां के तीनों मंदिरों में शिवलिंग स्थापित किया गया है। बताया जाता है वैद्यनाथ मंदिर के पुजारियों के पूर्वजों ने ही इन मंदिरों की स्थापना की थी।

बासुकीनाथ मंदिर

देवघर जाकर अगर वैद्यनाथ मंदिर के बाद बासुकीनाथ मंदिर का दर्शन नहीं किया तो आपकी यात्रा बेकार है। देवघर के वैद्यनाथ मंदिर से महज 42 किलोमीटर दूर स्थित है यह मंदिर। इस मंदिर तक पहुंचने के लिए बसें एवं चारपहिया वाहन भी उपलब्ध हैं। वाहन की मदद से बासुकीनाथ बाबा के भव्य मंदिर तक पहुंचा जा सकता है। इस मंदिर की छटा भी काफी निराली है। यहां आकर चित्त को असीम शांति मिलती है। जरमुंडी गांव के समीप स्थित इस मंदिर में आप बासुकीनाथ बाबा का दर्शन कर सकते हैं। साथ ही कई और देवताओं की मनोहारी मूर्तियां यहां विद्यमान हैं। आप-पास कई छोटे-बड़े मंदिर हैं। इस मंदिर के इतिहास को नोनिहाल के घाटवाल से जोड़ा जाता है।

नवलखा मंदिर

देवघर के बाहरी हिस्से में स्थित नवलखा मंदिर भी इस शहर का अभिन्न अंग है। राधाकृष्ण को समर्पित इस मंदिर का निर्माण रानी चारुशीला ने करवाया था। मंदिर का कलेवर काफी आकर्षक है। उत्कृष्ट वास्तु एवम स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना है यह मंदिर। कहा जाता है कि इसे रानी चारुशीला ने बालानंद ब्रह्मचारी के एक शिष्य के साथ मिलकर नौ लाख रूपए की लागत से बनवाया था। वैद्यनाथ मंदिर से महज डेढ़ किलोमीटर दूर नवलखा मंदिर वेलूर के रामकृष्ण मंदिर से मिलता-जुलता है। इसके दर्शन मात्र से चित्त प्रसन्न हो जाता है।

नंदन हिल्स

वैद्यनाथ धाम और नवलखा मंदिर के दर्शन के बाद अगला पड़ाव था सुंदर नंदन हिल्स। देवघर से पश्चिम दिशा की ओर यह एक मनोहारी पर्यटक-स्थल है। यहां पहाड़ पर है एक शिव और नंदी मंदिर। पहाड़ के ऊपर पहुंचकर इन दोनों मंदिरों के दर्शन किए जा सकते हैं। यहां भी भक्तों की भीड़ लगी रहती है। नंदन हिल्स पर चढ़कर आप शहर का मनोरम दृश्य देख सकते हैं। बच्चों के लिए भी यह काफी आकर्षक स्थान है। यहां पर्यटन विभाग की ओर से पार्क का निर्माण कराया गया है। साथ ही बूट घर, भूत घर और दर्पण घर भी है जिसका आनंद बच्चे उठा सकते हैं। नौकाविहार और झूले का आनंद भी लिया जा सकता है।

त्रिकूट हिल्स

देवघर की यात्रा त्रिकूट हिल्स के बिना अधूरी है। देवघर से दस किलोमीटर दूर स्थित है त्रिकुटाचल यानि त्रिकूट हिल्स। यह स्थान भी शिव मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। यहां शिव का मंदिर 2470 फुट ऊपर त्रिकूट पर्वत पर है। यहां तीन मुख्य चोटियां हैं, यही वजह है कि इसका नाम त्रिकूट हिल्स पड़ा। यहां पहुंचकर नैसर्गिक आनंद प्राप्त कर सकते हैं आप।

पहाड़ियों के बीचों-बीच एक आश्रम भी है -त्रिकुटाचल आश्रम। इस आश्रम की स्थापना संपदानंद देव ने की थी। बाद में उनके अनुयायिओं ने इसकी देखभाल करनी शुरू की और आज भी सफलतापूर्वक इसका संचालन किया जा रहा है। यहां देवी त्रिशूली की एक वेदी भी है। पहाड़ियों पर चढ़ने के लिए ऑटोमैटिक झूले यानी रोप वे लगाए गए हैं। इस पर चढ़ना किसी रोमांच से काम नहीं है। कुल मिलाकर बहुत ही दर्शनीय स्थल है यह। यहां बंदरों के भी दर्शन किए जा सकते हैं। कुल मिलाकर देवघर यात्रा काफी रोमांचकारी है।

मां पार्वती की बाईं आंख गिरी थी चंडिका स्थान में

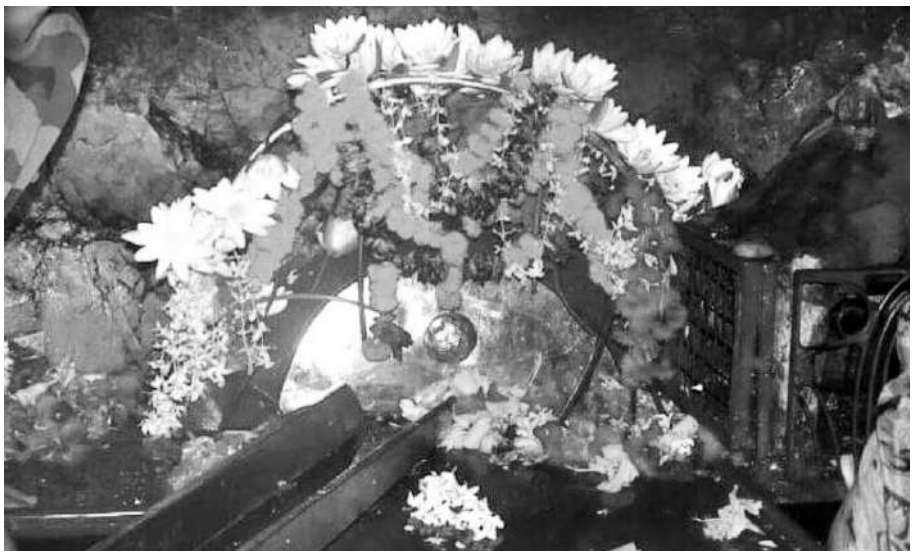

बिहार के मुंगेर जिला मुख्यालय से करीब चार किलोमीटर दूर भारत के 52 शक्तिपीठों में से एक है मां चंडिका स्थान। मान्यता है कि यहां सती (मां पार्वती) की बाईं आंख गिरी थी। कहा जाता है कि यहां पूजा करने वालों की आंखों की पीड़ा दूर होती है।

यह मंदिर पवित्र गंगा के किनारे स्थित है और इसके पूर्व और पश्चिम में श्मशान स्थल है। इस कारण ह्यचंडिका स्थानह्ल को ह्यश्मशान चंडीह्ल के रूप में भी जाना जाता है। नवरात्र के दौरान कई विभिन्न जगहों से साधक तंत्र सिद्धि के लिए भी यहां जमा होते हैं। चंडिका स्थान में नवरात्र के अष्टमी के दिन विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है। इस दिन बडी संख्या में श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं।मान्यता है कि इस स्थल पर माता सती की बाईं आंख गिरी थी। यहां आंखों के असाध्य रोग से पीड़ित लोग पूजा करने आते हैं और यहां से काजल लेकर जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि यहां का काजल नेत्ररोगियों के विकार दूर करता है।

चंडिका स्थान के मुख्य पुजारी नंदन बाबा बताते हैं कि वैसे तो इस स्थान पर सालभर देश के विभिन्न क्षेत्रों आए मां के भक्तों की भीड़ लगी रहती है, लेकिन नवरात्र में माता चंडिका की पूजा का महत्व बढ़ जाता है।वह कहते हैं, ह्लचंडिका स्थान एक प्रसिद्ध शक्तिपीठ है। नवरात्र के दौरान सुबह तीन बजे से ही माता की पूजा शुरू हो जाती है। संध्या में श्रृंगार पूजन होता है। अष्टमी के दिन यहां विशेष पूजा होती है। इस दिन माता का भव्य श्रृंगार किया जाता है। यहां आने वाले लोगों की सभी मनोकामना मां पूर्ण करती हैं।ह्लमान्यता है कि राजा दक्ष की पुत्री सती के जलते हुए शरीर को लेकर जब भगवान शिव भ्रमण कर रहे थे, तब सती की बाईं आंख यहां गिरी थी। इस कारण यह 52 शक्तिपीठों में एक माना जाता है। वहीं दूसरी ओर इस मंदिर को महाभारत काल से भी जोड़ कर देखा जाता है।

जनश्रुतियों के मुताबिक, अंग राज कर्ण मां चंडिका के भक्त थे और रोजाना मां चंडिका के सामने खौलते हुए तेल की कड़ाह में अपनी जान दे मां की पूजा किया करते थे, जिससे मां प्रसन्न होकर राजा कर्ण को जीवित कर देती थी और सवा मन सोना रोजाना कर्ण को देती थीं। कर्ण उस सोने को मुंगेर के कर्ण चौराहा पर ले जाकर लोगों को बांट देते थे।इस बात की जानकारी जब उज्जैन के राजा विक्रमादित्य को मिली तो वे भी छद्म वेष बनाकर अंग पहुंच गए। उन्होंने देखा कि महाराजा कर्ण ब्रह्म मुहूर्त में गंगा स्नान कर चंडिका स्थान स्थित खौलते तेल के कड़ाह में कूद जाते हैं और बाद माता उनके अस्थि-पंजर पर अमृत छिड़क उन्हें पुनः जीवित कर देती हैं और उन्हें पुरस्कार स्वरूप सवा मन सोना देती हैं।एक दिन चुपके से राजा कर्ण से पहले राजा विक्रमादित्य वहां पहुंच गए। कड़ाह में कूदने के बाद उन्हें माता ने जीवित कर दिया। उन्होंने लगातार तीन बार कड़ाह में कूदकर अपना शरीर समाप्त किया और माता ने उन्हें जीवित कर दिया। चौथी बार माता ने उन्हें रोका और वर मांगने को कहा। इस पर राजा विक्रमादित्य ने माता से सोना देने वाला थैला और अमृत कलश मांग लिया।माता ने दोनों चीज देने के बाद वहां रखे कड़ाह को उलट दिया और उसी के अंदर विराजमान हो गईं। मान्यता है कि अमृत कलश नहीं रहने के कारण मां राजा कर्ण को दोबारा जीवित नहीं कर सकती थीं। इसके बाद से अभी तक कड़ाह उलटा हुआ है और उसी के अंदर माता की पूजा होती है।आज भी इस मंदिर में पूजा के पहले लोग विक्रमादित्य का नाम लेते हैं और फिर चंडिका मां का। मां के विशाल मंदिर परिसर में काल भैरव, शिव परिवार और भी कई देवी- देवताओं के मंदिर हैं जहां श्रद्धालु पूजा-अर्चना करते हैं।

महिलाओं के सम्मान के लिए उतरी बिहार की बेटी, रानी चौबे

बस एक बार आगे बढ़कर आँसू तो पोछ दीजिये

कौन कहता है आंसमां में सुराख नहीं होता, बस एक पत्थर से तबीयत से उछालों यारों। किसी नए और मजबूत समाज की कल्पना तभी साकार होगी जब पूरे जज्बे के साथ आगे बढ़ा जाएं। फिर यह परवाह न रहे कि कौन क्या सोचता है। किसी गरीब के आसूं पोछने के लिए किसी न सरकार की जरूरत है और न किसी सामूहिक प्रयास की। बस जरूरत है जुनून की। ऐसी ही एक महिला जो इन दिनों चुपके से नए और मजबूत समाज की परिकल्पना कर निकल पड़ी है। उनके इस प्रयास को जुनून कहें या सनक। किसी भी रूप में परिभाषित कर सकते हैं। जी हां, उस महिला का नाम रानी चौबे है। देखने में किसी अभिनेत्री या सेलीब्रेटी कम नहीं। उपर से जिनती खूबसूरत उतनी ही भीतर से सख्त। जो ठान लिया वो करना है चाहे नफा हो या नुकसान। इस महिला ने देश की नामी कंपनियों में काम किया। कंपनी की मोटी सैलरी और सारी सुख सुविधा इन्हें रास न आई। गरीब महिलाओं की परेशानी और उनके आंख से निकलते गरीबी और लाचारी के आंसू ने इन्हें मजबूर कर दिया सारी सुख सुविधा छोड़कर कुछ इन महिलाओं के लिए कुछ करना है। इसके बाद इन्होंने पहले बिहार के सभी जिलों का दौरा किया। फिर गरीब महिलाओं के

बीच गईं। उनके दुख को अपना दुख समझा। गरीब महिलाओं को कैसे समृद्ध किया जाए। इसके लिए योजना बनाई। खुद को केन्द्र सरकार की योजना पंडित दीन दयाल अत्योदंय योजना से जुड़ गई। ताकि इस योजना का लाभ राज्य की गरीब महिलाओं को मिल सके। वे सबल हो सके और एक सिर पर छत मुहैय्या हो सके।

परिवार और अपने दो छोटे छोटे बच्चों को संभालते हुए इन्होंने अपना सफर शुरू किया। उस सफर में कुछ परेशानियां जरूर मिली। लेकिन कुछ नया करने और गरीबों की मदद के जुनून के आगे से अपनी परेशानियां बेमानी लगने लगी। इधर, रानी के जुनून को देखते हुए इनके परिवार बच्चों ने भी भरपूर सहयोग किया ताकि वे अपने मिशन में कामयाब हो सके। हालांकि इन्होंने भागलपुर, भभुआ, नालंदा और अन्य आसपास के जिलों में केन्द्र सरकार की योजना को धरातल पर लाने के लिए रात दिन एक कर दिया। फलाफल दिखा भी। हां इनके इस अभियान में नगर विकास विभाग के लोगों ने प्रोत्साहन किया। कुछ जगह सरकार की योजनाओं का लाभ गरीबों तक पहुंचा। कुछ जिलों में जल्द ही पहुंच जाएगा। कहती है, एक बारगी भागलपुर के उस बस्ती में गई जहां महिलाएं अपनी जांघ पर सूत तैयार कर रही थी। सूत तैयार करते करते उनके जांघ की खाल काली पड़ गई थी। उस मेहनत का उन महिलाओं को रोजना पचास रुपए मिलते थे। उन लोगों के पास सिर छिपाने की जगह भी नहीं थी। बस एक झोपड़ी जिसमें वे सिर छिपाती थी। उन दिन लगा आखिर इनकी कौन सुनेगा और इनकी पीड़ा को कोई सरकार के सामने कौन आवाज उठाएंगा। उसी दिन ही ठान लिया। इनके लिए कुछ करना है। हालांकि उन दिनों भागलपुर शहर में एक नामी कंपनी में उच्चपद पर कार्यरत थी। जब से उन महिलाओं की पीड़ा को देखा उसके बाद मेरा मन काम में नहीं लगता था।` इतनी व्यथित हो गई कि कंपनी से रिजाइन कर दिया। फिर एक वर्ष तक महिलाओं के जीवन के बारे में अध्यन करती रही। इसी बीच पता चला कि सरकार की एक योजना से जुड़कर इनकी मदद की जा सकती है। उसके बाद से लगातार महिलाओं की

मदद कर रही हूं। मदद करने का तरीका थोड़ा अलग है। कुछ लोग मदद करने के बाद अपनी ब्राडिंग करते हैं लेकिन हम उनमें से नहीं है। बस किसी के लिए कुछ कर देना है यदि एक भी महिला के आंसू मेरी वजह से थम जाते हैं उनके दिल से निकली मेरी लिए दुआ ही बहुत है। हम तो ईश्वर से यहीं कामना करते हैं मुझे इतनी शक्ति दे इस जन्म हम गरीब की सेवा कर सके। बिहार के राजधानी पटना जो वर्षो से चर्चित रहा है और उसी राजधानी में एक कर्मठ और जुझारू बेटी न जन्म लिया जिसका नाम है ,रानी चौबे पटना जन्मभूमि है लेकिन कर्म भूमि भागलपुर बनी, महिलाएं आज के समय मे अब किसी से कम नही है, इसी को देखते हुए इन्होंने महिला के संम्मान के लिए पूरे बिहार के लिए निकल पड़ी हैं,कहते हैं न जब हिम्मत है तो हर काम आसान बन जाती है,पिछले कुछ दिनों में इन्होंने मगध के छेत्र भभुआ माई मुंडेस्वरी देवी का आशिर्वाद लिया फिर कभी बिहारशरीफ नालंदा तो कभी मुज्जफरपुर का दौरा की इन्होंने,वो भी इसलिए कि काम छोटा या बड़ा नही होता है अगर एक गरीब के लिए कुछ भी हो जाय काम दो पल की रोटी और बच्चों की पढ़ाई तो इससे बड़ा काम और कुछ नही हो सकता है,जिस तरह से एक पहल ले के रानी चौबे मैदान में है,लोगों ने यहाँ तक कयास लगाने लगे कि कही रानी चौबे चुनाव के मैदान में न उतर जाय, लेकिन रानी कहती हैं बिना नेता बने हुए भी काम करवा सकती हूं गरीब बच्चे हो या महिला जो भी मैं सबके लिए एक मिसन बन के निकली हु,और पूरे बिहार में अब काम करनी है,समाजसेवी के छेत्र में अपने शहर भागलपुर में कितने गरीबों बच्चों और महिलाओं को इन्होंने जान बचाई है,तो किसी को पेट भरी है,रानी चौबे की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए कयास लगया जा रहा है कि आज न कल चुनाव के मैदान में उतरने की मन भी बना सकती है,खैर वर्तमान में इनका काम एक मिसाल बन के उभर रही है,हाल ही में इन्होंने दीनदयाल अंत्योदय योजना राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन के सामाजिक जागरूकता संस्था के लिए मुज्जफरपुर की बेटी और गोवा की गवर्नर मृदुला सिन्हा जी के हाथों सारे वेनेफिशरी,और महिलाओं को भी सम्मानित करवाया गया। रानी चौबे कहती है अगर आप वास्तव में दुसरो के लिए कुछ करना चाहते हैं तो कोई नही रोक सकता है,ये मेरा विस्वास है।

94 करोड़ 40 लाख में बिका डालमियानगर का कबाड़, लगेगा रेल कारखाना

बिहार के सबसे पुराने औद्योगिक नगरी रोहतास उद्योग समूह डालमियानगर के बंद पड़े कारखाने की कबाड़ का नीलामी आज हो गया। इसके लिए कुल 20 एजेंसियों ने जमानत के तौर पर 10-10 करोड़ रुपए जमा किए थे और दर्जनभर बोली में शामिल हुए। करीब 90 मिनट तक चली नीलामी प्रक्रिया के दौरान सबसे अधिक की बोली 94 करो 40लाख तक पहुंचा, और इसी के साथ 219 एकड़ में फैले रोहतास उद्योग समूह के दर्जनभर इकाइयां नीलाम हो गई।

रोहतास उद्योग समूह के इस इकाई को रेल मंत्रालय ने तत्कालीन रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव के कार्यकाल में 140 करोड़ में खरीदा था। इस परिसर में रेलवे वैगन मरम्मत कारखाना का निर्माण प्रथम चरण में होगा, इसके साथ ही रेलवे के पार्ट्स निर्माण के कारखाने लगाए जाने की योजना है। साथ ही उसी परिसर में कर्मचारियों के लिए नए आवास का निर्माण होगा।

आजादी से करीब डेढ़ दशक पूर्व जगदल डालमिया द्वारा स्थापित रोहतास उद्योग समूह वर्ष 1984 में बंद हो गया था। इसके कुछ इकाइयों को पुनः खोला गया था, लेकिन 1995 आते आते सभी इकाइयां पुनः बंद हो गई और यह समापन में चला गया। बंद पड़ा यह कारखाना 1984 से 2015 के बीच कई लोकसभा और विधानसभा चुनाव में चुनावी मुद्दा बना, राजनेताओं ने अपनी रोटियां सेकी लेकिन इसका समाधान नहीं निकल पाया। वो साढू तीन दशक तक जनता को झूठी हसीन

सपने दिखाते रहे। कभी चिमनियों का चमन रहा डालमियानगर कारखाने के कबाड़ नीलामी के साथ बिहार के सबसे पुराने और एशिया महादेश के सबसे बड़े उद्योग समूह का अस्तित्व अब समाप्त हो जाएगा। अब देखना यह है की यहां पुनः रेल कारखाने की निर्माण प्रक्रिया कब तक शुरू होती है....

भारत में किस-किस को आरक्षण और आखिर कब तक?

सुधांशु रंजन

अपने देश में आरक्षण को लेकर किसी न किसी क्षेत्र में आग सुलगती रहती है. कभी कोई जाति अपने को पिछड़ा बताकर आरक्षण की मांग करती है, तो कभी कोई और. अलग-अलग राजनीतिक दल वोटों के चक्कर में इसका समर्थन करते हैं. अब आरक्षण कमजोरों के लिए नहीं रहा, बल्कि जो जातियां दबंग हैं और संख्या बल की वजह से सरकार को झुका सकती हैं, उनकी मांगों को सरकार मानती है या उन पर विचार करती है.

आर्थिक आधार पर आरक्षण संभव नहीं

महाराष्ट्र में एक बार फिर मराठा आरक्षण की मांग को लेकर आंदोलन तेज हो गया है. हालांकि मराठा क्रांति मोर्चा ने आंदोलन के हिंसक होने के बाद आंदोलन वापस ले लिया है और इससे हुए नुकसान के लिए लोगों से माफी भी मांगी है. लेकिन इससे यह आग बुझने वाली नहीं है. कुछ अन्य दबंग जातियां- हरियाणा में जाट, राजस्थान में गुर्जर और गुजरात में पटेल, आरक्षण के लिए समय-समय पर आंदोलन करते रहे हैं.

इसके अलावा ऊंची जातियों की ओर से भी आर्थिक आधार पर आरक्षण की मांग लगातार होती रही है और कई दलित और पिछड़े नेता भी इसका समर्थन करते हैं. मगर ऐसा कभी संभव नहीं होगा, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने आरक्षण की सीमा 50 प्रतिशत से नीचे रखी है और फिलहाल 49.5 प्रतिशत आरक्षण लागू है. दलितों-आदिवासियों या पिछड़ों के कोटे से एक हिस्सा काटकर कोई सरकार आर्थिक आधार पर आरक्षण देने का साहस नहीं करेगी.

सरकारी नौकरियां पाने की चाहत में अपने को पिछड़ा साबित करने की होड़ तेज हो गई है. भारत में हर जाति स्वयं को पिछड़ी और समुदाय अल्पसंख्यक बताने की कोशिश कर रहा है. वंचित वर्ग को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए संविधान में प्रावधान किया गया कि सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों को आगे बढ़ाने के लिए राज्य उनके लिए विशेष प्रावधान कर सकता हैं.

आरक्षण का यह प्रावधान अपवाद है, क्योंकि सिद्धांत समानता का है. संविधान का अनुच्छेद 14 सब को बराबरी और कानून के समान संरक्षण का अधिकार देता हैं. आरक्षण का औचित्य यह है कि समानता का सिद्धांत समानों के बीच लागू होता है, गैर-बराबरी वालों के बीच बराबरी का सिद्धांत लागू नहीं होता.

मंडल आयोग की सिफारिशें अहम थीं

संविधान निमार्ताओं ने इसे ध्यान में रखते हुए अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की. साथ ही यह प्रावधान किया गया कि सरकारी नौकरियों और शिक्षण संस्थानों में सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए राज्य आरक्षण लागू कर सकता हैं. इसी के तहत पिछड़े वर्गों को भी आरक्षण का लाभ दिया गया.

राष्ट्रीय स्तर पर पहली बार इसे लागू किया

1990 में विश्वनाथ प्रताप सिंह ने जब मंडल आयोग की सिफारिशों को मानते हुए पिछड़े वर्गों के लिए सरकारी नौकारियों में 27 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की गयी. यहां पिछड़े वर्ग का मतलब पिछड़ी जातियां थीं. इस सूची में नयी जातियों को शमिल करने की मांग लगातार उठती रहती है.

जाट आरक्षण पर विवाद

पिछले लोकसभा चुनाव के ठीक पहले केन्द्र सरकार ने जाटों को पिछड़ी जातियों की केंद्रीय सूची में शामिल कर उन्हें आरक्षण का लाभ दे दिया. तब ऐसा आरोप लगाा कि राजनीतिक लाभ के लिए केन्द्र ने यह कदम उठाया, क्योंकि इससे करीब 9 करोड़ जाटों को आरक्षण का लाभ मिलता. राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग ने जाटों को शामिल करने की मांग को खारिज कर दिया था. वैसे पहले से ही जाटों को उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, मध्य प्रदेश, बिहार, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान और उत्तराखंड में पिछड़ी जातियों के आरक्षण का लाभ मिल रहा है, लेकिन केन्द्रीय सूची में उन्हें शामिल नहीं किया गया था.

2014 में 10 से 13 फरवरी तक राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग ने इस मुद्दे पर जन सुनवाई की. दो दिनों तक उनको अपना पक्ष रखने को कहा गया, जो जाटों के आरक्षण के समर्थन में थे और 2 दिन इसके विरोधियों को दिया गया. सुनवाई पूरी होने के बाद आयोग ने जाटों को पिछड़ी जातियों की केन्द्रीय सूची में शामिल करने की मांग को ठुकराते हुए कहाः

ह्यह्लनृजातीय रूप से जाट ऊंचे स्तर पर हैं; वे हिंद-आर्य वंश के हैं, उनका शैक्षणिक स्तर ऊंचा है और उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा सामान्य शूद्रों के मुकाबले बहुत ऊंची है.

आयोग एक मत से इस नतीजे पर पहुंचा कि जाट सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े नहीं हैं. साथ ही, वे तीसरी शर्त भी पूरी नहीं करते कि सेवाओं में उनका प्रतिनिधित्व कम है.

इसके पहले 1997 में भी आयोग ने हरियाणा, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के जाटों को पिछड़े वर्गों की सूची में शामिल करने से इनकार कर दिया था. उस समय केवल राजस्थान के जाटों को पिछड़ा माना गया था, किंतु वहां भी भरतपुर और धौलपुर के जाटों को शामिल नहीं किया गया था. 2001 में दिल्ली के जाटों को इस सूची शामिल करने की मांग नहीं मानी गयी.

ये भी पढ़ें - महिला आरक्षण बिलः आधी आबादी को कब मिल सकेगी पूरी आजादी?

जाटों ने आरक्षण की मांग को लेकर कई बार आंदोलन और उग्र प्रदर्शन किया है.

पिछड़ेपन की पहचान कैसे हो?

सवाल यह है कि पिछड़ेपन की पहचान कैसे की जाए. मंडल आयोग मामले (इंदिरा साहनी) में सुप्रीम कोर्ट की एक संविधान पीठ ने बहुमत से जाति को पिछड़ेपन का आधार माना. हालांकि अल्पमत ने इसे असंवैधानिक माना. लेकिन जाति को आधार मानने के बावजूद कोर्ट ने कहा कि व्यवसाय के आधार पर पिछड़ेपन का निर्धारण किया जा सकता हैं.

उदाहरण के लिए रिक्शा चलाने वाले, झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले और तरकारी बेचने वाले पिछड़े माने जा

सकते हैं. सरकार ने इस दिशा में कोई काम नहीं किया. जाति के आधार पर आरक्षण देने से समाज बंट रहा है. जाटों को आरक्षण देने का विरोध अन्य पिछड़ी जातियां ही कर रही थीं. उनका मानना है कि ऐसी विकसित, दबंग जाति को आरक्षण के दायरे में लाने से अन्य कमजोर जातियों को नुकसान होगा. आज मराठों को भी आरक्षण दिये जाने के खिलाफ कई पिछड़ी जातियां हैं. संविधान का एक प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बनाए रखना भी है. इस पर विचार करने की जरूरत है कि जातीय आधार पर आरक्षण देने का कोई विकल्प है या नहीं.

क्या राजनीतिक फायदे के लिए आरक्षण का इस्तेमाल हो रहा है?

यह निर्विवाद है कि वर्ण व्यवस्था के कारण दलितों को शोषण का शिकार होना पड़ा और इसकी कटुतम शब्दों में आलोचना की जानी चाहिए. लेकिन स्थितियां बदली हैं. अगर 64 वर्षों में आरक्षण से कोई जाति विकास कर ही नहीं पायी तो फिर इसका औचित्य क्या है?

दलितों-पिछड़ों की सूची की कोई समीक्षा नहीं की जाती कि किस जाति का कितना विकास हुआ. 1960 के दशक में इसके लिए 'लोकुर समिति' की स्थापना की गयी, जिसने चमड़े के पेशे से जुड़े समुदाय को आरक्षण के दायरे से बाहर करने की सिफारिश की.

इस पर संसद में इतना हंगामा हुआ कि रिपोर्ट को आलमारी में बंद कर दिया गया. दलितों-पिछड़ों का आगे बढ़ाना समाज का कर्तव्य है, लेकिन क्या अभी भी आरक्षण का वही मतलब रह गया है या केवल राजनीतिक फायदे के लिए इसका इस्तेमाल किया जा रहा है?

ब्रिटिश राज ने सरकारी नौकरियों को लुभावना बनाया

सवाल यह है कि सरकारी नौकरियां इतनी आकर्षक कैसे हो गयीं? लगभग 250 साल पहले जब विधिवत रूप से ब्रिटेन का शासन भारत पर शुरू हुआ, तब भी 27 प्रतिशत विश्व व्यापार पर भारत का नियंत्रण था. लेकिन ब्रिटिश शासन के शुरू होते ही भारतीय संसाधनों की लूट का नया अध्याय प्रारंभ हुआ, जिसकी विस्तार से व्याख्या दादाभाई नौरोजी ने अपनी चर्चित किताब पोवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडियाह्ल में किया है. नौरोजी ने 6 कारणों का जिक्र किया है जिनके चलते भारतीय सम्पदा को लूट कर ब्रिटेन ले जाया गया. इनमें एक कारण था कि व्यवस्था और नौकरशाही पर खर्च बहुत ज्यादा था. दरअसल, ब्रिटिश अधिकारियों के वेतन इतने ज्यादा थे, जिसकी कल्पना करना मुश्किल है. 1773 का रेग्युलेटिंग एक्ट भारत में संविधान-निमार्ण की दिशा में पहला कदम था. इसी अधिनियम के तहत बंगाल में सुप्रीम काउंसिल का गठन किया गया, जिसमें गवर्नर-जनरल और चार काउंसलर होते थे. उनके जो वेतन निश्चित किये गये वह अकल्पनीय है. गर्वनर-जनरल की तनख्वाह 25,000 पाउंड सालाना थी, जबकि काउंसिलर की 10,000 पाउंड सालाना. यह अनुमान लगाया जा सकता है कि 1773 में इस राशि की क्या कीमत रही होगी.

सन 1861 एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, जब इंडियन सिविल सर्विस अधिनियम पारित हुआ. इनमें से कई ने अकूत धन-सम्पदा इकट्ठा की. वायसराय कॉर्नवालिस ने भ्रष्टाचार कम करने के लिए गंभीर प्रयास किये और इसके लिए ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारियों को काफी अच्छे वेतन दिये गये. लेकिन उन्होंने एक निंदनीय परंपरा की नींव भी रखी कि किसी ऊंचे ओहदे पर किसी भारतीय की नियुक्ति नहीं होगी. कठिन संघर्ष के बाद यह प्रतिबंध खत्म हुआ और आईसीएस में भारतीयों को प्रवेश की मंजूरी मिली.

दलितों के उत्थान के लिय ज्योतिबा फुले ने कई काम किए.

दलितों के उत्थान के लिय ज्योतिबा फुले ने कई काम किए.

(फोटोः ट्विटर)

ज्योतिबा फुले और छत्रपति शाहूजी महाराज का योगदान

कोई आश्चर्य नहीं कि 1882 में ज्योतिबा फुले ने हंटर आयोग को ज्ञापन दिया कि सरकारी नौकरियों में कमजोर वर्गों को उनकी संख्या के अनुपात में आरक्षण मिले. 1902 में कोल्हापुर के महाराजा छत्रपति शाहूजी महाराज ने पिछड़े वर्गों को नौकरी में 50 फीसदी आरक्षण दिया, ताकि उनकी गरीबी खत्म हो और राज्य के प्रशासन में उनकी भागीदारी हो. यह भारत में आरक्षण दिये जाने का पहला सरकारी आदेश था.

(लेखक : वरिष्ठ टीवी पत्रकार, स्तंभकार और लेखक हैं. इस आर्टिकल में छपे विचार उनके अपने हैं.)

राजनैतिक परिस्थितियां बदलीं तो जदयू में शामिल हो सकते हैं अनंत सिंह

मोकामा के निर्दलीय विधायक अनंत सिंह ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को लेकर बड़ा बयान दिया है. उन्होंने कहा कि वह नीतीश कुमार के साथ कल भी थे, आज भी हैं और आगे भी जब भी उनको जरूरत पड़ेगी वह सदैव उनके साथ रहेंगे. नीरज कुमार के हालिया बयान को लेकर भी उन्होंने कहा कि आखिर नीरज के पेट में दर्द क्यों होता है.

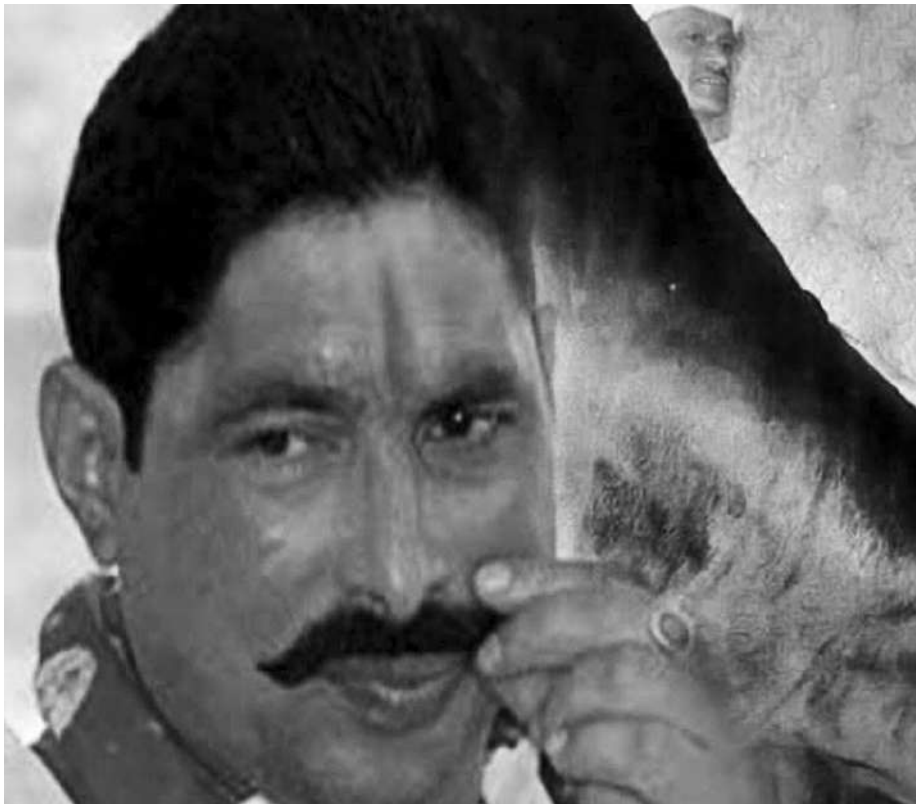

अनंत सिंह बोले- फिलहाल जदयू में जाने का इरादा नहीं, आगे देखा जाएगा

विधायक अनंत सिंह ने कहा कि मोकामा के शिवनार गांव का कार्यक्रम पूरी तरह से गैर राजनीतिक था. उन्होंने कहा कि उनकी मंशा फिलहाल जदयू में शामिल होने की नहीं है लेकिन यदि आगे परिस्थितियां बनी तो वह इससे पीछे नहीं हटेंगे. उन्होंने नीतीश कुमार की जमकर प्रशंसा की और कहा कि नीतीश कुमार के प्रति आज भी उनके मन में उतना ही सम्मान है. अनंत सिंह यहीं नहीं रुके. उन्होंने यह भी कहा कि जब भी सदन में वोट की जरूरत होती है तो वह नीतीश कुमार के स्टैंड के साथ ही खड़े रहते हैं. उन्होंने बेबाकी से कहा कि आगे की बात आगे देखी जाएगी लेकिन फिलहाल ऐसा कुछ नहीं हुआ.

लालू के साथ गए थे नीतीश इसीलिए छोड़ी पार्टी

निर्दलीय विधायक अनंत सिंह ने कहा कि नीतीश कुमार राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव के साथ चले गए थे और लालू प्रसाद यादव के साथ जाने के कारण ही नीतीश से उनकी थोड़े समय के लिए दूरी बन गई थी. उन्होंने यह भी कहा कि वे निर्दलीय चुनाव लड़े हैं और फिलहाल वह निर्दलीय विधायक के तौर पर काम कर रहे हैं.

जनता मालिक है, जो आदेश होगा करूंगा

उन्होंने यह भी कहा कि जनता जनार्दन है और जनता ही असली मालिक है. उन्होंने कहा कि वह हमेशा जनता को भगवान मानते हैं और क्षेत्र की जनता से ही पूछ कर उन्होंने निर्दलीय चुनाव लड़ा था. उन्होंने कहा कि फिलहाल तो जदयू में शामिल होने की कोई चर्चा भी नहीं हुई थी और ऐसी बातें बेमानी है.

नीरज को लेकर बोले- उसके पेट में दर्द क्यों

अनंत सिंह ने कहा कि आखिर नीरज कुमार को क्या तकलीफ है. उन्होंने कहा कि जिसको तकलीफ है वह जाने उनको कोई तकलीफ नहीं है. अनंत सिंह ने कहा कि जदयू में शामिल होने का निर्णय उनक होगा और नीरज कुमार को क्या तकलीफ है.

ललन सिंह ने भी नीरज के बयान से झाड़ा पल्ला

जल संसाधन मंत्री ललन सिंह से भी पत्रकारों ने सवाल किया तो उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि अभी तो कोई जदयू में शामिल हो नहीं रहा था और किस ने क्या बयान दिया है उससे उनको कोई मतलब नहीं है. ललन सिंह ने कहा कि जिसने बयान दिया है वह जाने लेकिन फिलहाल ऐसी कोई बात नहीं थी.

क्या है माजरा

दरअसल बीते दिनों मोकामा के शिवनार गांव में एक ही मंच पर नजर आए थे. शिवनार गांव की मुखिया रंजना कुमारी और उनके पति कार्तिक सिंह की पहल पर दोनों एक मंच पर आए थे. दरअसल ललन सिंह और अनंत सिंह की क्षेत्रीय विकास निधि से गांव में कुछ विकास योजनाएं पूरी हुई थी. उन्हीं योजनाओं का उद्घाटन करने के लिए दोनों नेताओं को शिवनार पंचायत की मुखिया रंजना कुमारी और ग्रामीणों ने बुलाया था. ग्रामीणों का तर्क था कि दोनों नेताओं के द्वारा शिवनार गांव को योजनाएं दी गई थी इसलिए गांव का यह कर्तव्य बनता था कि दोनों नेताओं को बुलाकर गांव में सम्मानित किया जाए. ग्रामीण भी कहते हैं कि उस दिन दलीय कार्यक्रम जैसा कुछ था ही नहीं. हालांकि नीरज कुमार की आपत्ति ललन सिंह के उस बयान से हो गई जिसमें उन्होंने कहा था कि अनंत सिंह घर से अलग कब हुए थे. हालांकि ललन सिंह ने कभी भी यह नहीं कहा था कि अनंत सिंह पार्टी में शामिल हो गए हैं या अनंत सिंह पार्टी में शामिल होंगे. ललन सिंह समर्थकों की मानें तो घर से उनका तात्पर्य उनके व्यक्तिगत संबंधों से था और दल में शामिल होने जैसी कोई बात तो हुई भी नहीं थी.

मनोज तिवारी को इंकेरेडीबल इंडिया स्टार ऑफ मिलेनियम अवार्ड से नवाजा गया

भोजपुरी अंतरराष्ट्रीय फिल्म अवार्ड समारोह (आईबीफा) में जुटे भोजपुरिया मलेशिया में होगा २०१८ का भोजपुरी फिल्म अवार्ड समारोह (आईबीफा) याशी फिल्म्स के अभय सिन्हा और ढिशुम टीवी द्वारा रविवार को लंदन के इंडिगो २ में आयोजित भोजपुरी अंतरराष्ट्रीय फिल्म अवार्ड समारोह (आईबीफा) में भारतीय पर्यटन विभाग द्वारा भोजपुरी फिल्मों के मेगास्टार और दिल्ली के भाजपा प्रदेश अध्यक्ष तथा सांसद मनोज तिवारी को इंकेरेडीबल इंडिया स्टार ऑफ मिलेनियम अवार्ड यानि सदी के सबसे अतुल्य भारतीय सितारे का सम्मान दिया गया.

यह सम्मान मनोज तिवारी को दिया गया तो लंदन में मौजूद हजारों लोगों ने खड़े होकर मनोज तिवारी का स्वागत किया. भोजपुरी अंतरराष्ट्रीय फिल्म अवार्ड समारोह (आईबीफा) ने जहाँ एक ओर भोजपुरी की आवाज को गांव जवार से निकाल कर सात समन्दर पार परदेस में लाकर चर्चित कर दिया वहीं दूसरी ओर भोजपुरी की दुनिया को विस्तार देते हुए अंतरराष्ट्रीय प्लेटफॉर्म दिया. हालाँकि विदेशी धरती पर यह तीसरा अंतर्राष्ट्रीय भोजपुरी फिल्म अवार्ड (आईबीफा) समारोह है. इससे पहले मॉरिशस और दुबई में भी यह आयोजित किया जा चुका है, लेकिन इंग्लैंड की राजधानी लंदन में रविवार को हुए इस समारोह की चर्चा भोजपुरी के दिग्गज कलाकारों की उपस्थिति से और भी चर्चित हो गयी है.

इस अवसर पर रवि किशन को आईबीफा क्रिटीक्स अवॉर्ड से नवाजा गया जबकि बेस्ट फिल्म आशिक आवारा, बेस्ट एक्टर पवन सिंह, बेस्ट एक्ट्रेस मधु शर्मा, बेस्ट डेब्यु (फीमेल) शिविका दिवान, बेस्ट डायरेक्टर असलम शेख, बेस्ट एक्टर (निगेटिव रोल) अवधेश मिश्रा, बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर मनोज टाईगर, बेस्ट सपोर्टिंग एक्ट्रेस शुभी शर्मा, बेस्ट सेशनल डांसिंग अवार्ड सीमा सिंह, बेस्ट एक्टर इन कॉमिक रोल सुर्या द्विवेदी, बेस्ट सिंगर (मेल) पवन सिंह, बेस्ट सिंगर (फीमेल) प्रियंका सिंह, बेस्ट म्युजिक डायरेक्टर मधुकर आनंद, बेस्ट लिरिक्स राईटर प्यारेलाल यादव, बेस्ट जोड़ी दिनेश लाल यादव निरुहुआ और आम्रपाली, बेस्ट कोरियोग्राफर कानू मुखर्जी, बेस्ट कैमरामैन बासू, बेस्ट फाईट डायरेक्टर अंजली पठान, बेस्ट एडिटर प्रीतम नायक, आईबीफा पर्सनलिटी अवॉर्ड मधुदुवेन्द्र राय, आइटम क्वीन अवार्ड सम्भावना सेठ को दिया गया. इस अवसर पर सीबीआई के पूर्व निदेशक रंजीत सिंहा और लंदन के भारतीय उच्चायुक्त यश सिन्हा ने भी कार्यक्रम में चार चांद लगाया. आगे पढ़े... भोजपुरी अंतरराष्ट्रीय फिल्म अवार्ड समारोह (आईबीफा) में हिन्दी और भोजपुरी सिनेमा के कलाकारों साथ बॉलीवुड कलाकार भी मौजूद रहें शत्रुध्न सिन्हा, गोविन्दा, मनोज तिवारी, रविकिशन, दिनेश लाल यादव निरहुआ, मालिनी अवस्थी, पवन सिंह, समीर अफताब और नायिकाओं में मधु शर्मा, दिव्या देशाई, पाखी हेगड़े, आम्रपाली दुबे, संभावना सेठ, अक्षरा सिंह, शिविका दीवान, अंजना सिंह और आइटम क्वीन सीमा सिंह आदि ने अपने नाच-गाने और अभिनय से यूके वासियों का दिल जीत लिया. समूचे भारत सहित दुनिया भर में बोली जाने वाली दुनिया की सबसे मीठी भाषा भोजपुरी और फिल्में अंतराष्ट्रीय स्तर पर पहचानी जाने लगी हैं. लंदन में पहली बार इंटरनेशनल भोजपुरी फिल्म अवार्ड समारोह (आईबीएफए) अपने आप में ऐतिहासिक और धमाकेदार रहा. ढिशुम आईबीफा (भोजपुरी फिल्म अवार्ड समारोह) में एक से बढ़कर एक भोजपुरी सितारों ने लंदन में अपने जलवा से सबको मोहित कर दिया. बिहारी बाबु शत्रुघ्न सिन्हा ने अपने सम्बोधन में भोजपुरी समाज के लिए महत्वपूर्ण संदेश में कहा कि भोजपुरी को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग की और आशा व्यक्त की कि सरकार जल्द ही भोजपुरी को आठवीं अनुसूचि में शामिल कर देगी. मुंबई भाजपा के महामंत्री अमरजीत मिश्रा भी कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित थे. आईबीफा २०१८ मलेशिया में आयोजित करने की घोषणा की गयी. ढिशुम आईबीफा का रंगारंग अवॉर्ड फंक्शन को दर्शक २७ अगस्त को ढिशुम टीवी चैनल पर लुत्फ उठा सकेंगे.

रामधारी सिंह दिनकर की धरती बेगूसराय में लहराएगा बिहार का सबसे ऊंचा तिरंगा

पड़ोसी राज्य झारखंड की तरह अब बिहार की धरती पर भी ऊंचा राष्ट्रीय ध्वज फहराएगा और से झंडा राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर की धरती बेगूसराय में जल्द ही लहराता नजर आएगा। उम्मीद है कि स्वतंत्रता दिवस के दिन बिहार का सबसे ऊंचा झंडा लग जाएगा और इसे लगाने के लिए बेगूसराय के डीएम खत लिखकर जमीन की मांग की है। यह पहल बिहार के ही रहने वाले सामाजिक कार्यकर्त्ता अजय कुमार की तरफ से की गई है। इसमें दिल्ली की शेयर और कमोडिटी मार्केट की कंपनी एडवाजरी मंडी और डॉट कॉम के फाउंडर व सीईओ कौशलेंद्र सिंह सेंगर भी सहयोग करेंगे। अजय कुमार का कहना है कि बिहार का सबसे ऊंचा राष्ट्रीय ध्वज बेगूसराय में लगाने की योजना है। उन्होंने बाया कि देश के अन्य राज्यों के विभिन्न शहरों में 300 फीट तक के ऊंचे झंडे लहरा रहे हैं। लेकिन अब तक बिहार इससे अछूता रह गया था। इसीलिए अब बिहार में भी ऊंचा झंडा बेगूसराय में लगाने का निर्णय लिया गया है। इसके लिए स्थानीय प्रशासन को खत लिखकर जगह की मांग की गई है और हमारी तरफ से जीरो माइल और हर हर महादेव चौक का चयन किया गया है। प्रशासनिक अनुमति मिलने के बाद हमारा प्रयास रहेगा

कि आगामी 15 अगस्त तक यहां 150 और 200 फीट ऊंचा राष्ट्रीय ध्वज लगाया जाएगा। बिहार के रहने वाले अजय कुमार दिल्ली में कार्यरत हैं, लेकिन उनके दिल में समाजसेवा की तड़प लगातार बनी हुई है। अजय बिहार और यूपी के तमाम गांवों में जैविक खेती को बढ़ावा देने का काम कर रहे हैं। अजय समय समय पर गांवों में जाकर किसानों को जागरूक करते हैं और ग्रामीणों को जैविक खेती के तौर तरीकों के बारे में बताते हैं। बिहार के बेगूसराय में भी 200 फीट ऊंचा तिरंगा

लगा जाएगा। इसे लेकर बेगूसरायवासी काफी खुश हैं और अयज कुमार की सराहना कर रहे हैं। दिल्ली में टेलीविजन पत्रकार और जयमंगला कावर फाउंडेशन के अध्यक्ष राजेश राज जो बेगूसराय के ही रहने वाले हैं उन्होंने भी अजय कुमार के प्रयासों की तारीफ की और कहा कि दिल्ली में रहकर बिहारी अस्मिता की रक्षा करने वाले अजय समेत तमाम लोग अभिनंदन के पात्र हैं। दिनकर की धरती पर अगर लहरेगा तिरंगा तो ये बेगूसराय के लिए गर्व की बात होगी।

स्वास्थ्य का अधिकार जनता का प्राथमिक अधिकार

देश में स्वास्थ्य का अधिकार जनता का प्राथमिक अधिकार समझा जाता है परन्तु भारत में स्वास्थ्य की तरफ पर्याप्त ध्यान न देने से तथा स्वास्थ्य सेवा के अभाव के कारण देश में प्रतिदिन ही हजारों लोग अपनी जान अस्पतालों में चिकित्सा के दौरान गंवा देते हैं। स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में भारत का स्थान 195 देशों की सूची में 145 वें स्थान पर है जो बांग्ला देश, चीन, भूटान व श्रीलंका से भी पीछे है। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा इस ओर ध्यान दिया गया तथा अक्टूबर 2014 में स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत कर दी। 2 अक्टूबर 2019 तक समस्त भारत से खुले में शौच व्यवस्था का समूल उन्मूलन करने का लक्ष्य निश्चित किया गया। शौचालय निर्माण तथा स्वच्छता से देश के आर्थिक विकास में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से योगदान दिखाई देने लगा है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन में केन्द्र व राज्य सरकारों ने रोग नियंत्रण कार्यक्रमों में भारी निवेश किया गया है। शौचालयों का निर्माण भी तेज गति से किया गया है। वर्ष 2014-15 से अब तक 7,196 करोड़ शौचालय बनाने का दावा किया गया है। भारत में अब तक 3,60,000 से अधिक गांवों को खुले में शौच से मुक्त घोषित कर दिया गया है। लोगों के औसत मासिक पारिवारिक चिकित्सा बिल जो लगभग 120/- प्रति महीने आता था, वह अब कम हो गया है। परिवार के बीमार सदस्यों को चिकित्सक के पास ले जाने में व्यय होने वाले समय में भी कमी आयी है। अब वे लोग उत्पादक कार्य की ओर अधिक ध्यान देने लगे हैं। खुले में शौच मुक्त गांवों के परिवारों को मिलने वाले आर्थिक लाभ को ज्ञात करने के लिए यूनिसेफ ने 12 राज्यों के 18,000 लोगों के बीच एक अध्ययन कराया था, उससे ज्ञात हुआ कि खुले में शौच से मुक्त होने पर प्रति परिवार के चिकित्सा व्यय में लगभग 4,200/- रुपये प्रति परिवार वार्षिक बचत हुई है। समय की बचत हुई सो अलग तथा लोगों की जान भी बची है जिससे प्रति परिवार 19,000/- की सम्पत्ति में बढ़ोत्तरी हुई है। सफाई के कारण प्रति परिवार दस वर्ष की अवधि में निवेश से 4.3 गुना अधिक प्राप्ति होगी। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू एच ओ) के अनुसार सफाई पर होने वाले व्यय पर वैश्विक आर्थिक प्रतिफल प्रति डॉलर निवेश पर करीब 5.5 डॉलर हैं। यू एन वाटर के अनुसार साफ सफाई में बेहतरी से प्रत्येक परिवार को काम करने, अध्ययन करने, बच्चों की देखभाल करने आदि के लिए 1,000 अतिरिक्त घंटे मिलते हैं अर्थात प्रति परिवार अब घंटे के काम के 125 दिन अतिरिक्त मिलते है। खुले में शौच मुक्त भारत को प्रतिवर्ष काम के 1,000 करोड़ अतिरिक्त दिन मिल सकते है। विश्व बैंक के अनुसार अपर्याप्त सफाई के कारण प्रति वर्ष लगभग 26,000 करोड़ डॉलर की हानि होती है। वर्ष 2006 में भारत को स्वास्थ्य, पानी, व अन्य सेवाओं में कमी आदि के कारण 5,380 करोड़ रुपये की हानि हुई जो देश की कुल जीडीपी का 6.4 प्रतिशत थी। भारत में पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों में करीब 38 प्रतिशत शारीरिक व संज्ञानात्मक रुप से कमजोर है। ऐसी स्थिति में देश में साफ सफाई व स्वच्छता देश के राजनीतिक दलों के लिये एक मुख्य मुददा हो सकता है। इसका प्रभाव देश में भविष्य की उत्पादन क्षमता पर पड़ता है, अर्थात जनसंख्या का बड़ा हिस्सा अपनी उत्पादकता का पूर्ण प्रयोग नहीं कर पायेगा। प्रधानमंत्री मोदी के स्वच्छ भारत अभियान से ग्रामीण क्षेत्रों में साफ सफाई का स्तर सुधर रहा है तथा अक्टूबर 2014 के 39 प्रतिशत की तुलना में अब यह 84 प्रतिशत तक पहुंच गया है। देश में भी साफ सफाई उद्योग 3,200 करोड़ डॉलर का है जो 2021 तक दुगना हो जायेगा जिससे रोजगार के भी नये नये अवसर सामने आ सकते हैं। महिलाओं को 168 करोड़ काम के घंटे की बचत होने का अनुमान लगाया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में शौच से बनी खाद से प्याज की बेहतर उपज होने में मदद मिली है क्योंकि यह खाद रासायनिक व अन्य जैविक खाद की तुलना में बेहतर समझी जा रही है। सरकार ने स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत दो पिट वाले शौचालयों को प्रोत्साहित किया है जो स्वतः खाद तैयारी करने में मदद करते हैं।

देश की लगभग हर भाषा की फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं रवि किशन

अनूप नारायण सिंह

इतिहास कोई एक दिन में नहीं रचता बल्कि उसकी नींव काफी पहले पड़ गई होती है. देश की लगभग हर भाषा की फिल्मों में अभिनय कर चुके रवि किशन की गिनती देश के उन गिने चुने कलाकारों में होती है, जिन्होंने काफी संघर्ष के बाद न सिर्फ मंजिल पाई, बल्कि देश के कोने-कोने में उनकी भाषा में अपनी आवाज बुलंद की. आज लाखों लोगों के दिल में बसने वाले रवि किशन का जन्मदिन है. वह आज भोजपुरी फिल्मों के महानायक हैं. यही नहीं, हिंदी, दक्षिण भाषाई फिल्मों सहित अन्य भाषाई फिल्मों में भी छाए रहते हैं. इतिहास गवाह है कि हर सफलता की नींव काफी पहले रख दी जाती है. कुछ ऐसा ही है अभिनेता रवि किशन के साथ. 17 जुलाई को उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले के केराकत तहसील के छोटे से गांव वराई विसुई में पंडित श्याम नारायण शुक्ला व जड़ावती देवी के घर 49 साल पहले आज ही के दिन, यानी 17 जुलाई को एक किलकारी गूंजी जिनकी गूंज आज दुनिया के कोने-कोने में हर क्षेत्र में सुनाई दे रही है. 17 जुलाई को जन्में बालक रविंद्र नाथ शुक्ला आज का रवि किशन हैं, जिनकी उपलब्धि को कुछ शब्दों में या कुछ पन्नों में समेटा नहीं जा सकता.

शुरूआती दौर

रवि किशन को अभिनय का शौक कब हुआ, उन्हें खुद याद नहीं है. लेकिन रेडियो में गाने की आवाज इनके पैर को थिरकने पर मजबूर कर देती थी. कहीं भी शादी हो, अगर बैंड की आवाज उनके कानों में गई तो वो खुद को कंट्रोल नहीं कर पाते थे. यही वजह है जब नवरात्र की शुरूआत हुई, तो उन्होंने पहली बार अभिनय की ओर कदम रखा. गांव के रामलीला में उन्होंने माता सीता की भूमिका से अभिनय की शुरूआत की. उनके पिताजी पंडित श्यामनारायण शुक्ला को यह कतई पसंद नहीं था कि उनके बेटे को लोग नचनियां-गवैया कहें, इसीलिए मार भी खानी पड़ी पर बालक रविंद्र के सपनों पर इसका कोई असर नहीं पड़ा.

संघर्ष का दौर

मां ने अपने बब्बू (घर का नाम) रविंद्र के सपनों को पूरा करने का फैसला किया और कुछ पैसे दिए और इस तरह अपने सपनों को साकार करने के लिए रविंद्र नाथ शुक्ला मुंबई पहुंच गए. मां मुम्बा देवी की नगरी काफी इम्तिहान लेती है. गांव का रविंद्र नाथ शुक्ला यहां आकर रवि किशन तो बन गया, पर मंजिल आसान नहीं थी. संघर्ष के लिए पैसों की जरूरत थी, इसीलिए उन्होंने सुबह-सुबह पेपर बांटना शुरू कर दिया आज जिन अखबारों में उनके बड़े-बड़े फोटो छपते हैं, कभी उन्हीं अखबारों को सुबह-सुबह वह घर-घर पहुंचाया करते थे. यही नहीं, पेपर बेचने के अलावा उन्होंने वीडियो कैसेट किराए पर देने का काम भी शुरू कर दिया. इन सबके बीच बांद्रा में उन्होंने पढ़ाई भी जारी रखी. पुरानी मोटरसाइकल से वे अपना फोटो लेकर इस ऑफिस से उस ऑफिस भटकते रहते थे और जब पेट्रोल के पैसे नहीं रहते तो पैदल ही घूम-घूमकर निमार्ता निर्देशकों से मिलते रहते थे.

आज का दौर

आज रवि किशन फिल्म जगत के एकमात्र ऐसे अभिनेता हैं, जो एक साथ कई भाषा की फिल्मों में अभिनय कर रहे हैं. आज उनकी लोकप्रियता न सिर्फ भोजपुरी और हिंदी भाषी दर्शकों के बीच है, बल्कि दक्षिण भारत, बंगला, मराठी और गुजराती दर्शकों में भी वे उसी तरह लोकप्रिय हैं और यही वजह है कि दुनिया के कोने-कोने में उनके लाखों-करोड़ों चाहने वाले हैं. तेलगु फिल्म जगत में तो उनके अभिनय का सिक्का चल रहा है. सौ से भी अधिक अवॉर्ड और सम्मान से नवाजे जा चुके रवि किशन अब अपनी माटी का कर्ज चुकाने के लिए तत्पर हैं और उनकी योजना अपने गृह प्रदेश उत्तर प्रदेश में एक विशाल फिल्म सिटी के निर्माण के प्रयास में लगे हैं. सरकार ने उनकी मांग पर अपनी सहमति भी दे दी और शायद उनके पचासवें जन्मदिन पर फिल्म सिटी का अस्तित्व भी सबके सामने होगा.

प्रेस रिपोर्टर की भूमिका सरल नहीं : सुप्रिया पांडेय

अनूप नारायण सिंह

फिल्म अभिनेत्री सुप्रिया पांडेय हिन्दी सीरियल और फिल्मों का जाना पहचाना चेहरा है.कम समय में ही विभिन्न प्रकार की भूमिकायें सुप्रिया ने कर ली है.सुप्रिया भोजपुरी फिल्मे बहुत कम करती है. अगर फिल्म की कहानी या किरदार पंसद आये तो ही फिल्म में काम करना पसंद करती है.वह कहती है मेरे लिये लीड या सेकेंड लीड मायने नहीं रखती मैं अपने किरदार को देखती हूँ.जिसको अच्छी तरह से निभा सके.फिल्म को देखते वक्त यह न लगे कि क्यो यह रोल किया ? फिल्म ह्यमाटी द मदर लैंडह्य में वह प्रेस रिपोर्टर की भूमिका में है.सुप्रिया बताती है कि यह भूमिका करते वक्त पहली बार मुझे अहसास हुआ कि यह काम कितना चैलेंज भरा हुआ है.हमने रोल करने से पहले रिपोर्टर के काम को समझा.तब लगा कि यह काम तो काम इसकी फिल्म में भूमिका निभाना भी चैलेंज से भरा हुआ है.

सुप्रिया रिपोर्टर की भूमिका में भी काफी ग्लैमरस लग रही है. फिल्म ह्यमाटी द मदर लैंडह्य बांके बिहारी फिल्म इंटरटेमेंट के बैनर तले बन रही है.अभिनेता अजीत सहित कई सितारों ने इसमें काम कर रहे है.निमार्ता गणेश ठाकुर सुमित गुप्ता, निर्देशक गुलाम हुसेन रिजवी साहब, लेखक और क्रियेटिव हेड लक्ष्मी यादव,कैमरामैन विनय त्यागी, डांस डायरेक्टर रितुराज, गुलाम हुसैन, साधू जी, मेकअप देव शर्मा, एक्शन प्रदीप खडका, प्रोडक्शन मैनेजर राजकुमार, लाइट जयशंकर और कार्यकारी निमार्ता शहबाज आलम फिल्म की सफलता में पूर्वक कम समय में ही पूरा कर लेना चाहते है.सुप्रिया ने कहा कि यह ऐसी फिल्म है जिसे पूरे परिवार के साथ देखा जा सकता है.

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ मिशन को लेकर दिल्ली में भोजपुरी सितारों को लेकर एक शाम सजी

अनूप नारायण सिंह

इस शाम में शामिल हुए भोजपुरी सुपरस्टार खेशारीलाल यादव,राखी सावंत,अक्षरा सिंह, काजल राघवानी,पूनम दुबे,संगीता तिवारी,ग्लोरी मोहंतो, अश्मिता सिंह राजपूत,रीतू सिंह,आनंद मोहन,पवन पांडे,आजाद सिंह आदि जैसे जानेमाने नाम शामिल हुए।कार्यक्रम में बारिश भी हुई और संगीत की स्वरलहरी भी गूंजी।इस अवसर पर कई विशिष्ट अतिथियो का सम्मान भी किया गया।उन अभिनेत्रियों कभी सम्मान हुआ जिन्होंने महिला होते हुए भी अपनी अलग पहचान बनाई।इस कार्यक्रम के आयोजक थे पूर्वांचल मोर्चा के अध्यक्ष मनीष सिंह और यू पी बी.आर. के प्रबंध निदेशक राणा अम्बुज सिंह, यू पी बी आर का ये पहला शो था ।इस कार्यक्रम में सहयोग किया एवीपी एंटरटेनमेंट के पवन पांडे ने जबकि दिल्ली भर में होर्डिंग लगाया उमेश सिंह और शशिकान्त मिश्रा ने ।कार्यक्रम के मीडिया पार्टनर थे आस्कर चैनल के आनंद जी।दिल्ली के मयूर विहार फेज 1 में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था।कार्यकम के ऑर्गनाइजर थे विकास सिंह वीरप्पन।

चर्चा के केंद्र बिंदु में आयीं अमृता सिंह एवं पल्लवी सिन्हा

अनूप नारायण सिंह

कहते हैं कि इंसान अगर दिल में कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखें तो तमाम मुश्किलों के बावजूद उसे मंजिल मिल ही जाती है इस कहावत को वास्तविकता के धरातल पर सत्य सिद्ध कर दिखाया है पटना की दो साहसी महिलाओं अमृता सिंह एवं पल्लवी सिन्हा ने। नव अस्तित्व फाउंडेशन के माध्यम से बिहार जैसे बीमारू राज्य में महिलाओं के बीच महावारी जैसे विषय पर राज्यव्यापी जन जागरूकता अभियान चलाकर चर्चा के केंद्र बिंदु में आए नव अस्तित्व फाउंडेशन के संस्थापक अमृता और पल्लवी ने बिहार की राजधानी पटना में सीमित साधनों के बीच रु5 वाली साईं की रसोई शुरू की है जो बिना किसी सरकारी या गैर सरकारी सहयोग या सहायता के सफलतापूर्वक विगत 50 दिनों से संचालित नहीं हो रही बल्कि सैकड़ों की तादाद में लोगों को भरपेट भोजन भी मुहैया करा रही है पटना के ओल्ड बायपास रोड भूतनाथ रोड के समीप साईं मंदिर कॉर्नर पर प्रतिदिन संध्या 7:00 बजे से लेकर 9:00 बजे तक साईं की रसोई लगती है जहां लोग कतारबद्ध होकर अपनी बारी का इंतजार करते हैं रिक्शा ठेला चालकों से लेकर फुटपाथ पर रहने वाले लोग प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करने वाले छात्र व

राहगीर साईं की रसोई के नियमित ग्राहक बन चुके हैं। महज रु5 की सहयोग राशि पर लोगों को लजीज व्यंजन परोसे जाते है सातों दिनों का मैन्यू अलग अलग है किसी दिन खिचड़ी तो किसी दिन पूरी बुंदिया तो किसी दिन लोगों को पुलाव परोसा जाता है जिस दिन खाना पहुंचने में लेट हो जाता है लोग टकटकी लगाए साईं की रसोई टीम का इंतजार करते हैं। साईं की रसोई की शुरूआत 3 जून 2018 को अमृता सिंह, पल्लवी सिन्हा, अशोक कुमार वर्मा,और बंटी जी के द्वारा की गई जिसमें धीरे धीरे लोग जुड़ते जा रहे हैं और एक बहुत बड़ी टीम अब इसका हिस्सा है जिसमें राकेश शर्मा और अशोक शर्मा जी का निरंतर सहयोग रहा है।रोज 5रु में लोगों को गर्म, पौष्टिक, स्वादिष्ट और हर दिन अलग अलग प्रकार का शुद्ध भोजन उपलब्ध कराना साईं की रसोई का मुख्य मकसद है।आज इस रसोई ने 50 दिन पूरे कर लिए हैं और आशा है कि यह रसोई लगातार चलती रहेगी। महज हौसले के बल पर उड़ान भर गई सबकी रसोई बाजारवाद के दौर से गुजर रहे समाज को आशा की एक नई किरण भी दिखा रही है यह रसोई। रु5 की सहयोग राशि लेने के सवाल पर पल्लवी कहती है कि लोगों को यह महसूस नहीं हो की उन्हें मुफ्त में खाना दिया जा रहा है इसलिए रु5 की सहयोग राशि ली जाती है अपने भावी योजनाओं के बारे में अमृता बताती हैं कि बिहार के सबसे बड़े सरकारी हॉस्पिटल पीएमसीएच में भी साईं की रसोई शुरू करने की तैयारी चल रही साधन सीमित है बस हौसला है कि कुछ नया करना है। समाज के एक तबके का सहयोग निरंतर नहीं मिल रहा है बिना किसी प्रचार प्रसार के साईं की रसोई समाज सेवा के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हो रही है।

खनकती और मखमली आवाज की मल्लिका प्रिया मल्लिक

अनूप नारायण सिंह

खनकती और मखमली आवाज की मल्लिका प्रिया मल्लिक आज की तारीख में किसी परिचय पहचान की मोहताज नहीं रियलिटी शो ओम शांति ओम की उप विजेता बनी प्रिया मल्लिक की खनकती आवाज इन्हें भीड़ से अलग करती है। इस शो में उनके द्वारा गाए गीतों ने देश दुनिया में उन्हें स्थापित किया। पटना के एस रजा गर्ल्स स्कूल से 10ॅ पटना के हीं जेडी वीमेंस कॉलेज से इंटरमीडिएट की पढ़ाई करने वाली प्रिया के पिता भारत भूषण मलिक बिजनेसमैन है तो माता समता मलिक गृहणी भाई आर्यन अभी नवी क्लास में पढ़ाई करते हैं प्रिया मूल रूप से बिहार के सुपौल जिले की रहने वाली है। यह खुद मुंबई में रहती है पर इनका परिवार पटना के अनीसाबाद इलाके में वर्षो से रहते आ रहा है। प्रिया के माता और पिता दोनों बहुत ही बढ़िया गायक है प्रिया के संगीत गुरु विजय सिंह पटना से है जिनसे इन्होंने क्लासिकल की दीक्षा ली है।

वर्ष 2007 में सुर तरंग नामक एक रियालिटी शो में प्रिया का चयन हुआ द्वितीय चरण के लिए यह दिल्ली पहुंच लेकिन वहां सफल नहीं हो पाई उस कार्यक्रम से इन्हें सीख मिली निरंतर अभ्यास से ही संगीत के क्षेत्र में मुकाम को पाया जा सकता है रियाज आजीवन चलते रहता है 2011 में प्रिया लिटिल चैंप्स का हिस्सा बनी तथा इन्हें सिल्वर मेडल मिला स्टेट लेवल के कई गायन प्रतियोगिताओं में इन्होंने अपने स्वर का जादू बिखेरा वर्ष 2014 में वेस्टीज आइडियल में भाग लिया दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में आयोजित भव्य समारोह में इन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त कर संगीत समीक्षकों का ध्यान अपनी और खींचा। स्टार भारत चैनल के रियलिटी शो ओम शांति ओम ने प्रिया को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दी। शो की जज सोनाक्षी सिन्हा सिन्हा ने इन्हें पटना कि फुलझड़ी का उपनाम दिया तथा इन से वादा किया कि प्रिया जब भी हिंदी सिनेमा के लिए पहला गाना गाएंगी वह गाना उनके ऊपर ही फिल्माया जाएगा । शो की जज सचिन-जिगर ने प्रिया को बॉलीवुड में पार्श्वगायन का ऑफर भी दिया उसके बाद उनके पास कई सारे प्रोजेक्ट आने लगे प्रिया हिंदी में भक्ति गीतों को एक नए अंदाज में प्रस्तुत करने की तैयारी में है। वे कहती है कि लोकगीतों की जो परंपरा है उसमें जैसे ही बिहार की चर्चा होती है तो पहला जो जेहन में सवाल आता है वह भोजपुरी को लेकर आता है भोजपुरी के बारे में ऐसी धारणा बना दी गई है कि भोजपुरी अश्लील भाषा है जबकि ऐसा नहीं बिहार में भोजपुरी के साथ ही साथ मैथिली अंगिका जैसे लोक भाषाएं हैं जिनके लोकगीत काफी समृद्ध है। इन दिनों प्रिया शोध कार्यों में लगी हुई है भोजपुरी लोकगीतों की मिठास को सहेजने में साथ ही साथ मैथिली अंगिका के भी पारंपरिक गीतों को यह नए अंदाज में प्रस्तुत कर देश दुनिया के सामने लाना चाहती है।और उनके इस अभियान में मुजफ्फरपुर बेस्ड संगीतकार विजय नारायण मेंटर है प्रिया कहती हैं कि सुंदरकांड को नए अंदाज में प्रस्तुत करने की भी तैयारी पंकज नारायण सर के माध्यम से हो रही है जिससे युथ को मोटिवेट किया जा सके अपनी सफलता का श्रेय अपने माता पिता गुरु और पंकज नारायण को देने वाली प्रिय कहती हैं कि मैं भजन सम्राट अनूप जलोटा के साथ भी एक बड़ा प्रोजेक्ट कर रही हूं। फिल्मों में काम करने के सवाल पर प्रिया का कहना है ऑफर तो बहुत सारे हैं पर उन्होंने फिलहाल इसके बारे में नहीं सोचा है उनका पूरा फोकस गायकी की तरफ है। निरंतर सीखना ही सफलता की कुंजी है सजग रहना भी जरूरी है सफल होने के लिए। बिहारी होने पर गर्व का अनुभव करने वाली प्रिया कहती हैं कि वह जहां कहीं भी जाती हैं खुद को बिहार की बेटी के तौर पर ही प्रस्तुत करती हैं अपनी समृद्ध विरासत संस्कार और संस्कृति को विश्व मंच पर ले जाने की तैयारी में जुटी बिहार की बेटी प्रिया मल्लिक से बिहार को ढेर सारी आशाएं हैं।

एशिया का सबसे चर्चित हॉस्पिटल दिल्ली 'एम्स'

गौरीशंकर सिंह

एशिया का सबसे चर्चित हॉस्पिटल दिल्ली 'एम्स' के कॉन्फ्रेंस हॉल में बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता मिशन एवं इंडियन काउंसिल ऑफ एक्यूप्रेशर योगा के तहत बिहार एक्यूप्रेशर योगा कॉलेज के एक्यूप्रेशर महागुरु डॉक्टर सर्वदेव प्रसाद गुप्त यू-ट्यूब ,सोशल मीडिया के समय में भी काफी लोकप्रिय हैं। इनके द्वारा कई वीडियो, सीडी का निर्माण किया गया है जिसे काफी पसंद किया जाता है। सैकड़ों वीडियो भी यू-ट्यूब पर प्रचारित है जिनसे जनमानस को अपने रोग निवारण में सुविधा होती है । डॉ गुप्त द्वारा यू-ट्यूब पर रोगों से संबंधित तथा व्यावहारिकता का ज्ञान समय- समय पर दिया जाता है।उन वीडियो को देश- विदेश में कितना पसंद किया जाता है इसका पता इसी से लगाया जा सकता है कि एक वीडियो को (पचास लाख) लोगों द्वारा देखा जा चुका है तथा कई वीडियो को लाखों बार देखा जा चुका है। एम्स में आयोजित एक सम्मेलन में आयुष मंत्रालय के बिहार से प्रतिनिधि डॉ अजय प्रकाश ने बताया कि इंसान के शरीर में कुल 14 चैनल होते हैं,जिन्हें पॉइंट्स भी बोला जाता है। इन पॉइंट्स पर सुई चुभोना, रंग लगाना ,चुम्बक लगाना इत्यादि एक्यूप्रेशर संसाधन से ट्रीट किया जाए तो मधुमेह और उससे जुड़ी तमाम बीमारियों को रोका जा सकता है। इसे राष्ट्रीय स्तर पर मरीजों को उपलब्ध कराने के लिए ही एम्स के साथ रिसर्च पर काम शुरू हुआ है। डायबिटीज के मरीजों के लिए अच्छी खबर है बिहार एक्युप्रेशर योग कॉलेज ने दावा किया है कि एक्युप्रेशर पद्धति से मधुमेह को न सिर्फ नियंत्रित किया जा सकता है बल्कि इसका इलाज भी किया जा सकता है इससे मरीज के शरीर में इंसुलिन का स्राव शुरू हो जाता है जिसे देखते हुए एम्स के बायो मेडिकल इंजीनियरिंग विभाग ने भी अपना शोध शुरू कर दिया है । जिसके बाद एम्स में भी मधुमेह के मरीज को एक्युप्रेशर इलाज शुरू किया जाएगा। वहीं बताया जा रहा है कि आने वाले दिनों में आयुर्वेद ,होमियोपैथ ,यूनानी और सिद्धा के बाद एक्यूप्रेशर को भी आयुष मंत्रालय में शामिल किया जाएगा।उनका कहना है कि सम्मेलन का एक उद्देश्य सभी एक्युप्रेशर चिकित्सकों को एक साथ मंच पर लाना भी था। उन्होंने बताया कि जल्द ही केंद्र सरकार के समक्ष एक्यूप्रेशर को लेकर अलग से गाइड लाइन भी दी जाएगी। ताकि मरीजों को बेहतर चिकित्सा उपलब्ध हो सके ।इस अवसर पर एम्स के डॉ एसके गुहा और डॉ हरपाल सिंह भी मौजूद थे । डॉक्टर्स सर्वदेव प्रसाद गुप्त बिहार विधान परिषद पटना से अवर सचिव के पद से 2002मे अवकाश प्राप्त किए । होम्योपैथिक डिग्री हासिल कर बिहार सरकार में मेडिकल ऑफिसर के पद पर निष्ठापूर्वक कार्य किए।उसी क्रम में आधुनिक चिकित्सा पद्धति के मशहूर चिकित्सक एवं बिहार राज्य होम्योपैथिक चिकित्सा बोर्ड के तत्कालीन माननीय सदस्य तथा अपने पूज्य पिता एक्यूप्रेशर महागुरु स्वर्गीय डॉ चंद्रमा प्रसाद गुप्त के सानिध्य में वर्ष 1974ई में एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति की ओर आकर्षित हुए। भारतवर्ष में जिन गिने-चुने व्यक्तियों को एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति के अगाध व्यवहारिक ज्ञान तथा वृहद रूप में प्रचार-प्रसार का श्रेय प्राप्त है उनमें डॉ सर्वदेव प्रसाद गुप्त का नाम उल्लेखनीय है। एक्यूप्रेशर महागुरु द्वारा वर्ष1972 ई में स्थापित इंडियन काउंसिल ऑफ एक्युप्रेशर योग एवं स्वास्थ्य जागरूकता मिशन,बिहार एक्युप्रेशर योग कॉलेज,पटना का भार उनके जीवन के अंतिम क्षण 12जुलाई1986 के पश्चात सौंपा गया जिसका निर्वहन कर्मठता पूर्वक कर रहे हैं। ये संस्थाएं सम्पूर्ण भारत में एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति की शिक्षा, चिकित्सा का प्रचार- प्रसार कर रही है। डॉक्टर सर्वदेव प्रसाद गुप्त ने हजारों ऐसे बीमार व्यक्तियों की चिकित्सा की है जो अपने जीवन से निराश हो चुके थे।इनकी रूचि एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति की शिक्षा देना तथा असाध्य रोगों की चिकित्सा करना विशेष है। देश के अनेक नगरों में निःशुल्क एक्युप्रेशर चिकित्सा शिविर लगाना व लगवाना तथा रोगियों की मदद करना इनका हृदय से बेहद पसंद है।यही कारण है कि इनके यहां प्रत्येक श्रेणी के व्यक्ति यथा, मा० राजनीतिज्ञ, मा० न्यायिक अधिकारी ,उच्चाधिकारी ,कर्मचारी ,चिकित्सक, व्यापारी तथा साधारण आम जनता लाभान्वित होते हैं। वर्ष 1992ई० से प्रत्येक 26 मई को एक्यूप्रेशर महागुरु द्वारा स्थापित संस्थाओं के बैनर तले राष्ट्रीय एक्यूप्रेशर कांग्रेस का आयोजन होता है जिसमें डॉक्टर गुप्त की अहम भूमिका रहती है। ये सारी खबरें एवं इनके 400 से अधिक आलेख विभिन्न समाचार पत्रों/ पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं, जिससे इस पद्धति की जानकारी करोड़ों लोगों तक पहुंची है । इन्हें बिहार के कई महामहिम राज्यपाल महोदय का आशीर्वाद प्राप्त है। साथ ही 1994 ई में हरियाणा के तत्कालीन महामहिम राज्यपाल श्री धनिक लाल मंडल द्वारा एक्युप्रेशर शिरोमणि अवार्ड से सम्मानित हैं।इसके अतिरिक्त डॉक्टर गुप्त अन्य कई संस्थाओं से अवैतनिक रूप से जुड़े हैं जिसमें प्रमुख है- भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी -पटना, बिहार राज्य बाल कल्याण परिषद, राजभवन-पटना,प्रबंध समिति, मातृ एवं शिशु कल्याण समिति, राजभवन- पटना, वृद्धा कल्याण केंद्र, राजेंद्रनगर, पटना, प्रबंध संपादक, एक्युप्रेशर योग दर्शन (त्रैमासिक मासिक स्वास्थ्य पत्रिका) तथा एक्यूप्रेशर पुस्तकों के लेखक आदि।

डॉ नवल किशोर हुए सम्मानित

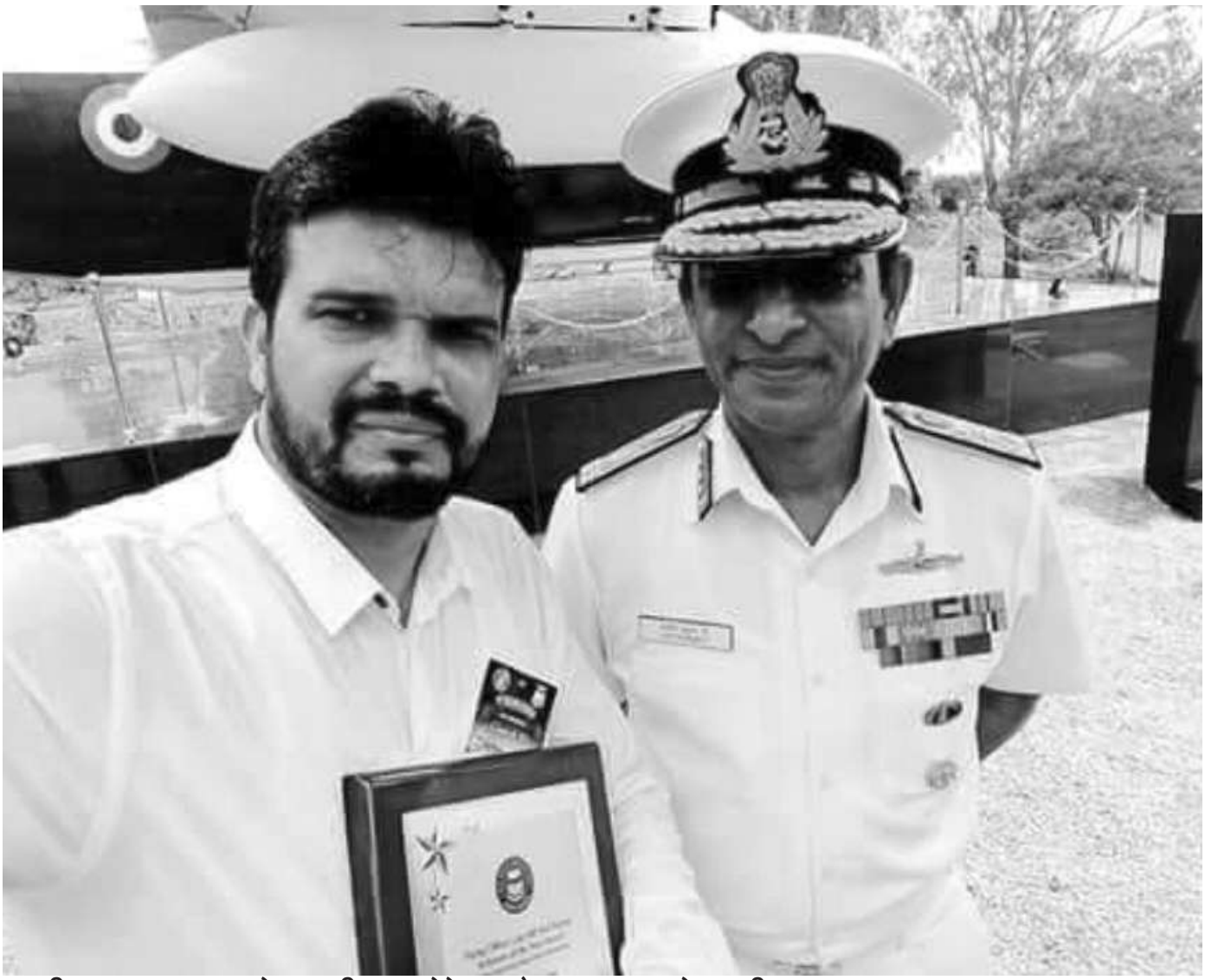

राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ नवल किशोर को केरल के प्रसिद्ध अल्मा मेटर सैनिक स्कूल, कज्जकोटयम में सम्मानित किया गया, सारण जिले के छपरा सदर प्रखंड स्थित बदलू टोला पंचायत के पूर्व मुखिया, स्व0 शिव नाथ राय के पुत्र डॉ नवल किशोर सम्प्रति दिली विश्वविद्यालय अंतर्गत राजधानी कॉलेज में राजनीति विज्ञान के एसोसिएट प्रोफेसर हैं तथा राजद के राष्ट्रीय प्रवक्ता भी है डॉ नवल ने अपनी स्कूली शिक्षा केरल के इसी राष्ट्रीय स्तर के सैनिक स्कूल से प्राप्त की थी वे 1990 तक वहा के विद्यार्थी रहे और बाद में वे उच्च शिक्षा के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय में आ गए।

जहाँ वे पोस्ट ग्रेजुएशन मे साउथ कैम्प्स के टॉपर रहे उन्होंने डॉक्टरेट की उपाधि जय प्रकाश विश्वविद्यालय से प्राप्त की तथा देश में उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने एवं सामाजिक राजनीतिक जीवन में अपनी राष्ट्रीय स्तर पर स्थान बनाने के एवज में कज्जकोटयम सैनिक स्कूल ने अपनी पूर्वती छात्र डॉ नवल किशोर को (अनिल कुमार स्मृति एवार्ड) 2017 - 18 से सम्मानित किया गया उन्हें यह सम्मान भारतिय नवसेना के उप प्रमुख एडमरीनल पी अजित कुमार ने प्रदान किया इस अवसर पर स्कूल प्रबंधन सहित रक्षा सेनाओं के कई अधिकारी तथा देश के कई प्रख्यात शिक्षाविद उपस्थित थे डॉ नवल किशोर सारण के पहले ऐसे प्रतिभाशाली युवा है जिन्हें यह सम्मान प्राप्त हुआ है।

उनके इस सम्मान पर राजद के वरिष्ठ राष्ट्रीय प्रवक्ता व राज्यसभा सदस्य प्रोफेसर मनोज झा, बिहार सरकार के पूर्व मंत्री शिवचंद्र राम, युवा राजद के प्रदेश अध्यक्ष मो. कारी सोहेब, युवा राजद के प्रदेश महासचिव सिंटु झा, बिहार विधान परिषद के सदस्य डॉ वीरेंद्र नारायण यादव, प्रदेश प्रवक्ता डॉ उर्मिला ठाकुर, बिहार विधानसभा के सदस्य उपेंद्र पासवान सहित बिहार राज्य के अनेक बुद्धिजीवीयो एवं प्रमुख व्यक्तियो ने प्रसन्ता व्यक्त किया है एवं डॉ नवल किशोर यादव जी को बधाई दिया है।

अर्थव्यवस्था का आधार बनता मशीनीकरण

विकास का सूचक और अर्थव्यवस्था का आधार बढ़ता मशीनीकरण आज आधुनिक जीवन के हर क्षेत्र को संचालित कर रहा है। आधुनिक जीवन मशीनों पर इस कदर निर्भर है कि इसके बिना कई काम रूक जाते हैं। इंटरनेट और मोबाइले दूरी व समय की सीमाओं को लांघ कर सारी दुनिया को अपने में समेटने का दावा करते हैं। इस यंत्र युग में सारी दुनिया में हिंसा, शोषण, विषमता और बेरोजगारी भी बढ़ रही है। स्वास्थ्य समस्याएँ और पर्यावरण विनाश भी अपने चरम पर हैं। दौड़ती-भागती जिंदगी में समय का अभाव प्रायः आम शिकायत रहती है। रिश्तों में दुरियां बढ़ रही हैं। लोग स्वयं को बेहद अकेला महसूस करने लगे हैं। बढ़ती मशीनों ने मनुष्य की शारीरिक श्रम की आदत को कम करके स्वास्थ्य समस्याओं का आधार तैयार किया है। दूरदर्शी गांधीजी ने चेताया था - अगर मशीनीकरण की यह सनक जारी रही तो काफी संभावना है कि एक समय ऐसा आएगा जब हम इतने असमर्थ और लाचार हो जाएंगे कि अपने को ही कोसने लगेंगे कि हम भगवान द्वारा दी गई शरीर रूपी मशीन का इस्तेमाल करना क्यों भूल गए। बढ़ता मशीनीकरण उपभोक्तावाद को बढ़ावा देकर समाज में विषमता की नींव को पुख्ता करता आया है। एक औद्योगीकृत अर्थव्यवस्था में अंधाधुंध बढ़ता मशीनीकरण वस्तुतः स्थानीय जरूरतों व सीमाओं को लांघ कर व्यापक स्तर पर वस्तुओं के उत्पादन, बिक्री या खपत को बढ़ाने की महत्त्वाकांक्षाओं से प्रेरित होता है। औद्योगिक कचरे को बढ़ाता है। ग्लोबल वार्मिंग को जन्म देता है। पर्यावरण प्रदूषण की ऐसी आग को जन्म देता है जिसे बुझाने वाला सचमुच कोई नहीं है।

इलेक्ट्रानिक उपकरणों के अनुपयोगी हो जाने से इक्ा हो रहे कचरे का निपटान सही ढंग से नहीं हो पाने के कारण पर्यावरण के खतरे बढ़ रहे है। एक अध्ययन के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष डेढ़ लाख टन ई-वेस्ट या इलेक्ट्रानिक कचरा बढ़ रहा है। इसमें देश में बाहर से आने वाले कबाड़ को जोड़ दिया जाए तो न केवल कबाड़ की मात्र दुगुनी हो जाएगी वरन् पर्यावरण के खतरों और संभावित दुष्परिणामों का सही अनुमान नहीं लगाया जा सकेगा। प्रतिवर्ष भारत में बीस लाख कम्प्यूटर अनुपयोगी हो जाते हैं। इनके अलावा हजारों की तादाद में प्रिंटर, फोन, मोबाइल, मानीटर, टीवी, रेडियो, ओवन, रेफ्रिजरेटर, टोस्टर, वेक्यूम क्लीनर, वाशिंग मशीन, एयर कंडीशनर, पंखे, कूलर, सीडी व डीवीडी प्येयर, वीडियो गेम, सीडी, कैसेट, खिलौने, फ्लोरेसेंट ट्यूब,बल्ब, ड्रिलिंग मशीन, मेडिकल इंस्ट्रूमेंट, थमार्मीटर और मशीनें आदि भी बेकार हो जाती हैं। जब उनका उपयोग नहीं हो सकता तो ऐसा औद्योगिक कचरा खाली भूमि पर इका होता रहता है। इसका अधिकांश हिस्सा जहरीला और प्राणीमात्र के स्वास्थ्य के लिए खतरनाक होता है। कुछ दिनों पहले इस तरह के कचरे में खतरनाक हथियार व विस्फोटक सामगी भी पाई गई थी।

इनमें धातुओं व रासायनिक सामग्री की भी काफी मात्रा होती है जो संपर्क में आने वाले लोगों की सेहत के लिए खतरनाक होती है। लेड, केडमियम, मरक्यूरी,एस्बेस्टस, क्रोमियम, बेरियम, बेटीलियम, बैटरी आदि यकृत, फेफड़े, दिल व त्वचा की अनेक बीमारियों का कारण बनते हैं। अनुमान है कि यह कचरा एक करोड़ से अधिक लोगों को बीमार करता है। इनमें से ज्यादातर गरीब, महिलाएँ व बच्चे होते हैं। इस दिशा में गंभीरता से कार्रवाई होना जरूरी है मगर देश के लोगों की मानसिकता अभी कबाड़ संभालने व कचरे से आजीविका कमाने की बनी हुई है।

ऊर्जा उत्पादन हेतु ताप विद्युत संयंत्र, बड़े बाँध, प्रत्यक्ष, परोक्ष बहुत अधिक मात्र में औद्योगिक कचरा फैला रहे हैं। सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा, ऊर्जा के बेहतरीन विकल्प माने गए हैं। राजस्थान में इन दोनों विकल्पों के अच्छे मानक स्थापित हुए हैं। सोलर लैम्प, सोलर कुकर जैसे कुछ उपकरण प्रायः लोकप्रिय रहे हैं। एशियन डेवलपमेंट बैंक के साथ मिलकर टाटा पावर कंपनी लिमिटेड देश में (विशेषकर महाराष्ट्र में) कई करोड़ों रुपए के बड़े पवन ऊर्जा प्लांट लगाने की योजना बना रही है। इसी तरह से दिल्ली सरकार भी ऐसी कुछ निजी कंपनियों की ओर ताक रही है जो राजस्थान में पैदा होती पवन ऊर्जा दिल्ली पहुंचा सकें। परमाणु ऊर्जा के निम्रण से पैदा होते परमाणु कचरे में प्लूटोनियम जैसे ऐसे रेडियोएक्टिव तत्वों का यह प्रदूषण पर्यावरण में भी फैल सकता है और भूमिगत जल में भी।

एशियन डेवलपमेंट बैक ने हाल ही गंगा के प्रदूषण रोकने के लिए एक योजना तैयार की है। गंगा के किनारे के नगरों के पानी, सीवरेज, सालिड वेस्ट मेनेजमेंट, सड़क, ट्रेफिक व नदियों के प्रदूषण को दूर किया जायेगा।संयुक्त राष्ट्र ने एक रिपोर्ट में कहा है कि व्यापक औद्योगिक कचरे, भूमि का जरूरत से ज्यादा दोहन और सिंचाई के गलत तरीकों से जलवायु परिवर्तन हो रहा है। मरूस्थलों के बढ़ते क्षेत्रफल के कारण लाखों लोग अपना घर छोड़ को मजबूर हो सकते हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि भूमि का मरूस्थल में बदलना पर्यावरण के लिए बड़ा खतरा है और विश्व की एक तिहाई जनसंख्या इसका शिकार बन सकती है। रिपोर्ट के अनुसार औद्योगिक संतुलन, कृषि के कुछ सरल तरीके अपनाने आदि से वातावरण में कार्बन की मात्रा कम हो सकती है। इसमें सूखे क्षेत्रों में पेड़ उगाने जैसे कदम शामिल हैं।

औद्योगिक अपशिष्ट से दिल्ली की जीवन धारा यमुना इस कदर मैली हो चुकी है कि राज्य सरकार 19931से ही 'यमुना एक्शन प्लानइ जैसी कई योजनाओ द्वारा सफाई अभियान चला रही है जिस पर करोड़ों-अरबों रूपए लगाए जा चुके हैं। किसी भी नदी को जिंदा रखने के लिए 'इको सिस्टमइ की सुरक्षा उतनी ही जरूरी है जितनी उसमें बहते पानी की गुणवत्ता। पर्यटन जनित डिस्पोजेबल प्लास्टिक कचरे से बढ़ता प्रदूषण खतरनाक स्तर तक पहुँच रहा है जिस पर त्वरित नियंत्रण जरूरी है। सरकार ने रिसायकल्ड पालिथिन के उपयोग पर पाबंदी लगा रखी है। केवल नए प्लास्टिक दानों से बनी बीस माइक्रोन से अधिक की थैलियों का ही उपयोग किया जा सकता है। 25 माइक्रोन से कम की रिसायकल्ड प्लास्टिक की थैलियां और 220 माइक्रोन से कम की नई प्लास्टिक की थैलियों के उपयोग पर प्रतिबंध रहेगा। किसी भी नदी-नाले, पाइप लाइन और पार्क आदि सार्वजनिक स्थलों पर इन थैलियों का कचरा डालने पर रोक रहेगी। नगरीय निकाय इन थैलियों के लिए अलग-अलग कचरा पेटी रखेंगे। पालिथिन के कारण सीवर लाइन बंद हो जाती है। इस वजह से दूषित पानी बहकर पाइप लाइन तक पहुंचकर पेयजल को दूषित करता है जिससे बीमारियां फैलती हैं। इसे उपजाऊ जमीन में फेंकने से भूमि बंजर होती जाती है। कचरे के साथ जलाने से जहरीली गैसें निकलती हे जो वायु प्रदूषण फैलाती हैं और ओजोन परत को क्षति पहुंचाती हैं। गाय बैल आदि जानवर पालिथिन में चिपके खाद्य पदार्थ खाने के प्रलोभन में पतली पालिथिन की पन्नियां भी गुटक जाते हैं जो उनके पेट में फँस कर रह जाती हैं एवं उनकी मृत्यु हो जाती है। अतः पालिथिन पर प्रभावी नियंत्रण जरूरी है। कहा जा सकता है कि औद्योगिक कचरा प्रगति का दूसरा पहलू है जिससे बचना मुश्किल है पर उसके समुचित तरीके से डिस्पोजल से ही हम मानव जीवन और प्रगति के बीच तादात्म्य बना कर विज्ञान के वरदान को अभिशाप बनने से रोक सकते हैं।

अंकों के जाल में फंसी शिक्षा व्यवस्था

हर कृत्य की एक सीमा होती है। सीमा तक तो वह सुखदायी लगता है किन्तु जब सीमा को छू लेता है या उसे तोड़ कर आगे निकलने लगता है तो कभी वह संशय की ओर ले जाता है और कभी वह दुखदायी भी लगने लगता है। इस सन्दर्भ में हम किसी बालक की बुद्धिमत्ता या क्षमता पर संदेह नहीं कर रहे हैं। हम तो केवल इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ रहे हैं कि क्या आज बच्चों और माँ बाप के सामने केवल अंकों का प्रतिशत ही शिक्षा का एक मात्र लक्ष्य या उद्देश्य रह गया है ? अगर यह वास्तविकता है तो इसे उचित कहा जा सकता है क्या ? शायद नहीं। कुछ तकनीकी और उच्च शिक्षा संस्थानों में दाखिले मात्र की होड़ ने जैसा स्वरूप ले लिया है, वह अकल्पनीय कहा जा सकता है। इस होड़ की भागमभाग में हर वर्ष नये प्रतिमान बन रहे हैं। विगत वर्षों से चली आ रही रिकार्डतोड़ परम्परा को जीवंत रखते हुए इस वर्ष भी केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद (सीबीएसई) की बारहवीं की परीक्षा में सर्वोच्च स्थान पाने वाली नोयडा की छात्र मेघना श्रीवास्तव ने 500 में से 499 अंक पाने में सफलता पाकर पिछले सारे रिकार्ड ध्वस्त कर दिए हैं। इससे पूर्व यह सम्मान 498 अंक पाकर रक्षा गोपाल नामक छात्र को प्राप्त हुआ था।

इस सम्बन्ध में हम पुनः कहना चाहेंगे कि हमें उपरोक्त अंक पाने वाले परीक्षार्थियों की विश्वसनीयता पर कोई शंका नहीं है किन्तु इस समय विद्यमान परीक्षा प्रणाली में गणित या उससे सम्बन्धित कुछ उपविषयों को छोड़कर किसी भी विषय में पूर्णता तक पहुंचना क्या अपने आप में आश्चर्यजनक नहीं लगता। प्रश्न तो यह भी उठाया जा सकता है कि क्या इतने अधिक अंकों का मिलना इस बात का परिचायक है कि सीबीएसई की शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता में कुछ सुधार हुआ है या सीबीएसई की परीक्षा प्रणाली जो राज्य शिक्षा परिषदों के सापेक्ष उदार मानी जाती थी अब कुछ और अधिक उदार हो गयी है अथवा सीबीएसई के शिक्षकों ने अपने छात्रों के लिए परीक्षा में उत्तर लिखने का कोई सटीक कौशल ढूंढ लिया है ?। हमारे सामने एक यक्ष प्रश्न यह भी खड़ा हो गया है कि क्या विभिन्न राज्यों की माध्यमिक शिक्षा परिषदें ऐसा कोई अन्य कोर्स क्यों नहीं ढूँढ़ पा रही हैं जो परीक्षार्थी को अंक सम्पूर्णता के इतना निकट खड़ा कर दे। विश्व के अधिकतर विकसित देशों में माध्यमिक शिक्षा पूरे देश में एक समान है और सरकारी स्तर पर उपलब्ध कराई जाती है। केवल उच्च शिक्षा ही निजी हाथों में है जबकि भारत में सरकारी शिक्षा के समानांतर निजी संस्थानों का एक बाजार खड़ा कर दिया गया है। आज सीबीएसई से मान्यताप्राप्त अनेक कुकुरमुत्ते निजी शिक्षण संस्थान छोटे-छोटे कस्बों यहाँ तक कि बड़े गाँवों में भी गली गली पाए जाने लगे हैं। हम यह नहीं कहते कि इनमें शिक्षा का स्तर सरकारी स्कूलों के स्तर से कम है। सच्चाई तो यह है कि इनमें पढ़ने वाले बच्चों का बौद्धिक स्तर सरकारी स्कूल के बच्चों से कहीं अच्छा है किन्तु यह भी एक सच्चाई है एसी कमरों में बैठे नौकरशाहों ने सरकारी स्कूलों को शिक्षा की प्रयोगशाला बनाकर और बच्चों को शिक्षक से भयविहीन करके पुरानी परिपाटी पर चल रही परीक्षित प्रणाली को नेस्तनाबूद करके रख दिया है। विदेशों में वहां की परिस्थितियों के अनुकूल व्यवस्थाओं को बिना यह सोचे कि भारत के परिप्रेक्ष्य में वे व्यवस्थाएं अनुकूल नहीं है, जबरन लागू कर दिया गया। शिक्षकों को उन व्यवस्थाओं की सरसरी जानकारी दी गयी या हल्का फुल्का प्रशिक्षण देकर कर्तव्यों की इतिश्री कर ली गयी। परिणाम सामने हैं। सरकारी स्कूल और शिक्षा का क्या हाल है, आज पूरा देश जानता है। सरकारी स्कूलों में छात्रों का अभाव है। हर तरह की सुविधा देकर भी सरकार बच्चों को सरकारी स्कूलों में नहीं ला पा रही है। इसके विपरीत निजी माध्यमिक शिक्षण संस्थानों में फीस के अनुसार पंखे से लेकर एसी के साथ पढ़ने की सुविधाओं का प्रचलन बढ़ता जा रहा है जिससे अच्छे संस्थानों में अपने बच्चों को पढ़ाने की अनिवार्यता के चलते मध्यमवर्गीय समाज पिसता चला जा रहा है। गरीब वर्ग मजबूरी में अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में पढ़ाने को विवश है तो उच्चवर्ग अपने बच्चों के लिए और अधिक सुविधाओं और व्यवस्थाओं के स्कूल ढूँढ़ रहा है। क्या इसे इस देश की विडम्बना नहीं कहा जाएगा कि हमारी सरकारें खुद इस दोहरी शिक्षा प्रणाली को प्रश्रय देकर देश में समानांतर चल रही उच्च और निम्नवर्ग की खाई को और चौड़ा करती चली जा रही हैं। यह कहां का न्याय है कि आप एक बच्चे को छः लेन वाली सड़क पर कार दौड़ाने की सुविधा दे रहे हैं तो दूसरी ओर निम्नवर्ग के बच्चे को गड्ढों, धूल और कीचड़ से घुटनों घुटनों भरी पगडंडी पर दौड़ कर बराबरी करने की अपेक्षा कर रहे हैं। इस असंयमित शिक्षा नीति का दुष्परिणाम यह है कि हमारे शिक्षा क्षेत्र में स्तर (पैसे) के हिसाब से अनेक श्रेणियां बन गयी हैं और शिक्षा भी खुले बाजार में बिक रही है। शिक्षा बाजार कैसे बनी, देखिये अपने आपको देश का नियंता समझने वाले नौकरशाहों की एक चालाकी भरी चाल से।

वास्तविकता यह है कि इस सरकारी शिक्षा के ध्वस्तीकरण के कुचक्र की शुरूआत सत्तर के दशक से ही कर दी गयी थी। शिक्षा क्षेत्र का मैदान खुला देख कर अनेक प्रभावशाली और औद्योगिक घरानों ने विभिन्न कारणों के चलते अपने सर्वसुविधासम्पन्न शिक्षण संस्थानों को उपलब्ध कराकर शिक्षा का बड़े स्तर पर व्यवसायीकरण प्रारम्भ कर दिया गया था। इस कुचक्र के दूसरे पहिये नौकरशाही वर्ग द्वारा बड़े सुनियोजित तरीके से शिक्षा में सुधार के नाम पर अंग्रेजों के जमाने से स्थापित एक सुदृढ़ शिक्षा प्रणाली को छेड़ना प्रारम्भ कर दिया गया। शिक्षा प्रणाली सुधारने के नाम पर विदेशों के दौरे किये गये। भारतीय परिपेक्ष्य में अव्यवहारिक प्रणालियों के जबरदस्ती प्रयोग किये गये और एक सुगठित और सुव्यवस्थित शिक्षा प्रणाली को नेस्तनाबूद करके रख दिया गया। कैसी विडम्बना है कि अस्सी के दशक तक देश को नब्बे प्रतिशत तक सरकारी और गैर सरकारी अधिकारी और टैक्नोक्रेट देने वाले सरकारी स्कूल तबाही के कगार पर खड़े हैं। सरकारी शिक्षकों से अन्य सरकारी काम लेकर उन्हें शिक्षण से दूर रखा जा रहा है और अच्छे परिणामों की अपेक्षा की जा रही है। क्या अब समय नहीं आ गया है कि शिक्षा को केन्द्रीय कानूनों के अंतर्गत लाकर एक समान शिक्षा नीति और समान पाठ्यक्रम बना कर पूरे देश में समान मुफ्त शिक्षा व्यवस्था लागू की जाय। लग्जरी शिक्षण संस्थानों की नकेल कसी जाय। शिक्षा में सुविधाओं के मानक निर्धारित किये जाएँ और योग्यता के अधिकार को अधिमान देते हुए पूरे देश के लिए शिक्षण संस्थानों में प्रवेश के लिए अखिल भारतीय स्तर पर परीक्षाएं आयोजित कर योग्य बच्चों को सरकारी खर्च पर अच्छे शिक्षण संस्थानों में पढ़ने के अवसर दिए जाएं।

धीरे-धीरे शिक्षण संस्थाओं को समान सुविधायुक्त बनाया जाय और हर बच्चे को समान वातावरण में पढ□ का अधिकार बिना भेदभाव के दिया जाना सुनिश्चित किया जाय। तभी सही मायनों में भारतीय संविधान की आत्मा के आदेशों का परिपालन होगा। सरकार को यह सोचना चाहिए कि जब अन्य मौलिक अधिकारों के बारे में सरकार को किसी छेड़छाड़ की शक्ति नहीं है तो इसी विषय में जिससे देश का भविष्य जुडा है से छेड़छाड़ क्यों ?। क्या देश को अच्छे नागरिक देना केंद्र सरकार का कर्तव्य नहीं है ? इसे देश के वर्तमान नियंताओं को सोचना पड़ेगा अगर वे देशहित में सोचते हैं तो।

विपक्षी समझ चुका है बीजेपी अजेय नहीं?

कैराना से लेकर कर्नाटक तक व महाराष्ट्र से लेकर बिहार तक उपचुनावों में भाजपा को शिकस्त देने के बाद विपक्षी पार्टियों को समझ आ गया है कि बीजेपी अजेय नहीं है। एकजुट होकर ही उसे परास्त किया जा सकता है। इसी के साथ 2019 में महाबली मोदी के सामने महाचुनौती पेश करने की सुगबुगाहट शुरू हो गई हैं हालांकि यह इतना आसान भी नहीं है।

विपक्षी एकता की इस राह में ढेर सारे किंतु-परंतु हैं। सबसे बड़ा सवाल है कि इस विपक्षी एकता का नेतृत्व कौन करेगा? क्या क्षेत्रीय क्षत्रप किसी एक का नेतृत्व स्वीकार कर अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की बलि देने को तैयार हो जाएंगे?

ऐसा इसलिए क्योंकि तृणमूल कांग्रेस नेत्री और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, बीजेडी नेता और उड़ीसा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी नेता शरद पवार, आम आदमी पार्टी नेता और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, टीडीपी नेता और आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू जैसे कुछेक दल बीजेपी विरोधी संघीय मोर्चा बनाने के लिए सियासी जद्दोजहद तो कर रहे हैं लेकिन ये लोग अपने तल्ख व्यक्तिगत अनुभव और व्यापक जनाधार के चलते बेहद सिकुड़ चुकी कांग्रेस के समक्ष घुटने टेकने को तैयार नहीं हैं।

वैसे जब जब राजनैतिक अवसरवाद की वजह से विपक्षी एकता का अमली जामा पहनाया जाता है तो कतिपय सवाल उठना लाजिमी है क्योंकि जनहित के मद्देनजर विपक्षी एकता के जो मायने होने चाहिए, वो यहां बिलकुल कम या फिर नहीं के बराबर दिखाई देते हैं। किसी भी लोकतांत्रिक राजनीति में विपक्षी एकता का मतलब होता है जनहित के कतिपय अहम मुद्दों पर गोलबंद होकर मदमस्त सत्ता से टकराना और जनहित की बात किसी भी कीमत पर मनवाना लेकिन भारतीय राजनीति में विपक्षी दलों की एकता के अपने खास निहितार्थ हैं जो कि हमेशा ही सवालों के घेरे में रहे हैं क्योंकि इनके लिए विरोधी दलों की एकता येन केन प्रकारेण सत्ता हासिल करने की जद्दोजहद से ज्यादा कुछ विशेष मायने नहीं रखती और यही वजह है कि सत्ता उनके करीब आकर भी प्रायः दूर चली जाती है यानी कि वह कभी भी ज्यादा दिनों तक सत्ता में नहीं टिक पाते हैं। इसलिए कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने पीएम नरेंद्र मोदी विरोधी जिस विपक्षी एकता का खुलकर इजहार किया है, वह कर्णप्रिय तो है लेकिन इसका अनुभव बहुत अधिक डरावना रहा है भारतीय मतदाताओं के लिए, कुछेक अपवादों को छोड़कर।

उदाहरण के लिए विपक्षी एकता की मिसाल समझी जाने वाली 1967 की संविद सरकार, 1977 की जनता पार्टी सरकार, 1989 की जनता दल सरकार और 1996 की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के बनने-बिगड□ की जो वजहें हैं, उससे जाहिर है कि राष्ट्रीय अथवा सूबाई राजनीति में इसकी प्रासंगिकता कम और अप्रासंगिकता ज्यादा महसूस की गई है। यहां पर स्पष्ट कर देना जरूरी है उपरोक्त तमाम विपक्षी एकता की मिसाल उसी कांग्रेस के खिलाफ बनी थी जो कि आज अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए खुद ही विपक्षी एकता की सबसे बड़ी पैरोकार और खेवनहार बनकर उभर रही है। यह बात दीगर है कि कांग्रेस के खिलाफ बनी विपक्षी एकता में कभी समाजवादी मूल की क्षेत्रीय पार्टियां और बीजेपी गोलबंद हुआ करती थी तो आज बीजेपी के खिलाफ बन रही विपक्षी एकता में भी समाजवादी मूल की क्षेत्रीय पार्टियों के साथ कांग्रेस गोलबंद हो रही है। दरअसल, विगत चार वर्षों में बीजेपी ने जिस तरह से थोक भाव में विपक्षी दलों और उनके गठबंधन को सूबाई सत्ता से निपटाया, उससे अल्पसंख्यकों की राजनीति करने वाली कांग्रेस, पिछड़ा वर्ग की राजनीति करने वाले समाजवादी दलों और दलित वर्ग की राजनीति करने वाले दलितवादी दलों और कतिपय अन्य क्षेत्रीय दलों के एकाधिकारी और वंशवादी नेताओं के माथे पर भी बल पड□ लगे। यही वजह है कि अपने-अपने सियासी अहंकारों को तिलांजलि देकर ऐसे नेता एक दूसरे के बीच आपसी सहयोग बढ़ाने की नीति पर बल देने लगे जिसके सकारात्मक परिणाम यूपी और बिहार में सम्पन्न विभिन्न उपचुनावों में मिले। इससे उनकी तत्परता बढ□ लगी और कर्नाटक विस चुनाव में मिले त्रिशंकु जनादेश से तो उनकी बेताबी और अधिक बढ़ गई।

कर्नाटक में चुनाव बाद बने कांग्रेस-जेडीएस गठबंधन को अवसरवादी कहना गलत नहीं होगा। भले ही वहां उनकी सरकार बन गई है लेकिन आगे क्या होगा, उनके तल्ख अतीत के मद्देनजर निश्चयपूर्वक कुछ कहना जल्दबाजी होगी। हां, इतना जरूर हुआ है कि कर्नाटक में भी अपना जनाधार खिसकता देख कांग्रेस को अब सद्बुद्धि आ गई है। यही वजह है कि दूसरी सबसे बड़ी पार्टी होते हुए भी कांग्रेस ने मुख्यमंत्री पद तीसरे स्थान पर रही पार्टी जेडीएस को महज इसलिए सौंप दिया ताकि बीजेपी को सत्ता में आने से रोका जा सके। उसके लिए खुशी की बात यह है कि सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप से ही सही किन्तु वह अपने कर्नाटक मिशन में कामयाब हो चुकी है।

कर्नाटक विजय से उत्साहित कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने दो टूक कहा है कि अब समूचा विपक्ष मिलकर पीएम मोदी से लोहा लेगा। इसका मतलब यह है कि बीजेपी को केंद्र और राज्यों की सत्ता से बेदखल करने के लिए मोदी विरोधी दलों को एकजुट करने की वह पूरी कोशिश करेंगे और जरूरत पड़ी तो इसके लिए आवश्यक त्याग भी करेंगे। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस, बिहार में राजद, उत्तरप्रदेश में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी, उड़ीसा में बीजेडी और तमिलनाडु में डीएमके, जम्मू-कश्मीर में नेशनल कांफ्रेंस और दिल्ली में आम आदमी पार्टी का छोटा भाई बनकर यदि सियासी गुजर-बसर करना कांग्रेस सीख जाती है तो भले ही उसकी राष्ट्रीय धाक खत्म हो जाए, लेकिन वह बीजेपी को सत्ताच्युत करने के अपने मकसद में कामयाब हो सकती है। इसके विपरीत यदि वह ऐसा नहीं करेगी तो बीजेपी के कांग्रेस मुक्त भारत के अभियान को ही बल प्रदान करेगी।

तेज प्रताप यादव पहुंचे देवघर, बाबा के दर्शन कर की पूजा अर्चना

देवघर। बिहार सरकार के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री तेजप्रताप यादव सुबह बाबा बैद्यनाथ मंदिर में जलाभिषेक किया। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू यादव और राबड़ी देवी के बड़े पुत्र तेजप्रताप सड़क माग से मंगलवार की शाम देवघर पहुंचे थे।

शिव का रूप धरकर पहुंचे पूजा करने

तेजप्रताप ने शिव का रूप धरकर जलार्पण किया। बाघ की खाल की तरह का अंगवस्त्र लपेट, गले में प्लास्टिक का सांप, हाथ में त्रिशूल लेकर तेजप्रताप जलाभिषेक के लिए पहुंचे थे। उनके साथ राजद के कई नेता-कार्यकर्ता चल रहे थे।

झारखंड व बिहार सरकार को कोसा

पूजा-अर्चना के बाद तेजप्रताप ने झारखंड-बिहार की सरकार को जमकर कोसा। उन्होंने कहा कि बाबा से कामना की कि कोमा में चली गई सरकार से बिहार की जनता को बचाएं। बाबा पर जल चढ़ दिया है, झारखंड सरकार भी जल्द ही गिर जाएगी। तेजप्रताप ने कहा कि पिता लालू प्रसाद यादव के बेहतर स्वास्थ्य की भी कामना की।

पत्रकारों से बदसलूकी

तेजप्रताप से एक पत्रकार ने पूछा कि इन दिनों आपके घर में फूट की चर्चा है तो तेजप्रताप भड़क गए। उल्टे पत्रकार को कोसते हुए कहा कि तुम्हारा घर फूट जाए। तुम्हारी आंख फूट जाए। हालांकि बाद में घरेलू विवाद को अफवाह बताते हुए इसे भाजपा और आरएसएस का प्रोपेगेंडा करार दिया।

मैं कृष्ण का भक्त

तेजप्रताप ने खुद को भगवान कृष्ण का भक्त बताया। कहा कि बाबा भोलेनाथ में उनकी अटूट श्रद्धा है। पहले भी बाबाधाम आ चुके है। भगवान से क्या मांगा, यह पूछने पर कहा कि बताने से मन्नत पूरी नहीं होती। पत्रकारों नेपूछा कि कैसा महसूस कर रहे हैं तो तेजप्रताप बोले- हर-हर महादेव।

इस मौके पर तेज प्रताप के साथ पूर्व मंत्री सुरेश पासवान, अजय यादव, कटोरिया विधायक स्वीटी हेंब्रम, श्रीकांत यादव, रंजीत यादव, पप्पू खान, बिहारी महतो सहित पार्टी के अन्य कई लोग मौजूद थे।

कांवड़ियों को बेहतर सुविधा देने में झारखंड सरकार विफलः तेज प्रताप

राजकीय श्रावणी मेला के पांचवें दिन बुधवार को बिहार के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री और राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के पुत्र तेज प्रताप यादव ने अपने समर्थकों के साथ बासुकीनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना की। पुरोहित पंडित पप्पू पत्रलेख, पं. दयानंद झा, बबलू पत्रलेख ने उन्हें बासुकीनाथ मंदिर में पूजन कराया। पूजन के बाद तेज प्रताप ने बाबा बासुकीनाथ की सामूहिक आरती की। पूजा-अर्चना के पश्चात पूर्व मंत्री तेज प्रताप अपने समर्थकों के साथ बासुकीनाथ स्थित वन विभाग के विश्रामगृह आए। वहां पत्रकारों से बासुकीनाथ श्रावणी मेला की व्यवस्था पर कहा कि जिस प्रकार की व्यवस्था कि जानी चाहिए थी, उस तरह की व्यवस्था बासुकीनाथ में दिखाई नहीं देती। सरकार की व्यवस्था बेकार है। व्यवस्था के नामपर खानापूर्ति दिखती है। कांवड़ियों के नहाने-धोने और सफाई की पर्याप्त सुविधा नहीं है। तेजप्रताप ने कहा कि कीचड़ में सिर्फ चूना के छिड़काव मात्र से स्वच्छता नहीं आएगी। इससे बीमारियों को आमंत्रण दिया जा रहा है। उन्होंने नाम लिए बगैर झारखंड के रघुवर दास की सरकार को बाहरी बताया। कहा कि छत्तीसगढ़ से आकर सरकार चला रहे हैं। यह सरकार बाहरी है। इस मौके पर राजद के जिलाध्यक्ष अमरेंद्र यादव, गौरव मिश्रा, जितेश दास, मनोज कुमार, सुबोध यादव, दिनेश यादव, छतिश महतो, विनोद राय, राम सुंदर पंडित, प्रमोद पंडित, विकास कुमार, ललित यादव सहित दर्जनों अन्य राजद नेता व कार्यकर्ता मौजूद थे।

विश्व को भारत की अनुपम देन: योग

बेशक भारत में सदियों से योग का प्रचार-प्रसार रहा है लेकिन 'योग क्या हैइ आज यह प्रश्न पूरी दुनिया के लिए बेमानी हो चुका है क्योंकि संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 2015 से हर वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाये जाने की घोषणा के बाद से न केवल भारत बल्कि लगभग पूरी दुनिया जान चुकी है कि 'जीवन जीने की कला है का नाम योग है।

स्वयं की स्वयं के माध्यम से स्वयं तक पहुँचने की यात्र का नाम योग है।इ इसलिए यह कोई आश्चर्य नहीं कि अब तक जो लोग योग को केवल हिन्दुत्व से जोड़ते हुए इससे दूर रहने की बातें करते थे, अब वे भी नजरिया बदलने को मजबूर हो रहे हैं।

कुछ लोग यह भी जानने के उत्सुक हैं कि 21 जून को ही अंतरराष्ट्रीय योग दिवस क्यों? वास्तव में 21 जून को उत्तरी गोलार्द्ध (भूमध्यरेखा से ऊपर वाले भूभाग) पर सबसे बड़ा दिन होता है। इसी दिन सूर्य अपनी स्थिति बदल कर दक्षिणायन होते हैं। कुछ लोगों का यह भी मत है कि आदिगुरु भगवान शिव ने इस दिन योग का ज्ञान सप्तऋषियों को दिया था। अतःयह दिन धरती पर अवतरण दिवस भी है।

योग कोई धार्मिक कर्मकांड नहीं है इसीलिए तो 'योगः कर्मषु कौशलमइ कहा गया है। गीता 'योग क्षेम वहाम्यहंइ का उद्घोष करती है जिसका अर्थ है- अप्राप्त को प्राप्त करना और प्राप्त की रक्षा करना। दुनिया में ऐसा कौन है जो अच्छा स्वास्थ्य, मन की शांति प्राप्त न करना चाहते हो। यह कामना रखना अथवा इसके लिए प्रयास करना किसी एक धर्म के लोगों के लिए आरक्षित नहीं हो सकता। सश्वुण को बांटना और दुर्गुण को नष्ट करना भारतीय संस्कृति की मूल है। पाकिस्तानी नागरिक शमशाद हैदर योग को विज्ञान मानते हुए उसे किसी मजहब से जोड़ने के विरोधी हैं। शमशाद और उनके साथियों के प्रयासों से इस्लामाबाद, लाहौर, कराची सहित पाकिस्तान के अनेक शहरों में योग के प्रति रूचि बहुत तेजी से बढ़ी है क्योंकि इससे उन्हें अस्थमा और सांस के रोगों सहित अनेक कई गंभीर बीमारियों से राहत मिल रही है। खास बात यह है कि वहां इसे रोजगार के नए अवसर के रूप में भी देखा जा रहा है। अमरीकी नागरिक फरीदा हमजा जो स्वयं भी अनेक वर्षों से योग कर रही हैं, कहती हैं, 'नमाज की हर अवस्थो यौगिक मुद्रा है। जो योग से घृणा करते हैं, उन्हें योग के बारे में पता नहीं है। नमाज के समय अपनी बीच वाली उंगली और अंगूठे को मिलाना योग मुद्रा की तरह है। यह अल्लाह की मेहरबानी है कि मैं योग करती हूं।इ

यह प्रसन्नता की बात है कि विदेश ही नहीं, देशभर से योग के प्रति लोगों की रूचि बढ़ रही है। हजारों वर्षों पूर्व हमारे ऋषियों ने मानवता के हित में विश्व को यह योग विद्या दी थी लेकिन इसे जन-जन तक पहुंचाने का प्रयासे करने वाले भी अभिनंदन के पात्र हैं। स्पष्ट है कि आज सारी दुनिया योग के महत्त्व को समझते हुए उसे अपनी दिनचर्या का अंग बना रही है। दुनिया के 175 देशों, जिनमें ईरान, अफगानिस्तान, इराक, बांग्लादेश, यमन, संयुक्त अरब अमीरात, कुवैत, सीरिया सहित 40 मुस्लिम देश भी शामिल है, में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस बनाये जाने ने हमारे ऋषियों मुनियों की इस अनुपम देन को जन-जन तक पहुंचा दिया है। 'योग कला, विज्ञान और दर्शन है, जो जनता को आत्मानुभूति कराने में मदद करता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने पुष्टि की है कि योग से न सिर्फ तनाव कम होता है बल्कि दीर्घकाल तक कई फायदे होते हैं। प्राचीन भारतीय पद्धतियां शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को लेकर लोगों की जरूरतों का संपूर्ण उत्तर हैं।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि जो देश सदियों से योग विद्या का साक्षी रहा है उस देश के अधिकांश युवा आज तथा कथित आधुनिके (विकृत) जीवन शैली और खान पान की खराब आदतों के कारण बहुत कम आयु में ही मधुमेह और ब्लड प्रेशर जैसे रोगों के शिकार हो रहे हैं। उन्हें इंटरनेट, स्मार्ट फोन, सोशल मीडिया ने इतना व्यस्त कर दिया है कि वे अपने कर्तव्यों को तो भूले ही हैं, स्वयं अपने आप तक को भूल रहे हैं। शारीरिक श्रम लगातार कम हो रहा है। ऐसे में उनका मन और बुद्धि सक्रिय होते हुए भी शरीर की निष्क्रियता बोझ बन रही है। यदि हम उन्हें भी योग के लिए प्रेरित कर सके, तभी हमारे लिए अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की सच्ची सार्थकता होगी। योग को अपनी दिनचर्या में शामिल कर ही वे स्वयं को शारीरिक और मानसिक रुप से स्वस्थ रख सके तो पूरी दुनिया को योग का उपहार देने वाले भारत के लिए भी सुखद संकेत होगा। आवश्यक है कि हमारे युवा स्फूर्ति,जोश और उत्साह से भरे हों। तभी वे देश के विकास में अपनी सम्यक भूमिका का निर्वहन कर सकते हैं। केन्द्र एवं सभी राज्य सरकारों को हर तरह की राजनीतिक संकीर्णताओं से ऊपर उठते हुए सभी स्कूलों में प्रतिदिन योगाभ्यास अनिवार्य करना चाहिए।

पूरी दुनिया में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में योग की महत्ता बढ़ रही है तो इसके लिए हर भारतीय को प्रसन्न ही होना चाहिए क्योंकि योग प्रवर्तक ऋषि हर भारतीय के पूर्वजे थे। अपनी उपासना पद्धति बदलने वाले यह न भूलें कि सब कुछ बदला जा सकता है पर अपने पूर्वज नहीं। महर्षि पंतजलि के अनुसार, 'योगश्चित्त वृत्तिनिरोधःइ अर्थात चित्त की वृत्तियों को रोकने का नाम योग है। हम सभी को भी अपने चित्त से योग के विरोध की वृत्ति का त्याग कर स्वस्थ,सुदीर्घ जीवन के लिए प्रयास करने चाहिए।

रिश्वत नहीं देने पर चार आरोपी का नाम हटाकर चार्जशीट न्यायालय में समर्पित

किशनगंज जिले के कोढ़ोबारी थाना में पदस्थापित पुलिस अवर निरीक्षक शिवपूजन कुमार के खिलाफ उनकी पत्नी ने फरवरी 2018 में महिला थाना में दूसरी शादी करने व उनकी व उनके बेटे के हत्या का प्रयास करने की प्राथमिकी दर्ज करायी थी।महिला थाना में दर्ज प्राथमिकी के अनुसंधानकर्ता पर एसआई शिवपूजन कुमार की पत्नी सुधा रानी ने रिश्वत मांगने की शिकायत एसपी से की है।

दिनांक-03.08.18 को सुधा रानी ने एसपी कुमार आशीष को जांचकर्ता के मोबाइल रिकार्ड की सीडी बनाकर दी है।सुधा रानी ने अनुसंधानकर्ता राधा प्रसाद यादव पर आरोप लगाया है कि रिश्वत नहीं देने पर कांड संख्या 5/18 में चार आरोपी का नाम हटा दिया।साथ प्राथमिकी में दर्ज धारा-506,494 एवं 3/4 दहेज निषेध अधिनियम को हटाकर चार्जशीट न्यायालय में समर्पित कर दी।फिलहाल शिवपूजन कुमार अररिया जिले में पदस्थापित है।सनद रहे कि सुधा कुमारी ने अपने पति शिवपूजन कुमार के खिलाफ दूसरी शादी रचाने,पुत्र के साथ सुधा रानी (पहली पत्नी) को जान से मारने की प्रयास करने,आर्थिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित करने का मामला दर्ज करवाया था।शिवपूजन कुमार जिले के कोढ़ोबारी थाना में थानाध्यक्ष थे।

सुधा रानी को प्राथमिकी दर्ज करवाने के लिए भी कड़ी मशक्कत करनी पड़ी थी।महिला थाना से उसे लौटा दिया गया था।कुछ पुलिस वाले सुधा के हाथ से लिखा हुआ आवेदन छीन लिया था,कहा घर में बैठकर निपटारा होगा।सुधा रानी तत्कालीन पुलिस अधीक्षक राजीव मिश्रा के पास भी शिकायत के लिए गई थी।तत्कालीन एसपी के पहल पर प्राथमिकी दर्ज की गयी थी।प्राथमिकी दर्ज होने के बाद भी सुधा रानी को धमकी पर धमकी मिलती रही।सुधा रानी डीजीपी से भी गुहार लगा चुकी है।पीड़िता के भाई आलोक कुमार को फोन कर केस के अनुसंधानकर्ता राधाप्रसाद यादव ने पूछा....हां आलोक जी क्या हाल-समाचार है।अरे आप लोग काहे नहीं ये कागज पत्राचार कर रहे हैं।प्रॉपर जो चैनल है,उसी के अनुसार न काम होगा।जब केस हुआ है,तो उसी के अनुसार ही न काम होगा।बिना वजह के पैसा खर्च करने से क्या फायदा है।आप लोग तो पढ़े लिखे लोग हैं।सर,हमलोगों को उसने दो साल से परेशान करके छोड़ दिया है।ये कागज भेजने से क्या फायदा होगा।आप तो बेकार में न पैसा खर्च कर रहे हैं।इन सारे कागजातों के मेंटेनेंस में दिक्कत हो जाती है।इन लोगों ने बहुत प्रताड़ित किया है।दहेज लिया।हमलोगों को कहीं का नहीं छोड़ा है।आदमी ऐसे में क्या करेगा।अगर कल बच्चे को मार देगा,हम ही को मार देगा,इसकी जम्मेदारी कौन लेगा।अरे सब कुछ चैनल से ही होगा वही पुलिस कप्तान कुमार आशीष, ने कहा की इस मामले की जांच फिर से की जाएगी।पीड़िता सुधा रानी ने जो साक्ष्य दिया है और जो आरोप लगाया है,उसकी जांच डीएसपी को सौंपी गई है।जांच रिपोर्ट आने के बाद कार्रवाई होगी।वही राधाप्रसाद यादव, अनुसंधानकर्ता ने कहा है की जांच के क्रम में जो पाया,उसकी रिपोर्ट वरीय अधिकारियों को सौंप दी है।मुझ पर लगाए गए सभी आरोप बेबुनियाद और निराधार हैं।गौर करे तो जब वरीय अधिकारी के सामने गलती पकराई जाती है तो ऐसे ही कहते है की आरोप निराधार है हमें फसाया जा रहा है किन्तु सही जांच नहीं करते जिस कारन सफाई देनी पड़ती है अब देखना यह दिलचस्प होगा की सुधा रानी को न्याय मिल पता है या नहीं...पर आम नागरिको का कहना है की पुलिस कप्तान कुमार आशीष पीड़ित महिला को न्याय अवश्य दिलाएंगे जिलेवासी को पुलिस कप्तान कुमार आशीष पर पूरा भरोसा है की दूध का दूध और पानी का पानी कर देंगे।

प्रधानमंत्री आवास योजना के लक्ष्य हेतु कवायद तेज

आम सभा को संबोधित करते मुखिया रेणु यादव व अन्य

बांका प्रखंड के दुधारी पंचायत में प्रधानमंत्री आवास योजना के लक्ष्य की प्राप्ती के लिए कवायद तेज हो गई है. पिछले दिनो मुखिया रेणु यादव की अध्यक्षता में पंचायत भवन प्रांगन मे आम सभा काआयोजन किया गया था जिसमे बिभिन्न मुद्दो के साथ आवास योजना पर बिस्तृत चर्चा की गई,इसके तहत प्रधानमंत्री आवास योजना के बैसे लाभार्थी जिनका नाम प्रशासन के द्वारा जारी सर्वेक्षण सूचि में बद्ध नही है.उसके नाम को जोडने हेतु इस आम सभा को संबोधित करते हुए मुखिया रेणु यादव ने पंचायत वासीयो को कहा कि बैसे परिवार जिनके पास खाद्य सुरक्षा कार्ड है,परन्तु उनका नाम प्रधानमंत्री आवास योजना की सूचि में अंकित नही किया जा सका है.वे वे इसआम सभा मे आवेदन करें इसके उपरान्त इसआवेदन को संग्रहित कर प्रखंड कार्यालय भेजा जाएगा.प्रखंड से अधिकारीयो के द्वारा प्रेक्षको को भेज कर आवेदनो की जांच करायी जाएगी,जांचोपरान्त जो आवेदन सही पाये जाएगे,उनकीएक पूरक सूचि तैयार कीजाएगी,और इस सूचि मेंदर्ज नाम बाले परिवार ही इस योजना के लाभ के हकदार होगें.मुखिया रेणु यादव ने

चर्चित बिहार को बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना केतहत ३०० आबेदन प्राप्त हुए है जिसकी जांच चल रही है १६ परिवार इसका लाभ ले चुके है लक्ष्य के बिरूद्ध सर्वेक्षण का कार्य चल रहा है अधिक से अधिक परिवार इसका लाभ ले सके इसकी कवायद तेज हो गई है. आम सभा मे मुखिया रेणु ह ने पंचायत वासीयो को विशेष सजगता की बात कहते हुए कहा कि बिचौलियो से सावधान रहें बिचौलिया सूचि में नाम जोडवा देने के नाम पर लाभुकोंका आर्थिक दोहन करने के फेर में रहते है ,कोई गडवडी होने पर तुरंत इसकी सूचना दे जिससे कार्यबाई हेतु संबंधितअधिकारीयो से अनुशसा की जा सके.

इसआयोजन को सफल बनाने हेतु सामाजिक कार्यकर्ता पंचकिशोर यादव की महत्वपूर्ण भूमिका रही ,इसआम सभा मे हरेन्द्र यादव,मनोज यादव,वकील यादव,रामदेव यादव,रामदुलार यादव,प्रकाश मांझी,रूपेश कुमार,धन्यश्याम साह,बनारसी राउत आदि मूख्य रूप से उपस्थित थे.

ग्रामसभा मं उपस्थित पंचायतवासी

बांका उन्नयन प्रोजेक्ट के लिए इंटरनेशनल अवॉर्ड की घोषणा

कॉमनवेल्थ में बांका जिला करेगा भारत का प्रतिनिधित्व

इंटरनेशनल अवार्ड के लिएबांका को चयनित होने पर जिलाधिकारी का स्वागत करते पदाधिकारी व कर्मचारी गण

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका जिला मे शिक्षा की मशाल को जलाने बाले जिलाधिकारी कुंदन कुमार ने तकनीकि माध्यम से शिक्षा केक्षेत्र मे एक ऐसी क्रॉन्ति ला दी है जिसकी गूंज राज्य ,देश के बाद अव विदेशो में भी गूंजने लगी है.बांका उन्नयन प्रोजेक्ट को राज्यपाल,प्रधानमंत्री से अवार्ड प्राप्त हो चुका है,इसके लिए जिलाधिकारी को माननीय़ प्रधानमंत्री,एवं राज्यपाल के द्वारा सम्मान प्राप्त हुआ है.और अव इस प्रोजेक्ट का इंटरनेशनल अवार्ड के लिए चुना गया है .आगामी 24 अक्टुबर 2018 को गुयाना के राजधानी जॉर्जटाउन में कॉमनवेल्थ एसोशियेसन फॉर पब्लिक एडमिट्रेशन एण्ड मेनेजमेन्ट की ओर से यह पुरस्कार दिया चाएगा.इस पुरस्कार को ग्रहण करने हेतु जिलाधिकारी कुंदन कुमार अपनी टीम के साथ जाऐगें विश्व केचार देशों को इसमें किया गया है शामिल जिसमें बांका भारत देश का प्रतिनिधित्व करेगा.

कैप इंटरनेशनल अवार्ड, सी . ए. पी. ए. एस अवार्ड,(आई.आई.ए) किन्हे मिल सकता है यहअवार्ड

सार्वजनिक क्षेत्र में प्रशासन और सेवाओ में सुधार के लिए महत्वपूर्ण योगदान एवं सार्वजनिक सेवा नवाचार की भावनाओं से काम करने बालों कोदिया जाता है.साथ ही यह अवार्ड सार्वजनिक सेवा के तहत नागरिकों,समुदायों,और राष्ट्र के लिए जीवन की गुणवत्ता को बढाने के लिए, *नये विचारो की खोज व प्रयोग के लिए दिया जाता है.

बांका को मिला उन्नयन प्रोजेक्ट पर यहअवार्ड

इसपुरस्कार के लिए बांका जिला का चयन किया गया है.जिलाधिकारी कुंदन कुमार के द्वारा उन्नयन प्रोग्राम चलाया जा रहा है.करीव एक बर्ष से संचालित इस कार्यक्रम के द्वारा बांका की पहचान देश ही नही बल्कि बिदेश स्तर पर भी बन गई है.उन्नयन कार्यक्रम के तहत बच्चो को नई तकनीक केतहत शिक्षा दिया जाता है.जिले के करीब 143 बिद्यालयों में स्मार्ट क्लास व क्रैश कोर्स चलाया जा रहा है.बच्चे मोबाईल एप के द्वारा पढाई कर रहे हैं. इंटरनेशनल अवार्ड के लिए भारत से बांका का चयन किया गया है.पूरे विश्व के कई देशो क इस दौल में अंतिम चार में बांक अंतिम चार में बांका ने अपना स्थान बनाया भारत के बांका के साथ-साथ मलेशिया, इंडोनेशिया व सिंगापुर को इस अवार्ड हेतु चयननित किया गया है।

केरल की टीम आएगी बांका

उन्नयन प्रोजेक्ट को जानने हेतु पूर्व मे पंडीचेरी एव अन्य जगहो से टीम के आने के बाद अब केरल की टीम बांका आएगी.इसके लिए केरल सरकार ने बांका जिलाधिकारी को पत्र भेज कर सूचना दी है ।

उन्नयन बांका को इंटरनेशनल अवार्ड के लिए चयनित किया गया है, इसमें बांका के सभी लोगों का सहयोग रहा है.खासकर मीडिया ने इसके लिए सराहनीय सहयोग दिया है.बांका उन्नयन का मूख्य उदेश्य युवाओं में समग्र बिकास किया जाना है.पढाई के साथ साथ रोजगार व उद्यमिता के लिए प्रयास किया जाना चाहिए.यह अवार्ड बांका के साथ साथ देश के लिए भी गर्व की बात है.

कुंदन कुमार
जिलाधिकारी, बांका

गंगाधाम से बाबाधाम की कांबर यात्रा को लेकर जिला प्रशासन मुस्तैद

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

सावन के पवित्र माह मे बांका जिला प्रशासन गंगाधाम से बाबाधाम के लिए कांबर यात्रा करने बालेश्रद्धालु को हर सुविधा उपल्बध कराने हेतु मुस्तैद है. इसबार श्रवणी मेला २०१८ मेंजिला प्रशासन के द्वारा किये गए ब्यवस्था एव कांबरियॉ बंधु के लिए सुविधाओ के बारे में जिलाधिकारी कुंदन कुमार ने चर्चित बिहार को बताया किइसबार श्रावणी मेला मे कॉवरियो को बिभिन्न पहलुओ पर बिशेष सुविधा मुहैया कराई जा रही है.पैदल मार्ग पर बालू को चाल कर बिछाया गया है,जिससे कॉवरियॉ भक्त जनो के पांव गंगट और पत्थर के कणो से जख्मी जा हो जाय,बिभिन्न स्थानो पर शुद्ध आरओ का जल पेयजल हेतु,साफ सफाई का खास तौर पर ध्यान में रखते हुए समस्त बांका जिले के मेला क्षेत्रो मे २०० से अधिक ततकालिक डस्टविन(कचड़ा) संग्राहक लगाए गए है.

कांबरियो के ठहराव स्थल

बांका जिला प्रशासन की ओर से विभिन्न स्थानो पर कांवरियो के ठहराव की बिशेष ब्यवस्था की गई है जहा स्वच्छ शौचालय टाइल्स युक्त शुद्ध आरओ का पेयजल की ब्यवस्था की गई है इसक्रम में जिलेबिया मोड धर्मशाला,अवरखाधर्मशाला,इनारावरण धर्मशाला, गोडियारी धर्मशाला, कटोरिया धर्मशाला, चांदन धर्मशाला, भूतनाथ धर्मशाला मे ठहराव की ब्यवस्था की गई है.

चिकित्सा ब्यवस्था

चिकित्सा की ब्यवस्था के बारे मे जिलाधिकारी ने आगे बताया कि जिले के बेलहर जिलेबिया मोड,जिला नियंत्रण कक्ष कटोरिया,जमुआ मोड धर्मशाला, छपरिया धर्मशाला, इनारावरण धर्मशाला, झाझा धर्मशाला, एवं गोडियारी मे बिशेष स्वास्थ्य शिविर की ब्यवस्था की गई है. जिसमें चौबीसो धंटे चिकित्सकएव नर्स उपस्थित है.इसकेअतिरिक्त एकभ्रमणभ्रमणशील चिकित्सा दल सम्पूर्ण मेला क्षेत्र मे कार्यरत है.इसके साथ ही नियंत्रण कक्ष कटोरिया से मेला मेंकिसी भी तरह की परेशानी का निदान प्रतिनियुक्त पदाधिकारी एव संबधित अधिकारियो के द्वारा त्वरित किया जाएगा.खाद्य पदार्थो की कीमत निर्घारित है.अतएव किसीभी परेशानी पर तुरंत मेला नियंत्रण कक्ष को सूचना दें साथ ही बिधि ब्यवस्था वनाए रखने मे जिलाप्रशासन का सहयोग करें.

चिकित्सा ब्यवस्था

चिकित्सा की ब्यवस्था के बारे मे जिलाधिकारी ने आगे बताया कि""जिले के बेलहर जिलेबिया मोड,जिला नियंत्रण कक्ष कटोरिया,जमुआ मोड धर्मशाला, छपरिया धर्मशाला, इनारावरण धर्मशाला, झाझा धर्मशाला, एवं गोडियारी मे बिशेष स्वास्थ्य शिविर की ब्यवस्था की गई है. जिसमें चौबीसो धंटे चिकित्सकएव नर्स उपस्थित है.इसकेअतिरिक्त एकभ्रमणभ्रमणशील चिकित्सा दल

चंदन कुमार कुशवाहा
पुलिस अधीक्षक, बांका

कुंदन कुमार
जिलाधिकारी, बांका

सम्पूर्ण मेला क्षेत्र मे कार्यरत है. इसके साथ ही नियंत्रण कक्ष कटोरिया से मेला मेंकिसी भी तरह की परेशानी का निदान प्रतिनियुक्त पदाधिकारी एव संबधित अधिकारियो के द्वारा त्वरित किया जाएगा. खाद्य पदार्थो की कीमत निंघारित है.अतएव किसीभी परेशानी पर तुरंत मेला नियंत्रण कक्ष को सूचना दें साथ ही बिधि ब्यवस्था वनाए रखने मे जिलाप्रशासन का सहयोग करें. विधि ब्यवस्था एवं सुरक्षा ब्यवस्थापुलिसअधीक्षक चंदन कुमार कुशवाहा ने विधि ब्यवस्था के इंतजामात के बिषय मे चर्चित बिहार को बताया कि बांका जिले के संपूर्ण मेला क्षेत्र में विथि ब्यवस्था एवं सुरक्षा ब्यवस्था के संधारण हेतु पुलिस मुख्यालयएवं बरीय पदाधिकारीयो द्वारा दिये गए निदेर्शो केआलोक में निम्नलिखित व्यवस्था की गई है. सभी संवेदनशीलस्थानो एवं मार्गो पर पर्याप्त संख्या में सशस्त्र पुलिस बल,लाठीबल,गृह रक्षक ,महिला बल,एवं सादे लिवास मेंबलो की एवं दंडाधिकारीयों की नियुक्ति की गई है। यातायात एवं अन्य भीड के दवाब के स्थानो पर बैरिकेटिंग ड्रॉपगेट, इत्यादि की ब्यवस्था की गई है. यातायात ब्यवस्था को सुचारू रूप से संचालन हेतु वैसे ३३ स्थालो/क्रॉसिग स्थलो को चिन्हित किया गया है जो कांबरिया पथ मूख्य सडकों से जुडते हैं. किसी भी प्रकार की अप्रत्याशित घटना से निपटने के पूर्व तैयारी के दृष्टिकोण से क्वीक रिसपॉन्स टीम(क्यूआरटी)तथा एम्बुलेंश की ब्यवस्था की गई है. भीड़ में शरारती एवंअसमाजिक तत्वो द्वारा महिलाओ के साथ किये जाने बाले छेडछाड. जैसी धटनाओं से निपटने हेतु सादी बर्दी में महिला एवं पुरूष पुलिस कमीर्यों की प्रतिनियुक्ति की गई है.

उग्रवादियो के गतिविधि को ध्यान में रखते हुए एएसपी अभियान को संबेदनशील स्थलो पर अर्द्धसैनिक बलों द्वारा ऐरिया डेमिनेशन हेतु निंदेशित किया गया है.

सम्पूर्ण मेला पथ में विधि ब्यवस्था संधारण हेतु नौ अस्थायी थाना क्रमशः

धौरी धर्मशाला, जिलेबिया मोड धर्मशाला, सुईया धुटिया,कटोरिया- कोल्हुआ देवासी,दुम्मा बोडर,अबरखा,इनारावरण, एवं गोडियारी में स्थापित किये गए है .जहां थानाध्यक्षो की प्रतिनियुक्ति करते हुएआवश्यक संसाधनों की ब्यवस्था की गई है.

अन्य सुविओं के तहत सभी अस्थायी थानाध्यक्षों की यह जबावदेही निश्चित की गई है किविधि ब्यवस्था को कायम रखने हेतुअपने कर्तब्य पर मुसतैद रहैं जिससे पथ में चलने बाले किसी भी कांबरियो को कोई भय या परेशानी का सामना ना करना पडे.

पुलिस कप्तान ने आगे बताया कि इसके अलावे

घुड़सबार दस्ता,वॉचटावर,पुलिस सहायता केन्द्र,डोर फ्रेम मेटल डिटेकटर,बिस्फोटक पदार्थो के जाँच हेतु एचएचएमडी सेट भी उपल्बध कराया गया है.

सीसीटीवी की निगरानी में मेला

असमाजिक तत्वो पर नजर रखने हेतु बांका जिला क्षेत्रान्तर्गत सम्पूर्ण कांबरिया मार्ग में कुल ग्यारह स्थानो पर सी.सी.टी.भी. लगाया गया है तथा कांबरिया मार्ग पर नजर रखने हेतु सी.सी.टी.भी.पर पुलिस पदाधिकीरियो एवं बलो की प्रतिनियुक्ति की गई है मूख्य चिन्हित स्थन निम्न हैं.

१.जिला नियंत्रण कक्ष कटोरिया.
२.उप नियंत्रण ब जिलेबिया मोड.
३.धौरी धर्मशाला प्रवेश द्वार
४.सुईया घुटिया उप-नियंत्रण कक्ष
५.कोल्हुआ पुलिस कैंप
६.दुम्मा बोडर
७.जिलेबिया मोड कांबरिया पथ
८.हरखार धर्मशाला चांदन
९..सरकारी धर्मशाला अबरखा
१०.सरकारी धर्मशाला गोडियारी
११.सरकारी धर्मशाला इनारावरण

इसके साथ ही क्या करे या क्या ना करे का भी बोड बांका पुलिस प्रशासन के द्वारा कांबरियो के सुविधा हेतु लगाए गए हैं.

सभी महत्वपूर्ण स्थानो पर किसी प्रकार की आकस्मिक धटना की सूचना देने हेतु जिले के बरीय पदाधिकारीयों एवं नियंत्रण कक्ष का संम्पर्क /मोबाईल नं की तालिका उपल्बध कराई गई है. जो निम्न प्रकार है.

जिला नियंत्रण कक्ष कटोरिया-9431653499
जिला उप-नियंत्रण कक्ष जिलेबिया मोड-9431653544
जिलाधिकारी बांका-9473191387
पुलिस अधीक्षक बांका-9431800004
उप बिकासआयुक्त बांका-9431818375
अपर समाहर्ता बांका-9473191388
अपर पुलिसअधीक्षक अभियान-9801054865
अनुमंडल पदाधिकारी बांका-9473191389
सिविल सर्जन बांका-9470003073
जिला परिवहन पदाधिकारी बांका-8292973603
अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी बांका--9431800030
अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी बेलहर -9431882980
पुलिस उपाधीक्षक मूख्यालय बांका--9431035836
बिशेष कार्य पदाधिकारी बांका-9472839383

इसके साथ ही जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने जिले से गुजरने बाले सभी कांबरिया बन्धुओ के मंगलमय कांबर यात्रा की कामना करते हुए.शुभकामाना दी है.

अफवाह पर अंकुश लगाना भी प्रसाशन की जिम्मेदारी कई बार हो चुकी है बड़ी बड़ी घटनाएं

आमोद कुमार दूबे

विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला के दौरान कांवरिया पथ पर अफवाहों पर विराम देना भी प्रशासन के लिए एक बड़ी चुनौती साबित होती है। बम और स्थानीय दुकानदारों सहित अन्य घटनाओं के पीछे भी इन अफवाहों की अहम भूमिका होती है । कई बार यह खेल साजिश के तहत भी खेला जाता है। ऐसी घटनाएं प्रशासन के लिए बड़ी मुसीबत बन जाती है । ज्ञात हो कि अफवाह के चलते ही चांदन और कटोरिया में कांवरिया पथ पर कई बड़ी घटनाएं हो चुकी हैं। जिसे याद कर आज भी ग्रामीणों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। सबसे भयावह घटना कटोरिया और इनारा वरण के बीच देवासी गांव में 1981 में हुई थी जहां अफवाह के कारण देवासी पंचायत के मुखिया सहित 7 लोगों की कांवरिया ने पीट-पीटकर हत्या कर दी थी। बाद में यह बात भी सामने आयी की यह एक षड्यंत्र के तहत किया गया कार्य था। जिसे कांवरिया के माध्यम से अंजाम दिया गया। इससे पूर्व वर्ष 1980 में चांदन के हड़खार गांव में कई दर्जन घरों को कांवरिया ने आग के हवाले कर दिया था। साथ ही साथ दुकानों में लूटपाट भी की गई थी। जबकि इससे पूर्व कटोरिया के कांवरिया धर्मशाला के महंत की भी कांवरिया ने पीट-पीटकर हत्या कर दी थी। यह भी अफवाह का ही एक परिणाम था ।इस प्रकार की घटना लगातार होने से कई जगह प्रशासन को काफी मशक्कत करनी पड़ती है। लगातार कई वर्षों से गोड़ियारी, झाझा, पटनिया, सुग्गासार आदि जगहों पर भी कई बार आगजनी और मारपीट हो चुकी है। इससे प्रशासन की परेशानी भी बढ़ती है। अफवाह मुख्य रूप से लड़कियों के अपहरण, महिला बम के साथ छेड़छाड़, आदि को लेकर होता है ।ऐसे बात को सुनकर हजारों कांवरिया का जत्था स्वाभाविक रूप से उग्र हो जाते हैं, और फिर ऐसी घटनाएं देखते ही देखते घट जाती है। दूसरी और कांवरिया के साथ लूट एवं वाहन के शीशे काट कर चोरी की घटना भी कांवरिया को आक्रोशित कर देता है। और फिर उग्र कांवरिया सीधी कार्रवाई पर उतर आते हैं। ऐसी घटना पर पिछले कुछ वर्षों से अंकुश लगाने का प्रयास होने के बावजूद इस प्रकार की घटनाएं कुछेक होती ही रहती हैं। जिसमें सुरक्षाबलों और अधिकारियों को भी कोपभाजन का शिकार होना पड़ता है। और काफी मशक्कत के बाद इस पर काबू पाया जा सकता है।

सरकारी योजनाओ से पंचायत वासी हो रहे है लाभांबित

चन्दशेखर मिश्र (सुईया)

प्रखंड क्षेत्र के धनुबसार पंचायत में प्रधानमंत्री आवास योजना वित्तीय वर्ष 2017-18 का कुल 1034 है जिसमें एससी सामान्य में 68,एससी 116,एसटी सामान्य में 85,मुस्लिम में 58,एसटी 89 लाभकों का प्रस्तावित सुची में नाम दर्ज है ।

मुखिया बिन्दु भारती ने बताया कि लक्ष्य के अनुसार धनुबसार पंचायत में कुल 17 वार्ड के बाबजूद प्रधानमंत्री आवास योजना की राशि का भुगतान एवं आवास निर्माण कार्य लक्ष्य से काफी पीछे चल रहा है वित्तीय वर्ष 2017-18 में मात्र 104 आवास निर्माण की स्वीकृति प्रदान की गई है जिसमें मात्र 60 लाभूकों के खाते में पहला किस्त की राशि हस्तांतरित की गई है जो खेद का विषय है समय पर राशि की भुगतान करने से प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत लाभूकों की ओर से निर्माण समय सीमा के अन्दर पुरी की जा सकती थी ।लेकिन विभागीय उदासीनता के चलते आवास योजना की राशि भुगतान करने में शिथिलता देखने को मिल रहा है ।वहीं मुख्यमंत्री जलनल योजना के तहत वार्ड नम्बर 17 में कार्य पूर्ण कर ली गई है जबकि वार्ड नम्बर 1 में पूर्ण होने की कगार पर है, वार्ड नम्बर 11में बोरिंग के साथ साथ पाइप लाइन के लिए गड्ढा खुदाई का कार्य अंतिम चरण में है।

कांवरिया पथ पर जिलाधिकारी के आदेश का पालन नहीं

बाबा नगरी जाते कांवरियागण

आमोद कुमार दूबे

सावन का विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला 28 जुलाई से ही प्रारंभ हो गया है। श्रावणी मेला में सरकार की ओर से बड़ी बड़ी घोषणाएं की गई ,लेकिन उनका जिले के चांदन प्रखंड में जिला अधिकारी के आदेश की खुलेआम धज्जियां उड़ाई जा रही है। कांवरिया पथ के पहले दौरे के समय ही जिलाधिकारी जब दुम्मा सीमा पर गए थे, तो उन्होंने वहां बने बिहार के तोरणद्वार की दुर्दशा देख कर उसी जल्दी ठीक कराने का आदेश दिया था ।लेकिन अधिकारियों की अनदेखी का नतीजा यह है कि आज तक वह तो वैसे ही पड़ा हुआ है ।उसकी मरम्मत पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। वहीं दूसरी ओर जिलाधिकारी का आदेश था कि पूरे कांवरिया पथ में बालू चाल कर देना है ।लेकिन ठेकेदारी के कारण बालू की जगहे मिट्टी डाला जा रहा है। दुम्मा से लेकर सुग्गासार तक कंकड़ युक्त मिट्टी डालने का काम किया जा रहा है। जबकि बालू भी डंप से लाकर डालना था। पर उसकी जगह पर परसिया घाट ओर बिहारो घाट से जेसीबी से मिट्टी काट कर पथ पर डाला जा रहो है। इससे कांवरिया को कीचड़ युक्त रास्ते से ही गुजारना पड़ेगा। चांदन प्रखंड के दुम्मा से इनारा वरण तक 11 किलोमीटर के रास्ते में सिर्फ 3 किलोमीटर में ही बिजली की व्यवस्था है। शेष जगह पर बिजली की कोई व्यवस्था नहीं है। यही हाल पीएचईडी का भी है पानी की समस्या भी पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी बनी रहेगी। जिला अधिकारी के अथक प्रयास के बावजूद अन्य विभाग के अधिकारियों की लापरवाही के कारण कांवरिया पथ परे सुविधा बहाल नहीं हो पा रही है। इस संबंध में अंचलाधिकारी कौशल किशोर ने बताया कि गेट का काम जल्दी ही शुरू हो जाएगा ।और मिट्टी डालने की सूचना लिखित रूप में अनुमंडलाधिकारी को कर दिया गया है जिनके द्वारा कार्यवाही का इंतजार किया जा रहा है।जब कि सावन शुरू होने के एक दिन पूर्व ही सुईया के पास एक डाक कांवरिया की हत्या सरकारी सुरक्षा व्यवस्था की पोल खोल रही है अब पूरे सावन में कांवरिया की सुरक्षा पर भी सवाल उठने लगा है इतना ही नहीं गोड़ियारी जैसे महत्वपूर्ण जगहों पर पूरे रास्ते कीचड़ से ही कांवरिया को गुजरना पड़ रहा है इसे भी देखने वाला कोई नहीं है ।एकमात्र जिलाधिकारी का अथक प्रयास कांवरिया को कुछ सुविधा देने में सफल रहा है लेकिन अन्य पदाधिकारी जिलाधिकारी के आदेश को भी दरकिनार कर मनमाने ढंग से कांवरिया पथ पर काम कराते जिसका खामियाजा पूरे माह कांवरिया को ही भुगतना पड़ेगा।

कीचड़युक्त कांवरिया पथ

मनरेगा भवन के निर्माण में बिचौलिया हॉवी : चार साल से काम है अधूरा

4 साल से अधूरा है मनरेगा भवन पैसे की निकासी के बावजूद रुका हुआ है काम

हेमन्त कुमार

प्रखंड क्षेत्र में मनरेगा कामों में अधिकारियों की रूचि योजना मद में राशि निकासी के बंदर बांट के बाद किस कदर दिन-ब-दिन घटती जा रही है इसका जीता जागता नमूना प्रखंड के लोढिया खुर्द पंचायत में देखने को मिल रहा है जहां भी थे 4 वर्ष पूर्व मनरेगा भवन निर्माण को लेकर राशि निकासी कर लेने के बावजूद अब तक भवन आधा अधूरा ही बना हुआ है जिससे सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना पर पंचायत में ग्रहण लगा हुआ है इस मामले को लेकर कई बार ग्रामीणों ने स्थानीय जनप्रतिनिधि का दरवाजा भी खटखटाया यहां तक कि सम्मिलित रूप से लिखित आवेदन कार्यक्रम पदाधिकारी को भी दिया गया लेकिन इस मामले को सभी अपने पहुंच बल के हिसाब से दबाते जा रहे हैं बीते 28 मई को भी पंचायत के पंचायत समिति सदस्य शेखर प्रसाद सिंह ने दर्जनों ग्रामीणों के हस्ताक्षरयुक्त आवेदन कार्यक्रम पदाधिकारी को सौंपा जिसमें योजना को लेकर कई खुलासे किए गए हैं पंचायत समिति सदस्य के द्वारा अधिकारी को दिए गए आवेदन में योजना मध्य में कुल □800000 की निकासी कर लिए जाने के बावजूद भी

मनरेगा भवन के निर्माण को पूरा नहीं किए जाने की जांच की मांग की है सदस्य के मुताबिक उन्होंने कई बार संबंधित विषय को लेकर रोजगार सेवक से भी बात की लेकिन उनके द्वारा कोई भी संतोषप्रद जवाब नहीं दिए जा से ग्रामीणों में आक्रोश बढ़ता जा रहा है दूसरी तरफ आधे अधूरे मनरेगा भवन पर कई ग्रामीणों ने अवैध कब्जा भी जमा हुआ है मनरेगा कार्यक्रम पदाधिकारी को सौपे गए आवेदन में पंचायत के उप मुखिया घंटुस साह सुधीर यादव कटकन यादव सिकंदर यादव बल्ली यादव अमरेश कुमार सहित एक दर्जन लोगों के हस्ताक्षर भी किए गए हैं

कहते हैं अधिकारी

इस पूरे मामले पर कार्यक्रम पदाधिकारी अवधेश कुमार अनिल ने बताया कि योजना मद में पैसे की निकासी के बावजूद आधे अधूरे मनरेगा भवन के निर्माण से संबंधित आवेदन प्राप्त हुआ है मामले की जांच कराकर उचित कार्रवाई की जाएगी

पुलिसिया दिवस के कारण हाडकोर नक्सली गिरफ्तार

केस की जानकारी देते पुलिस कप्तान राजीव रंजन

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

बांका जिले के नक्सल प्रभावित क्षेत्र इनदिनो काफी संवेनशील माना जा रहा है.जिस कारण पुलिस की गतिविधियों मे भी तेजी आई है.पुलिस कप्तान चंदन कुमार कुशवाहा की क्रियाशीलता से इसमें कमी जरूर आई है ,परन्तु नक्सली संगठन का जिले में सक्रीय होना ,इसबात से इनकार नही किया जा सकता है.अपितु पुलिस की विषेष छापामारीअभियान लगातार चलते रहने से नक्सली संगठन भी दहशत में है.बरहाल पिछले दिनो बेलहर प्रखंड एवंचांदन प्रखंडो में एसएसबी एवं ए.एस.पी अभियान ओमप्रकाश सिह एवंमुकेश कुमार एस.एसबी इंसपेक्टर के संयुक्त टीम के द्वारा इन प्रखंडो के आसपास के जंगलो सघन छापेमारी की गई.फलतःदिनांक २२ जुलाई १८ को एक शानदार कामयावी मिली जव एकहार्डकोर नकस्ली महेश हांसदा पिता शोभरा हासदा ग्राम चतहारा थाना आनन्दपुर (चांदन) जिला बांका को गिरफ्तार किया गया. पुलिसअधीक्षक चंदन कुमार कुशवाहा ने चर्चित बिहार को बताया कि गिरफ्तार हाडकोर नक्सली महेश हांसदा पुलिस मुटभेड में मारे गए एरिया कमांडर मंटु खैरा गैंग का सक्रीय सभी सदस्य है.जो बिभिन्न कांडो मै पुलिस के लिए बाछित था.चांदन(आनंदपुर) थानाकांड संख्या ३/१७ दिनांक 8.1.2017 धारा 121/121अ/120बी भा.द.वि.25(1-बी)26 आर्म्स एक्ट एवं 9/10/11/13 वअढअ एक्ट का बांछित था.

गिरफ्तार हाडकोर नक्सली महेश हांसदा पिता शोभरा हांसदा जो आनंदपुर थाना के चतहारा गांव का रहने बाला है.जो पुलिस मुटभेड में मारे गए एरिया कमांडर मंटु खैरा गैंग का सक्रीय सदस्य है. जो बिभिन्न काडों हेतु बांछित था.

चांदन कुमार कुशवाहा, पुलिस अधीक्षक, बांका

दहेज से रुकी शादी पर लडके ने दुल्हन को अपने घर बुलाकर रचाई शादी

आमोद कुमार दूबे

दहेजे लेना और देना दोनो अपराध है। लेकिन आज भी लड़कों के पिता अपने बेटे की शादी के लिए दहेज लेना अपनी शान समझते हैं ।लेकिन अगर लड़का और लड़की दोनों राजी हो जाए तो दहेज पूरी तरह समाप्त हो सकता है ।शादी में दहेज को बाधा बनते देख चांदन प्रखंड की एक लड़की और जयपुर का एक लड़का ने मिलकर न सिर्फ अपनी शादी रचा ली ।बल्कि दहेज लेने वाले पिता को भी बिना दहेज की शादी के लिए मना लिया। और लड़की को ही अपने घर बुलाकर लड़के ने शादी रचा लिया ।वहीं लड़की के पिता द्वारा चांदन थाने को आवेदन देकर लड़की को गायब होने का मामला दर्ज करा दिया गया था ।लेकिन लड़की की शादी की खबर उन्हें मिली तो मामला रफा-दफा करने का प्रयास किया जा रहा है। घटना चांदन थाना अंतर्गत कोरिया पंचायत के यादोरायडीह गांव के प्रदीप यादव की पुत्री पूजा कुमारी और जयपुर थाना अंतर्गत पतलिखा गांव के नागेश्वर यादव के पुत्र मुन्ना कुमार के बीचे से शादी की बातचीत चल रही थी लड़का और लड़की भी एक दूसरे को पसंद था पर बीच को रोड़ा बनते देख दोनो ने शादी करने का निर्णय लिया। इतना ही नहीं उसने स्वयं लड़की को अपने घर बुलाया और वहां उसे सिंदूर देकर अपनी पत्नी बनाकर दहेज के राक्षस को मार दिया ।इस शादी को लेकर इकलौता पुत्र होने के कारण लड़के के पिता ने भी रजामंदी कर दी। और किसी प्रकार की दहेज को लेने से साफ इनकार कर दिया। इस शादी की चर्चा इन दिनों आस-पास के गांव में चल रही है। जबकि चांदन थाने में लड़की के पिता ने एक आवेदन देकर लड़की को भगाने का आरोप लगाया था। लड़का और लड़की दोनों बालिक होने के कारण थाना अध्यक्ष श्रीकांत चौहान द्वारा लड़की और लड़का को वापस बुलाकर दोनों पक्षों में सुलह कराने का प्रयास लगातार कर रहे हैं । लड़की के पिता प्रदीप यादव द्वारो थानाध्यक्ष को दिए गए आवेदन के आलोक में जबे शादीशुदा दोनों पति-पत्नी को चांदन थाना लाया गया तो लड़की ने अपने माता-पिता से बात करना तक उचित नहीं समझा। और उन्हें अपने जीवन का दुश्मन बताते हुए उनके घर जाने से भी साफ इनकार कर दिया । और अपने पति के साथ ही रहने की जिद पर अड़ी रही । वैसे लड़की के परिवार वालों ने काफी समझाने बुझाने का भी प्रयास किया ।लेकिने रात भर थाने में रहने के बावजूद लड़की ने अपना इरादा नहीं बदलो और अपने पति के साथ वापस ससुराल चली गई । इससे न सिर्फ लड़की और लड़के के गांव वाले काफी खुश है बल्कि आसपास के कई गांवों के लोग भी दहेज मुक्त शादी से काफी खुश हैं। औरे इससे सीख भी लेना चाह रहे हैं जिससे समाज में दहेज रूपी दानव का नाश हो सके ।दहेज के इस कुप्रथा को समाप्त करने के लिए ऐसी शादी को प्रोत्साहित करना भी जरूरी है।

सुकून

प्रभा

सुकून की
तलाश में
बेसुकून होती ज़िंदगी ..
ख़्वाब को अपने जिगर
पर टटोलती ये ज़िंदगी!
आज मैं हूँ कल कोई और
होगा रास्ते में...
इस तथ्य से नासमझ,
नागवार होती ज़िंदगी.!
ज़िंदगी की ये तलाश
परिपूर्ण ना होगी कभी
आगाज से अंजाम तक,
इक पहेली ज़िंदगी
ज़िंदगी के खुश्गवार
होने की चाहत सँजोए
दिन दिन और पल पल
ये तार होती ज़िंदगी
बस वो आते ही होंगे ,
बस वो आ ही गए
हर्ष और उल्लास के
दामन में झूलती ज़िंदगी

हर घर नल का जल योजना ग्राम पंचायत कटोरिया में शत-प्रतिशत सफल

मुख्यमंत्री के मुख्य सलाहकार द्वारा की गई सराहना

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

मूख्यमंत्री के सात निश्चय योजनाओ में से एक हर धर नल का जल योजना पूरे राज्यो में गतिशील है.इसके लिए जिला प्रशासन हर पल सक्रीयता से योजनाओ को गतिमान बनाने हेतु कृतसंक्लपित रहते हैं.इसके साथ ही सरकार के प्रतिनिधियो द्वारा समय समय पर पहुच कर स्वयं कार्यो का निरीक्षण किया जाता हैं.इसी क्रम मेंपूर्व मूख्य सचिव व मूख्यमंत्री के मूख्य सलाहकार अंजनी कुमार सिंह के बांका आगमन के साथ ही उनका दौरा कटोरिया भी हुआ.जहां वे ग्राम पंचायत कटोरिया के पंचायत भवन में मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता के द्वारा आयोजित कार्यक्रम मे शामिल हुए. जहां उनका भब्य स्वागत किया गया.इसकेउपरन्त वे ग्राम पंचायत कटोरिया के बार्ड नं१० और ११ में हर घर नल का जल योजना का निरीक्षण किया तो पाया कि यह शत-प्रतिशत सफल दिख रहा है. इसके लिए मुखिया प्रदीप कुमार गुप्ता के कार्यो को काफी सराहा.एव बधाई दी.अपने उदवोधन मे मूख्य सलाहकार ने कहा कि नितीश सरकार के का□ण आज हरघर नल का जल योजना केतहत हरघर को शुद्ध पेयजल उपलब्ध हो रहा है. अपितु इस जल को लोग केवल पीने हेतु इस्तमाल करे ना कि खेत मे पटवन या अन्य कार्यो के लिए.मुखिया जी द्वारा बताया गया कि हर बीपीएल परिवार के लिए३० रुपए तथा एपीएल परिवार के लिए ६० रुपए प्रतिमाह रखरखाव हेतु लाभुको से लिया जाता है इसके साथ ही कुल ४४० घरों को बार्डनं १०एवं ११ मेंयह लाभ प्राप्त हो रहा है.

सीएम के मुख्य सलाहकार को बुके देकर सम्मानित करते मुखिया प्रदीप कुमार

शेष बार्डो मे सरकारी निदेशी के अनुसार पीएचईडी बिभाग द्वारा हर घर नल का जल पहुंचाया जाएगा.

जल नल योजना का निरीक्षण करते मुख्य सलाहकार के साथ जिलाधिकारी, पुलिस कप्तान व अन्य अधिकारीगण

मुखिया द्वारा चर्चित बिहार पत्रिका को बताया गया कि वार्ड नंम्बर 11 के कंचन गली में बरसात के दिनों में बारिस के पानी से मूख्य सड़को पर पानी का जमाव होने से सडक पानी में डूबा रहता था. जिससे आवागमन मे लोगो को काफी परेशानियो का सामना करना पडता था.मुखिया के द्वारा तक्षण ही इस समस्या का करते हुए बारद नं११ कंचन गली पक्का नालाढक्कन समेत का निंमाण करा कर मूख्य सड़को के जलजमाव को इस नले मेंजोड दिया गया .जिससे अव मूख्य सडको पर जल जमाव नही होता है .जिससे आम लोगों को कोई परेशानी नही हो रही है.उन्होने आगे वताया कि अनुसूचित जाति के लिए चयनित बार्डो में गली एवं नाली योजनाओ कोभी धरातल पर उतारा हुं. ग्राम पंचायत कटोरिया में कुल बाडो की जनसंख्या निम्न है। बार्ड नं ५-८२५ ,,८-७०६, १२-६२६,७-७४६, ११-७१६, ६-७५६ एवं बार्ड नं १४ की कुलआवादी ७७२ है. सभी बार्डो मे योजना काकार्य जारी है. मुखिया प्रदीप कुमार ने आगे बताया कि सरकार के निंदेशों को मानते हुए. क्रियान्वयन एवं प्रबंधन समिति को३८ लाख ३७ हजार २२६ रुपया दिया जा चुका है. जिसका कार्य प्रगति पर है. जो बार्ड क्रियान्वयन समिति के द्वारा कराया जा रहा है.

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

गोबिंद राजगडिया

बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

रंजित कु. शर्मा

प्रो.शक्ति ग्लास हाउस
न्यू मार्केट कचहरी रोड,
बांका, 8084789834

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

दीपक कु. शर्मा

कार्यक्रम पदाधिकारी
मनरेगा- फुल्लीडुमर
जिला- बांका

पूरे भारतवासियों को
श्रावणी मेला एवं
स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ रंजीत वर्मा

संयोजक चिकित्सक
प्रकोष्ठ,भाजपा
पूर्वांचल मोर्चा दिल्ली प्रदेश

पूरे भारतवासियों को
श्रावणी मेला एवं
स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

रामानन्द यादव

पूर्व प्रमुख
पंचायत समिति
फुल्लीडुमर, जिला- बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

बेबी कुमारी घोष

वार्ड पार्षद
वार्ड नं-11
नगर परिषद बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

कुमारी दीपमाला

मुखिया
ग्राम पंचातय सोनडीहा
दक्षिणी

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

रेणु यादव

मुखिया, ग्राम पंचायत दुधारी प्रखंड, बांका

पंच किशोर यादव

समाजिक कार्यकर्त्ता प्रखंड, बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर
समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

जयराम यादव

अभिकर्ता
भारतीय जीवन बीमा निगम
शाखा बांका
कोड नं-1202/5011

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर
समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

नरेश पंडित

मुखिया
ग्राम पंचायत- बिरनिया
चांदन (बांका)

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर
समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

सत्यनारायण साह

अध्यक्ष कल्व सदस्य
भारतीय जीवन बीमा निगम, बांका
Code no-
031900523

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर
समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

बिन्दु भारती

मुखिया
ग्राम पंचायत-धन्नुबसार
चांदन, जिला बांका, कटोरिया

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर
समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

श्री निवास चन्द श्री

संस्थापक ज्ञान गंगा
आवासीय विद्यालय
इदगाह रोड बांका व
मकदुमा रोड
समुखिया रोड, बांका
मो. 9934831312

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर
समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

तारा देवी

जिला परिषद सदस्या
बांका उतरी-14

अरविंद कुमार

डायमंड आर्या स्मार्ट लिमिटेड की ओर से सभी को सावन ओर स्वतन्त्रता दिवस की शुभकामना इस कम्पनी के किसी भी जानकारी के लिए सम्पर्क करें
9931921066

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर
समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अनिल कुमार

थानाध्यक्ष
बाराहाट
जिला- बांका

पूरे भारतवासियों को श्रावणी मेला एवं
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

जय जयराम सिंह

समाजसेवी

पूरे भारतवासियों को श्रावणी मेला एवं
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अरुण सिंह

रिटायर कॉमेंडेट, दिल्ली

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

मुकेश पंजिकार

एरिया फील्ड मैनेजर सहारा इंडिया परिवार सह अभिकर्त्ता L.I.C of India, शाखा, बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

मुकेश कुमार

C. FY. M-III सहारा इंडिया परिवार सह अभिकर्त्ता L.I.C of India, शाखा, बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

चेतराम शर्मा शारस्वत

प्रबंधक-महादेव इन्कलेभ प्रा.लि. बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

सिंह एंड सण्स इलेक्ट्रॉनिक्स

शिव आशीष मार्केट बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

प्रतिज्ञा कुमारी

प्रो. प्रतिज्ञा गैस एजेंसी, कटोरिया रोड, बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

HP GAS your friendly gas

रामचंद गैस एजेंसी

शिव आशीष मार्केट, बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

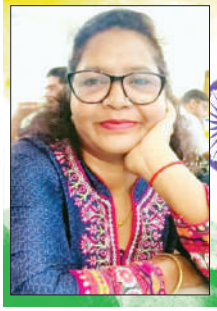

सुशीला धान

बाल विकास परियोजना पदाधिकारी, बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

चंचला कुमारी

बाल बिकास परियोजना पदाधिकारी- शंभुगंज जिला बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

पंकज कुमार जय प्रो. जयप्रकाश मेडिकल हॉल

पुनसिया, बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

आचार्य रघुनंदन शास्त्री

आवासीय मार्शल एकेडमी, खेसरा, बांका, मो.:8002850364

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

विमल कुमार

थानाध्यक्ष पंजवारा बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

रितेश कु. गुप्ता

नगर प्रबंधक नगर परिषद बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

सुरेन्द्र प्रसाद

प्रखंड बिकास पदाधिकारी शंभुगंज जिला- बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

विनय पाल

बिशेष शाखा पदाधिकारी बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अनिरुद्ध प्रसाद सिंह

संस्थापक -मुक्ति निकेतन संस्थान कटोरिया, बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर
समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

प्रदीप कुमार गुप्ता

मुखिया
ग्राम पंचायत कटोरिया
सह
जिला उपाध्यक्ष
पंचायती राज प्रकोष्ट जिला
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

सरयू प्रसाद यादव

अध्यक्ष कुसाहा वन समिति
जिला- बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ मौलेश्वरी प्रसाद सिंह

दिधारी
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ बलराम मंडल

D.E.H(Redg no 23631
ग्राम- योगीडीह
(दुधारी) बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

भानुप्रताप सिंह

प्रखंड कॉग्रेस
अध्यक्ष, शंभुगंज
जिला बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अनिल कु. सिंह

पूर्व जिलाध्यक्ष
भाजपा, बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

उत्तम कुमार निराला

बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ सकलदीप मंडल

प्रभारी चिकित्सा
पदाधिकारी
रेफरल अस्पताल,
कटोरिया, जिला-बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर
समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

पुतुल कुमारी

प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष
सह पूर्व सांसद
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

महादेव इनक्लेव प्रा. लि.

अमर सिंह राठौर
जी. एम
महादेव इनक्लेभ प्रा. लि.

24 घंटे एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध

आर. पी.सिंह
जी. एम
महादेव इनक्लेभ प्रा. लि.

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

नवल किशोर यादव

वरीय कोषागार पदाधिकारी
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

सुरेंद्र राय

जिला पंचायतीराज पदाधिकारी
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अरबिन्द मंडल

जिला परिवहन पदाधिकारी
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

उमेश कु. मंडल

कार्यपालक अभियंता
भवन प्रमंडल
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

संजय कुमार

कार्यपालक अभियंता
डी.आर.डी.ए.
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

नुजहत सुलताना

सहायक परियोजना पदाधिकारी
डी.आर.डी.ए, बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अजय कुमार

सहायक अभियंता
डी.आर.डी.ए
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

विमल कुमारधोष

अंचलाधिकारी-
कटोरिया
जिला- बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

विजय चन्द्रा

प्रखंड बिकास पदाधिकारी
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ लक्ष्मण पंडित

एम.एस. सर्जरी
सदरअस्पताल
बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. प्रदीप कु. मित्रा

चिकित्सा पदाधिकारी
पी.एच.सी, बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. प्रभा रानी

चिकित्सा पदाधिकारी,
जिला अस्पताल
गोड्डा (झारखंड)

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

जिला परिवहन कार्यालय

बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

पंकज कुमार

कार्यक्रम पदाधिकारी
मनरेगा - कटोरिया
जिला बांका

स्वतंत्रता दिवस एवं बकरीद के शुभ अवसर पर समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

रवि रंजन

जिला निबंधन पदाधिकारी
बांका